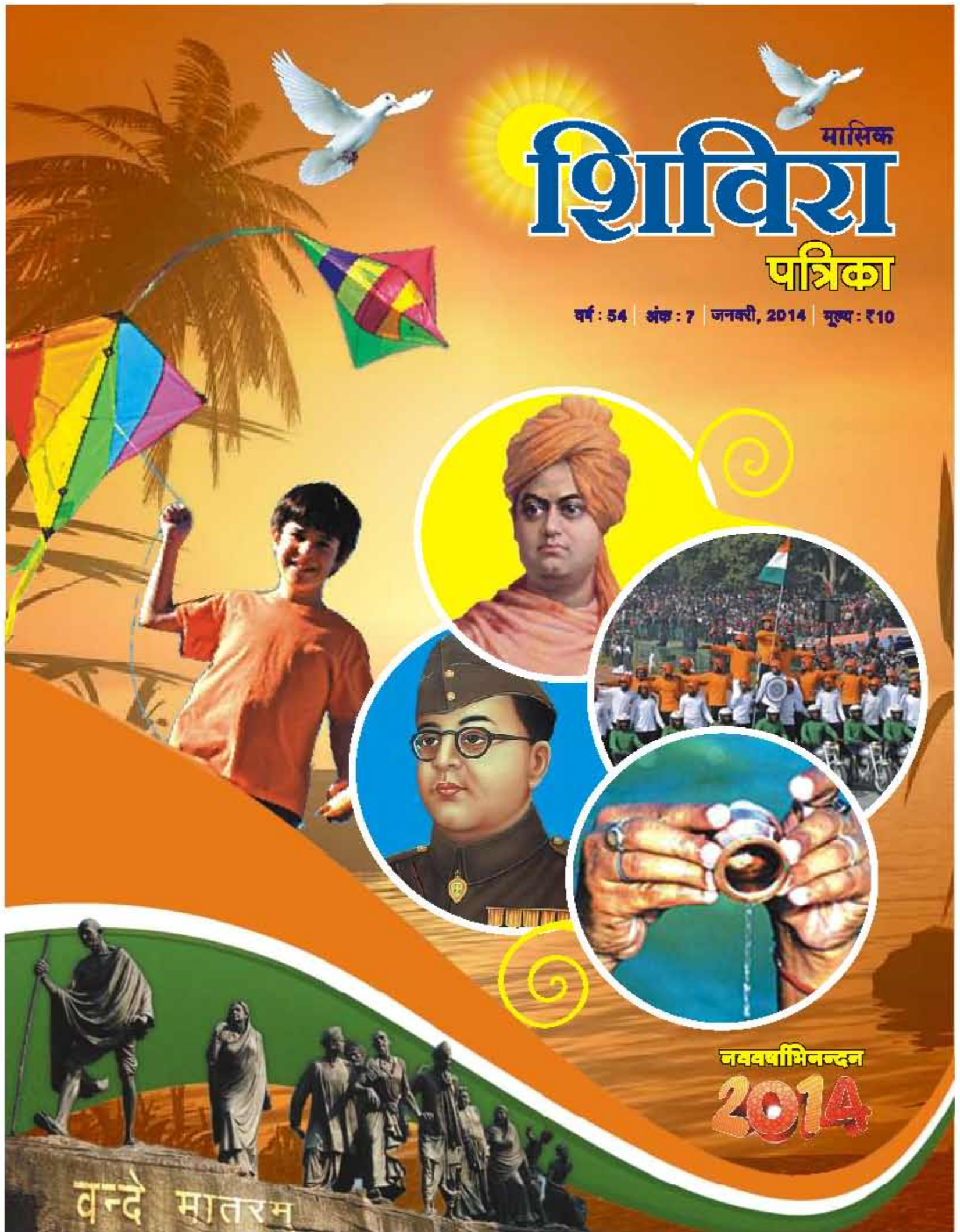


शिबिरा पत्रिका

वर्ष : 54 | अंक : 7 | जनवरी, 2014 | मूल्य : ₹10



नववर्षाभिनन्दन

2014

वन्दे मातरम्

स्वागतम्



श्रीमती वसुंधरा राजे
माननीया मुख्यमंत्री

श्रीमती वसुंधरा राजे ने दिनांक 13 दिसम्बर 2013 को राजस्थान के मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। आपका जन्म 8 मार्च 1953 को मुम्बई में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के उपरान्त आपने आर्थशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान में बी.ए. (ऑनर्स) सीफिया कॉलेज, मुम्बई से किया। आप शिक्षा की प्रगति का द्वार मानती हैं और यही कारण है कि शिक्षा सदैव आपकी प्राथमिकताओं में रही है। राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री होने का कीर्तिमान (2003-08) आपके नाम पर है।



श्री कालीचरण सराफ
माननीय शिक्षा मंत्री

श्री कालीचरण सराफ ने दिनांक 20 दिसम्बर 2013 को राजस्थान के शिक्षा मंत्री पद की शपथ ग्रहण की। श्री सराफ का जन्म गुलाबी नगर जयपुर में दिनांक 7 अगस्त 1951 को हुआ। आपने वाणिज्य एवं विधि में स्नातक उपाधियाँ प्राप्त की हैं। छात्र राजनीति से लोकप्रिय रहे श्री सराफ राजस्थान विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। शिक्षा में आपकी गहरी रुचि है। आप पूर्व में भी हमारे शिक्षा मंत्री रहे हैं। शिक्षा के गुणात्मक विकास में आपका योगदान अत्यन्त सराहनीय रहा है।

शिक्षा निदेशालय स्थापना दिवस, राजस्थान शिक्षा दिवस : 16 दिसम्बर 2013



उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्बोधित करती मुख्य अतिथि सुश्री सिद्धि कुमारी, माननीया विधायक (बीकानेर पूर्व) तथा श्री पी. सरपन कुमार, निदेशक (प्रारम्भिक शिक्षा)।



मुख्य अतिथि सुश्री सिद्धि कुमारी, माननीया विधायक (बीकानेर पूर्व) को प्रतीक चिह्न भेंट करते अधिकारीगण।



राजस्थान शिक्षा दिवस पर पुरस्कृत कर्मचारी माननीय अतिथिगण के साथ।



मासिक शिविर पत्रिका

न हि ज्ञानेन साधुनां पवित्रमिह विद्यते - श्रीमद्भगवद्गीता 4/३७

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंशय कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 54 | अंक : 7 | पौष-माघ २०७० | जनवरी, 2014

इस अंक में

**प्रधान सम्पादक
डॉ. बीजा प्रधान**

वशिष्ट सम्पादक
योगानन्दसिंह नन्दनन्दन

**सहायक
कांण सिंह
मुक्तिदा कान्त
उमेश कान्त**

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक संस्था मूल्य व धारें

- शिक्षकों/शिक्षिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टमनीऑर्डर निदेशक, साम्प्रतिक शिक्षा राज्यस्वालय, बीकानेर के नाम देय है।
- बैंक सबीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय भिज करके लीजें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

एकल ज्योतिषाचार्य शिवाजी पन्ना

पश्चिम सम्पादक
विशेष पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा राज्यस्थान

बीकानेर-334 011

दरमाज : 0161-2528876

फैक्स : 0161-2201881

E-mail : teacher.today@yahoo.com

विशिष्ट पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राज्यभरान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
—बीरू संपादक

विष्णुसहस्रनाम

- | | | |
|----|---|----|
| १ | नव वर्ष परीक्षाफल हो | 5 |
| २ | आलोचना | |
| ३ | इलाका सुहा है | 6 |
| ४ | डॉ. रावेंद्र मोहन भट्टनायर | |
| ५ | नव वर्ष नव संस्करण | 7 |
| ६ | अलका डौली घासक | |
| ७ | स्वामी विवेकानन्द का वैदिक चिन्तन | 9 |
| ८ | पी.बी. सिंह | |
| ९ | कुल मूल तप पक्षरं गणित | 10 |
| १० | सुधीर श्रीवास्तव | |
| ११ | आई.सी.टी. एक इन्टरनेटरी योजना | 12 |
| १२ | एच प्रकाश मिश्र | |
| १३ | विज्ञान विज्ञान में नववर्षों का प्रयोग | 13 |
| १४ | डॉ. भीमाजी मिश्रा | |
| १५ | निर्देशन सेक्टर हैं अलग | 14 |
| १६ | नववर्ष नव | |
| १७ | जो चाहे वन बाग बागक | 16 |
| १८ | उषा देवर | |
| १९ | अनुरा है इन्वर्सी राफेली का जीवन-कर्म | 17 |
| २० | इन्वर्सी राफेली का जीवन | |
| २१ | कर्म इस वेदी का सम्मान | 18 |
| २२ | निर्देशन सेक्टर | |
| २३ | समाज निर्माण में अलग है वास्तविक शिक्षा | 19 |
| २४ | प्रवृत्ताइ इन्वर्सी | |
| २५ | संस्कार विरोधन की आवश्यकता | 20 |
| २६ | प्रवृत्ताइ इन्वर्सी | |
| २७ | अभि नव नव नव रोहन | 22 |
| २८ | रावेंद्र प्रसाद जोशी | |
| २९ | सफलता की खोज : अन्तर्विस्तार | 31 |
| ३० | गांधी राज | |
| ३१ | विद्यार्थी व्यक्तित्व का नृपति है | 32 |
| ३२ | अनन्य कुमार जी | |
| ३३ | मुद्रा (कलानी) | 34 |
| ३४ | अध्ययनकारण काव्यकार | |
| ३५ | आदर्श कलाकार | 37 |
| ३६ | एन. एन. चौधुरी | |
| ३७ | गणित के अन्तर्गत का शिक्षक बनना | 38 |
| ३८ | संस्कार सिंह जी | |

- | | |
|---|-------|
| ● सूर्य के उत्पत्ति का पर्व है मकर संक्रान्ति | 43 |
| ● शक्तिमान् द्विवेदी | |
| ● अभिज्ञा और अस्तित्व का अभिन | |
| ● जंग है संस्कृति | 44 |
| ● सुनेत्र 'अंधत' | |
| ● फलार्थ की बालक के विफल में धूमिका | 45 |
| ● डॉ. विविधता जगो | |
| ● ब्रह्मादी सांस्कृतिक धरोहर | |
| ● बन्धन का पूराना भयभूर | 46 |
| ● डॉ. बाबूबाबाल गुप्ता | |
| ● अरुण | |
| ● आर्सेन-परिणत | 23 |
| ● विमलस्य प्रकाश कर्मक्रम | 28 |
| ● शिथिल पंचांग | 29 |
| ● रास्ता प्रारंभ से | 29 |
| ● रफ्त : सांग सिंह कन्हा | 36 |
| ● कटुप्रायश्चित्त | |
| ● कस्तुरी एक और गंधी | 30 |
| ● नेपाल सिंह कच्छावाह | |
| ● बीकानेर जगद्विहारी बाबूबाबो | 46 |
| ● प्रियवर्तन बालवी | |
| ● ब्रह्मजगत्कालजीवा | |
| ● चैन न छोड़े ही | 21 |
| ● अटल मिहारी बाबूबाबो | |
| ● पुनरावृत्ति अस्मिता | 47-49 |
| ● दिवा और चीकन दान : बीर सात जगो | |
| ● समीपक : मगधो प्रकाश गौतम | |
| ● जीवन का मूल्य जीवनमयः : बाबू कृष्ण राज | |
| ● समीपक : विजय शंकर आचार्य | |
| ● वैदिक : राज श्री अग्रवाल | |
| ● समीपक : डॉ. सत्यनारायण गुप्ता | |
| ● विविध | |
| ● दिवा देवे मोल | 8 |
| ● अच्छे कर्मा करो वा कन्दे | 39 |
| ● कर्तु | 39 |
| ● समीपक जगद्विहारी | 49 |
| ● प्रतिष्ठित | |
| ● नन्दा वर्ष वर संक्रान्ति | 50 |

SUMMARY :

अभिवादन कुमायवा, जयपुर
मो. 92261355185



पाठकों की बात

● शिविर पत्रिका दिसम्बर 2013 के अंक में प्रस्तुत विषय सामग्री स्पष्ट करती है कि यह पत्रिका निःसन्देह विद्यालयों में कार्यरत मानव संसाधन से लगाकर निदेशालय एवं राज्य सरकार स्तर तक संवाद का अच्छा माध्यम बन रही है। दिशाकल्प में डॉ. बीना प्रधान द्वारा शिक्षा को शिक्षा विभाग से सम्बद्ध सभी लोगों के लिए 'हेल्प लाइन' के रूप में बनाने की अभिव्यक्ति चाह सुखद लगी। इसी स्तम्भ में अभ्ययन एवं अभ्यापन के सम्बन्ध में कही गई बात 'अभ्ययन की गहराई शिक्षण में मोलती है तथा शिक्षक पढ़ाए और पढ़े भी' अभिनन्दनीय है तथा सभी को अनुचिन्तन हेतु प्रेरित भी करती है। अरुली राबर्ट्स द्वारा अपने लेख 'विश्व एकता में ही जीवन की सार्थकता' के अन्तर्गत अभिव्यक्त अनुभूत वेदना 'मानव सभ्यता का ग्राफ ऊपर चढ़ा है तो दूसरी ओर अपराधिक प्रवृत्तियाँ भी अनुमात में बढ़ी है तथा पेड़ फल से पहुँचला जाता है' हृदय स्पर्शी है एवं वर्तमान सन्दर्भ में सटीक लगती है। साथ ही प्रतिष्ठापन में सारस्वत द्वारा शिक्षा को जिस ढंग से सुखी जीवन का साध्य बताते हुए एक साधन के रूप में भी समझाया है, बड़ा अच्छा लगा। कुल मिलाकर सभी आलेख इस अंक के कुशल सम्पादन एवं इसकी महत्ता की ओर संकेत है।

—वैवेन्द्र पण्ड्या, राँसवाड़ा

● मैं शिविर पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। मुझे दिसम्बर, 2013 का अंक बहुत अच्छा लगा, 'गणित का रोचक शिक्षण' आलेख प्रशंसनीय है। विद्यालय में अभ्ययनरत विद्यार्थी ही नहीं अपितु गणित विषय पढ़ने वाले शिक्षकों के लिए भी यह उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। साथ ही करणीदान कच्चावा द्वारा लिखित 'भार मरुस्थल की शान है बीकानेर' भी बहुत अच्छा लगा। शिविर के संपादक श्री ओमप्रकाश सारस्वत का प्रयास न केवल सराहनीय है अपितु प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय भी है।

—राबेन्द्र श्रीमास्की, प्राचार्य, बीकानेर

● माह दिसम्बर के अंक में 'दिशाकल्प' के तहत निदेशक महोदय के विचार शिक्षा जगत के समस्त समर्पित शिक्षक बन्धुओं के लिए

प्रेरणास्पद स्रोत है। प्रत्येक शिक्षक से स्वर मुखारति होने को चागस्क उनकी महती आकांक्षा इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि शिक्षा का माध्यम सर्वोपरि है। उनसे सीधी बातचीत का स्तम्भ निश्चित रूप से इस दिशा में सराहनीय कदम साबित होगा।

—परमितास मैथ्यू, उदयपुर

● शिविर पत्रिका का दिसम्बर, 2013 का अंक नवीनतम सान-सन्धा के साथ समय पर प्राप्त हुआ। इस अंक का मुख्य आकर्षण 'दिशाकल्प' रहा। निदेशक महोदय ने शिविर पत्रिका को शिक्षक व छात्रों के साथ-साथ शिक्षा निदेशालय तक हेल्पलाइन बनने का विचार सटीक व तर्क संगत लगा। इसमें प्रकाशित आलेख, समस्या, समाधान व विश्लेषणात्मक टिप्पणियाँ पाठकोपयोगी व छात्रापयोगी होती हैं। विभाग के नवीनतम व आवश्यक आदेश व दिशा-निर्देश निबधित रूप से प्रकाशित होते हैं। 'दिशाकल्प' में अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के सफल संचालन, 2013 का अंतिम माह होने पर अपने कार्य की समीक्षा करने व मानवाधिकार व क्रिन्मिष पर सभी लोगों के मान-सम्मान व अधिकारों का सम्मान करने की प्रतिबद्धता का आह्वान शिरोधार्य होना चाहिए। विशेष आलेख 'महर्षि अरविन्द का शिक्षा दर्शन' में महर्षि अरविन्द के शिक्षा संबंधी विचार विस्तार पूर्ण पढ़े। महर्षि वास्तव में एक उच्च कोटि के विद्वान व शिक्षाविद् विचारक थे। संपादकजी को बधाई व शुभकामनाएं।

—रामजीलाल चौड़ेला, व्याख्याता, लुनकरनगर

● शिविर पत्रिका दिसम्बर 2013 का अंक बहुत अच्छा लगा। 'दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ' भी सभी पाठकों को प्रेरित करने वाला होता है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख उत्कृष्ट व पठनीय सामग्री से भरपूर हैं। संपादक महोदय का 'प्रतिष्ठापन' विशेषकर पढ़ती हूँ। शिविर पहले से ज्यादा आकर्षक लगने लगी हैं। आशा करती हूँ पत्रिका भविष्य में उत्तरोत्तर प्रगति करती रहेगी। —खिरण कृष्ण, बैललमेर

● शिविर के दिसम्बर, 13 अंक में उन सभी पहलुओं को समाहित किया है जो इस माह से संबंधित हैं। दिशाकल्प एवं प्रतिष्ठापन में सामयिक विषयों पर सारगर्भित जानकारी प्रभावी प्रवाह में मिलती है। इस हेतु धन्यवाद। —महावीर प्रसाद गर्ग, प्रधानाचार्य, हर (बनपुर)

चिन्ता

भारत महिमा

भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता-जागता राष्ट्र पुरुष है। हिमालय इसका मस्तक है, गौरी शंकर शिखा है। कश्मीर किरीट है, पंजाब और बंगाल दो दिशाएँ कंधे हैं। दिव्यराज कटि है, गर्दा कच्छरी है। पूर्वी और पश्चिमी घाट दो दिशाएँ बाँधे हैं। कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पल्लास है। पादस के काले-काले मेघ इसके कुंदा केत हैं। घाट और सूत्र इसकी आरती उठाते हैं। यह वंदन की गूँथ है, अभिजात की गूँथ है, यह अर्पण की गूँथ है। यह अर्पण की गूँथ है। इसका कंकड़-कंकड़ शंकर है, इसका बिन्दु-बिन्दु गंगानल है। इन जिह्वों से इसके लिए और मंत्रों से इसके लिए।

—अटल बिहारी वाजपेयी



डॉ. बीना प्रधान
मिन्टेशक, माध्यमिक शिक्षा

“ शिक्षक एवं विद्यालय से हर व्यक्ति का वास्ता रहता है। मैं चाहती हूँ कि हमारे शिक्षक ज्ञान एवं संस्कार की दृष्टि से उत्तम बनें तथा उनके ज्ञान एवं संस्कार विद्यालय रूपी बाड़ी के माध्यम से बालक रूपी पौधों में सुन्दर-सुवासित फूलों के रूप में समाज के सामने आए। इसी में हमारा एवं राष्ट्र का गौरव है। ”

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

नव वर्ष मंगलमय हो

नव वर्ष 2014 के शुभागमन की उत्सासमय बेला में राजस्थान के कोने-कोने में शिक्षा की अलख जगा रहे शिक्षक भाई-बहनों एवं बालक-बालिकाओं को बघाई एवं शुभकामनाएं प्रदान करते हुए मुझे आत्मिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। नया वर्ष आप सबके जीवन में खुशियों की बहार लाए और हम सब मिलकर नए राजस्थान के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें, यही प्रार्थना है परमपिता परमेश्वर से।

पिछले महीने हमारे प्रदेश में विधानसभा के चुनाव सम्पन्न हुए। लोकतंत्र के इस महामय में राज्य के पिचहतर फीसदी से भी अधिक मतदाताओं ने मत की आहुति देकर लोकतंत्र के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। इस हेतु प्रभावी माहौल बनाने में शिक्षा विभाग में कार्यरत शिक्षकों/कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं एवं स्काउट गाइड ने सराहनीय सहयोग दिया। सामाजिक सरोकारों के प्रति यह चेतना विभाग को गौरव व गरिमा दिलाने वाली है। आशा है, उत्साहपूर्वक सहयोग की यह बेल इसी प्रकार सतत पल्लवित होती रहेगी।

शिक्षा विभाग को मातृविभाग कहा जाता है। सामाजिक संरचना एवं व्यक्ति निर्माण का महती कार्य यह विभाग करता है। यही कारण है कि शिक्षक एवं विद्यालय से हर व्यक्ति का वास्ता रहता है। मैं चाहती हूँ कि हमारे शिक्षक ज्ञान एवं संस्कार की दृष्टि से उत्तम बनें तथा उनके ज्ञान एवं संस्कार विद्यालय रूपी बाड़ी के माध्यम से बालक रूपी पौधों में सुन्दर-सुवासित फूलों के रूप में समाज के सामने आए। इसी में हमारा एवं राष्ट्र का गौरव है।

अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं। परीक्षा उत्तर पुस्तिकाओं का समय पर मूल्यांकन कर छात्र-छात्राओं को उनका अवलोकन करवा दिया जाना आवश्यक है। इस मूल्यांकन को आधार बनाकर कमजोर व प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं के लिए विशेष कक्षाएं लगाई जानी चाहिए। इससे विद्यालय व प्रदेश का परीक्षा परिणाम संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टि से बढ़ेगा।

जनवरी कड़ाके की सर्दी का महीना है। मेरी विद्यालय प्रशासन से अपील है कि बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष नजर रखते हुए विद्यालय में उपलब्ध हर सुविधा उन्हें अधिकतम उपलब्ध कराएं। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के साथ उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना हमारा उत्तरदायित्व है और मुझे विश्वास है कि अभिभावक के रूप में शिक्षक इसे पूरा करने में कोई कमी नहीं रखेंगे।

इसी माह में भारत का 65वाँ गणतंत्र दिवस है। मकर संक्रान्ति का महान पर्व हम 14 जनवरी को मनाएंगे। स्वामी विवेकानन्द का जन्म दिन 12 जनवरी युवा दिवस एवं कैरिस्-डे के रूप में मनाया जाता है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती सहित कई महत्वपूर्ण आयोजन इस माह में हैं। हमें इन अवसरों को उल्लासपूर्वक मनाते हुए अन्तर्निहित शिक्षाएं ग्रहण करनी चाहिए।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आगामी तीन माह मनोयोगपूर्वक अध्ययन-अध्यापन के होंगे। शिक्षक पढ़ते हुए खूब पढ़ाएंगे तथा विद्यार्थी हृदयंगम करते हुए खूब पढ़ेंगे तथा अपनी यह साधना परिणामों के रूप में सिद्ध कर बताएंगे।

शुभकामनाओं के साथ,


(डॉ. बीना प्रधान)

ये जीवन नदी, प्रकाश, पवन है
ये जीवन बर, सुगंध, गगन है
ये जीवन गति, प्रगति, संगम है
ये जीवन हृष, उद्वास, तरंग है
इस तरल सरल ध्वनि की ओर चल पड़े
कदम। गद्गद हो उठा हृदय। चहूँ ओर उबास ही
उबास। अपने को भूल, उसको जानने का
प्रयास।

चारों ओर देखा। कहीं कोई नहीं था।
हवा भी मस्त। सूर्योदय की प्रथम किरण का हो
रहा था आभास। लगा रहा था कोई इतने पास है
चिसे झू लेने का मन हो रहा है आन। उससे रहा
नहीं गया। उसने पूछा, कौन हो माई ! कहां हो ?
कुछ तो बोले।

प्रतिध्वनि हुई। सन्नाट स्मित भर उठा।
बिज्ञासा ने घूँघट उठा पूछा, सामने आओ, माई।
दिखाई न्यो नहीं देते।

एक और गीत प्रसन्न बन गा उठा—
मनतंत्र स्वतन्त्र हूँ
हिचतंत्र स्वतन्त्र हूँ
रुहरों पर पहरा है
फिर कैसे स्वतन्त्र हूँ
पिंजरे बंद पक्षी !

इस बार वह तेज़ स्वर में बोला—मैं पिंजरे
बंद पक्षी नहीं हूँ। मैं स्वतन्त्र देश का नागरिक हूँ।
शिक्षा मेरा धर्म है।

इस पर सन्नाट बीच में बोल पड़ा, कर्म
नहीं क्या ?

वह भी है। पर तुम पूछने वाले कौन हो ?
मैंने कम कहा कि मैं कौन हूँ ? मैं तो स्वयं
एक प्रश्न हूँ। आप शिक्षक हो अर्थात् हर प्रश्न
का उत्तर। आप से आशा कर सकता हूँ।

पर तुम हो कहां ?

उत्तर प्रश्न से नहीं पूछता। आप शिक्षक
हो, उत्तर दो।

किसका ?

मैं तो विद्यार्थी हूँ— प्रश्न भर। उत्तर की
प्रतीक्षा में हूँ। उत्तर दो।

तुमने मुझे पिंजरे बंद परतन्त्र कहा है।

मैं तो मात्र दोहराया है।

कैसे ?

जिसे मैं नहीं जानता। कोरी पाटी स्लेट हूँ।
जो लिखोगे लिख जायेगा। जो बनाओगे बन
जाएगा। पर यह सदा याद रखना मैं आपको ही

नव वर्ष चिन्तन

दरवाजा खुला है

□ डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर



शिवलिंग पत्रिका

राज्यसंघीय शिक्षा विभाग में आदर्श शिक्षक एवं कुशल शिक्षा
अधिकारी के रूप में कोटाई देकर अब कोटासिद्ध डॉ. राजेन्द्र
मोहन भटनागर देश के दशमवी साहित्यकार हैं। आप संसार के
ऐसे पहले उपन्यासकार हैं जिन्होंने एक ही ऐतिहासिक पात्र पर
ही दो बार एक उपन्यास लिखे हैं और वह भी इस विविधता के साथ
कि वे उपन्यासों के कथानक, चरित्र चित्रण, भाषा शैली आदि की दृष्टि
से एक दूसरे से पूर्णतः अलग हो। औषधी उसके चिन्तन में बसे हैं।
औषधी पर लिखे उसके अंत्य कुरी बैलिस्टन, औषधी के तील बल्लन, अन्तिम सायाखी
अंशुली, कलकल सहित कई भाषाओं में अलंकृत हुए हैं। आपकी कई राष्ट्रीय पुस्तककारों
की मंताजा गया है।

—सविश्व संस्थापक

दोहराऊंगा।

शिक्षक बन गया। मन ही मन प्रार्थना
करने लगा, “प्रभु। वे क्या है ? किस संकट में
ला फँसाया ? आज नये वर्ष का नया दिन है और
ऐसा। वे किससे या टकराया ! प्रभु मदद करो।”
आप शिक्षक हो, वे काम आपका हैं। मैं किसी
का प्रभु नहीं। प्रत्येक जन अपना प्रभु हैं। फिर भी
वह नहीं जानता। इस कारण वह प्रार्थना करता है।

है ! वह फिर चीका। वह सब चमत्ता है
सर्वेश्वर हैं। फिर भी बालक मन मन टटोलता हूँ—
बच्चा, “तुम कितने पानी में हो और कहां हो ?”
वह भकरा उठा। “वह सब क्या है ? क्यों है ?
सारे प्रश्न मुझसे ही क्यों ?”

“क्योंकि आप शिक्षक हो अर्थात् कृष्ण
हो।”

“और तुम ?”

“मैं नहीं जानता। न जानना चाहता हूँ।”

“यही न कि तुम अर्जुन बनना चाहते
हो।”

“वह आप जाने, जो बनाओगे बन
जाऊँगा।”

“वह तुम्हारी प्राप्ति है।”

“मेरी प्रार्थना है।”

“मुझसे नहीं, उससे करो।”

“किससे ? जिससे सारा जग करता है।”

किससे ?

“वे जग से पूछो।”

“मेरे जग आप हों।”

“असत्य”

“मैं सत्य—असत्य नहीं जानता।”

“तो जानो।”

“कैसे ?”

इस बार उसके मन ने भी दोहराया कि
कैसे ? यह तो उसने भी कभी नहीं सोचा था।
सोचने की ज़रूरत ही कहां पड़ी। शिक्षक की
उपाधि ली और शिक्षक बन गये। उत्तर बन कर
बीना था, प्रश्न बन कर रह गये। उसके मन ने
तान छोड़ी “वह कैसी सुबह है नये साल की, जो
श्याम सी ढल उठी है।”

आपने कहलवाया, हमने गाया जैसे—

गांधी के सपूत हैं

शान्ति के दूत हैं

वा

हम बढ़ेंगे, साथ चलेंगे

हर पल स्वतन्त्र रहेंगे

भाषायें कैसी भी आवें

बढ़ते कदम नहीं रुकेंगे

वह बन गया। वह उसने क्या किया। क्यों

किया ? आज कौन है गांधी का सपूत, शान्ति
का दूत ? कौन चल रहा साथ ? जितने पांच उतने
मार्ग। सब एक दूसरे से अलग बलक !

“किस सोच में पड़ गये, शिक्षक ?”

“तुम ये क्या ले बैठे महाभारत सुबह—
सुबह। वह भी नये साल की सुनहरी रश्मियाँ से
उगने वाली सुबह।”

“मैं नहीं... ?”

“तो क्या मैं ?”

आपने ही याद करा कर कहा था गांधी

बच्चों, और हम चोंगा उठे-
नयी नयी सुबह हैं,
गाती झुल्लाती।
नये नये स्वप्न ले,
अमरत बरसाती।

या

नवा वर्ष है।
नवा पर्व है।
नभ से उतरा
नवल हर्ष है।
“हां कहा था।”
“पर हैं कहा ?”

उसमें घुलता तना। उसके मन ने प्रश्न
किया, “तुमने कभी सोचा था कि तुम्हारा उत्तर
ही प्रश्न बन तुम्हें ललकार उठेगा।”

“नहीं मुझसे भी किसी ने कहा था, कहने
के लिये कि गाओ, चरन मनाओ। पर अब ?”

“फिर किस सोच में पड़ गये शिक्षक,
अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, जब नींद खुले,
तब सवेरा है।” कभी आपने वह भी कहा था
चोरा से भर, “साल का हर दिन, दिन का हर
फल, नये साल के हर पल सा उत्साह से भरा
विश्वास से, प्यार के एहसास से निर्भीक और
स्वतन्त्र हो।”

“वरुण कहा था पर सोच कर नहीं।”

“नवों ?”

“चों ही।”

तब, अब क्या बिगड़ा है। अब सोच लो।
अंदर से आवाज आये तो चल पड़ो। ये दरवाजा
तो खुला है। सदा खुला ही रहेगा... ज्योति सा
जाम्मगाठा, चिन्दगी को सँवारता, चांद तारों से
सजा, भोर सा खिलखिलता। ये मात्र स्कूल
नहीं, सकल मानवता का लघु विश्व है।

शिक्षक में सोच चेता। उसने कहा, “यह
संकल्प लेता हूँ। आज अभी से चल पड़ेगा, चाहे
कोई साथ हो या नहीं। अकेला चलना पड़ेगा, तो
भी चलूंगा अंतर की आवाज पर। अब तो बता
दो, तुम कौन हो, भाई ?”

“अभी तक नहीं पहचान सके। दरवाजा
खुला है। न सांकल है, न कुंची। तनिक अपने
अन्दर तो झाँको। वहाँ लघु-लघु इन्द्रधनुषों से
चिरा अपने को ही पाओगे।”

-105 वेक्टर 9 प, हिल्स मणरी, उदयपुर

फोन : 9294-2583848

मो. 9887757123

नूतन वर्षाभिलन्दन

नव वर्ष नव संकल्प

□ अलका डॉली पाठक



बाल मनोविज्ञान की पाठ्यपुत्री श्रीमती अलका डॉली पाठक का नाम
शिक्षा एवं समाज क्षेत्र के क्षेत्र में किसी पदविषय का मोज्जाज नहीं
है। शिक्षा व समाजवादी श्रीमती पाठक का समाज क्षेत्र में भी प्रवीण हैं।
आपकी वचनाएं विविध मासिक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में
प्रकाशित एवं आकाशवाणी से प्रसारित होती रहती हैं।

-सविश्व समाचार

दि न बदला, एत बदली और कैलेंडर
बदलने के साथ ही शुरू हो गया नया
साल...! जानते हो प्रतिवर्ष आने वाला नया
साल हम सभी के लिए नई उमंगें, नया उत्साह
और नया तराना लेकर आता है लेकिन हम हैं कि
ऐनाना की तरह नए दिन को वैसा ही मान कर
बिता देते हैं, क्या आपको लगता है कि, हमें हर
दिन की तरह नए दिन को भी ऐसे ही खत्म कर
देना चाहिए? नहीं। बिल्कुल भी नहीं...।

हमें तो नए साल के साथ एक नया वादा
अपने आपसे करना चाहिए। अपने माता-पिता,
छोटे-बड़े भाई-बहन, दादा-दादी, अपने मित्र,
पड़ोसी तथा प्रकृति, पशु-पक्षी एवं अन्य सभी से
करना चाहिए और वह है, संकल्प का वादा...।

नव वर्ष एवं अन्य खुशी के अवसरों पर आती
है जब प्रियजन की याद, शब्दों, रों एवं भावनाओं से
तब संकल्प है शुभकामनाओं की सीगात।

प्रिय नव वर्ष आपका स्वागत। आप
बचपि अचानक ही तो भी हमने आप पर बहुत
आशाएं, कामनाएँ एवं अपेक्षाएं बांध रखी हैं।
इसी कारण आपकी बात जोहते हमारी आँखें
धक गई थीं। आज हमारा हृदय अनूठे उल्लास,
अद्वितीय जोश, सुन्दर कल्पनाओं और आनन्द
से भर हुआ है। आज हमारे हृदय में एक विशिष्ट
आभा उत्पन्न रही है।

ऐ! प्यारे नवगन्तुक वर्ष, क्या आप
बताएंगे आपके गर्भ में क्या-क्या छुपा हुआ है?
आप क्या अमर संदेश और मधुर स्मृतियाँ लेकर
आए हैं? हमारे नव वर्ष में कुछ संकल्प हैं। क्या
आप बताएंगे कि हमें अपने पवित्र उद्देश्यों में
कहाँ तक सफलता प्राप्त होगी? क्योंकि जनता
शांति एवं आनन्द का राज्य चाहती है।

अरे हां इस ओर भी तनिक नज़र
धुमाइए! ये मनमोहिनी माँ-बहन कौन है?
अबो! ये तो हमारी भारत माता है! हम नहीं
चाहते कि इसके मुख पर निराशा, उदासीनता
और चिंता की रेखाएं हों। तनिक और सुनना।
इस क्षितिज के उस पार एक अरुण लालिमा की
किरणें दृष्टिगोचर होती हैं जिसे हम सुख और
शांति की किरणें कहते हैं। क्या आप इन
चमचमाती किरणों को अपनी चूंदड़ी में बांध कर
लाए हैं? पर इन सब प्रश्नों के उत्तर में नवगन्तुक
मीन है। कैलेंडर के एक-एक पन्ने पलटने से ही
रहस्य खुलेगा? हम आपका बहुत उत्सुकता से
इंतजार कर रहे हैं क्योंकि अतिथि सत्कार हमारा
स्वभाव है, इसी कारण से नवगन्तुक हम अपने
नए संकल्पों को मन में लिए आपका फिर से स्वागत
करते हैं और आशा करते हैं कि आप हमारी
कामनाओं, भावनाओं तथा आशाओं के प्रवातन
रूपी मंदिर की मूर्ति पर चबमाला पहनाएंगे।

आओ करें नव वर्ष का स्वागत...

नई भोर में,

बँधें स्नेह की डोर में,

सपनों में खूबे नवनों की कोर में,

नव धविष्य की खोज में...

आओ सर्वप्रथम हम संकल्प लें राष्ट्रीय
एकता का, क्योंकि हम एक ही राष्ट्र के वासी हैं,
हम एक ही आकाश के नीचे पले हैं। हमारा
जीवन संघर्षमय हो, संघर्ष हमारा ध्येय हो।

विख्यात कवि जगदीश गुप्त ने अपनी
पंक्तिओं में भी कहा है कि-

अपने हृदय का साथ अपने आप हमको खोजना
अपने नवन का नीर अपने आप हमको पीछना
आकाश सुख देगा नहीं खरी पसीबी है कहीं ?

जिससे हृदय को बल मिले है, ध्येय अपना तो वहीं सच हम नहीं सच तुम नहीं।
सच है महज संघर्ष ही।

हमारा देश ऋषियों का तपोवन है, प्रकृति का उपवन है। आओं लें हम संकल्प भारतीयता का क्योंकि हमारा देश छः ऋतुओं का रंगीला देश है जहां हर रंग की मिट्टियां विद्यमान हैं जहां हर रंग की फसल उगती है हर जाति के लोग मिलते हैं। जिस देश में एक रंग कभी नहीं बदलता वह है भारतीयता का रंग। अपने सभी सुख एक हैं, अपने सभी दुःख एक हैं आवाज़ दो हम एक हैं, हम एक हैं, हम एक हैं।

वेदों में कितनी अच्छी बात कही है “सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।” अर्थात् सभी मनुष्य खुशी और समृद्ध हों। सभी हमेशा नीरोग और स्वस्थ रहें। सभी का कल्याण हो। राष्ट्र के निर्माण एवं विकास की धारा को जोड़ने व राष्ट्र की अखण्डता को बरकरार रखने के लिए इस नव वर्ष की पावन बेला में हम सब एक रहें और मानवता का संदेश फैलाएं।

सदाचार मनुष्यत्व की मुक्ति का द्वार है। इसलिए संकल्प लें सदाचार का एकता और भाई चारे का। आइए, परिश्रम के अद्भुत मंच पर यानी कि परिश्रम एवं लगन के दोनों पहियों द्वारा अपनी मंजिल पर पहुंचने का प्रयास करें।

जिस प्रकार घड़े का पानी बूंद-बूंद टपक कर घड़े को खाली कर देता है, उसी प्रकार हमारी आयु बीत रही है। इसलिए हमें प्रतिदिन एक ना एक भला काम करना चाहिए, हमारा जीवन सफल हो जाएगा यदि हम किसी के लिए कुछ अच्छा कर सके।

यूं तो जीने के लिए लोग जीया करते हैं लाभ जीवन का फिर भी नहीं लिया करते हैं अपने लिये तो जीते हैं हजारों लेकिन जिन्दगी उनकी है जो औरों के लिए जिया करते हैं।

किसी ने सही कहा है कि जो तुम हंसोगे तो दुनिया हंसगी, जो रोओगे तो तुम ना अकेले, रोएगी दुनिया। मैं चाहती हूं हम संकल्प लें सदैव प्रसन्न रहने का..., इन पेड़ों को देखें, इन परिन्दों को देखें, इन बादलों को देखें और सितारों को देखें। अगर हमारी आँखें देख सके तो इनमें बिखरे उत्साह को देखें, सभी अपने-आप में बेहद खुश हैं। पेड़ों की खुशी का कोई कारण नहीं वह डॉक्टर, इंजीनियर, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति नहीं बन सकते न ही वो अमीर हो सकते हैं। न ही उनके पास बैंक बैलेंस हैं। इन फूलों को देखो

बिना किसी कारण के बहुत ही खुश है। उमंग की कोई कमी नहीं है। ऐसी उमंग आपके जीवन को खुशहाल कर दे।

नव वर्ष में उन सपनों की दुनिया सजाये जो हम खुली आँखों से देखते हैं और संकल्प करें कि उन सपनों को अपने जीवन में उतार कर ही दम लेंगे क्योंकि मानव महत्वाकांक्षी प्राणी है संकल्पहीन जीवन ऐसा ही है जैसे हम मार्ग में कहीं जा रहे हैं, यदि हमसे कोई पूछता है कि तुम कहाँ जा रहे हो? तो हम उत्तर देते हैं कि हमें मालूम नहीं है। इस पर पूछने वाले बहुत हँसते हैं। हम आगे बढ़ते हैं रास्ता मालूम नहीं है। भटकते हैं, मिटते हैं, ठोकर खाते हैं, दुःखी होते हैं।

संकल्प लें समाज सेवा का, बालिका बचाओ व शिक्षा के प्रसार का, नारी के सम्मान का, माता-पिता एवं गुरुजन की सेवा का, समाज के उत्थान का, राष्ट्र के विकास का, बचपन बचाने का, कुरतियों को मिटाने का, ईर्ष्या ना करने का स्नेहिल व्यवहार का, परमार्थ का, आत्मसम्मान का, सच कहने का, मीठी वाणी बोलने का, प्रेमपूर्ण व्यक्ति की तरह भावनात्मक शृंगार का, क्रोध पर नियंत्रण रखने का, अभिमान रहित जीवन जीने का, यातायात के नियमों की पालना का, पर्यावरण को बचाने का, परोपकार का एवं सहयोग का, पुराने संबंधों को सुदृढ़ बनाने के लिए संबंधों में जान डालने का, प्रसन्नचित रहने का एवं सकारात्मक सोचने का।

दूरदृष्टि दृढ़ संकल्प के होंगे अच्छे परिणाम, हमारे संकल्प देंगे हमारे हर स्वप्न को अजाम।

जीवन के सादे पन्नों पर बीते हुए दिनों में हर छोटे-बड़े अनुभव को उतारते हुए नव वर्ष खुशियों से भरी एक मधुर स्मृति बने।

भूल न जाएं उन संकल्पों को

जो कर रहे हैं हम अभी।

भूल ना जायें उन सपनों को

जो देख रहे हैं हम अभी।

असहमति की डाल पर

जैसे समर्पण पात-पात है

कितने भी अजनबी हों

फिर भी हम साथ-साथ हैं

अच्छे सद्भावना पूर्ण श्रेष्ठ व्यक्तियों को आर्य कहा जाता है इसलिए आओ एक साथ उच्चार करें, हम ऐसा व्यवहार करें। एक मंत्र का घोष करें- कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। -प्रधानाचार्या

दयानन्द पब्लिक सी.सै.स्कूल, बीकानेर

मो. 9829217294

दिशा देते बोल

आदर्श वाक्य हमें मार्गदर्शन देते हैं, सम्यक्तया कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। यदि उन पर अमल किया जाए। लोक सेवा आयोग द्वारा प्रधानाध्यापक साक्षात्कार में जब मुझसे आदर्श वाक्यों की अहमियत पूछी तो सन् 1989 की स्मृति में चला गया। आज मैं प्रधानाचार्य कक्ष में फुर्सत के क्षणों में कक्ष में लगे आदर्श वाक्यों को पढ़ता हूँ तो जेहन में नई शक्ति का संचार होता है। मानों कोई दिव्यशक्ति मार्गदर्शन दे रही हो। महापुरुषों के टंगे चित्र व आदर्श वाक्यों का अद्भुत संगम मानों मुझे उर्जावान बनाते हों। तभी लोकमान्य का कथन याद आता है- “नर्क में भी मुझे पुस्तकें मिल जाए तो मैं स्वर्ग बना दूँगा।” वाक्य में यह महसूस करने की बात है। बानगी स्वरूप कुछ आदर्श वाक्यों का उल्लेख कर रहा हूँ।

(1) “शान्त चित और धैर्य से काम करने वाले ही महान होते हैं।”

-डॉ. राधाकृष्णन

कहना न होगा कि मैं कई बार परिवेश या प्रशासनिक कारणों से विचलित हुआ हूँ परन्तु यह वाक्य मुझे विचलित होने से रोकता रहा व साहस का संचार करता रहा और गर्व से कह सकता हूँ कि एक ही स्थान पर, प्रधानाचार्य के रूप में कार्यरत बारहवां वर्ष इसी की बदीलत हूँ।

(2) “मुस्कराते रहो।” यह स्वभावगत भी होता है और परिस्थितिजन्य भी। कुछ स्काउटिंग का प्रभाव जिसमें नियम है “स्काउट वीर होता है, आपत्ति में भी प्रसन्नचित रहता है।” इस नियम के साथ “मुस्कराते रहो” भी मुझे सम्बल देता रहा है। प्रसन्नता व सहजता से विद्यालय का ही नहीं अन्य सामाजिक दायित्व निर्वहन में आनन्दानुभूति होती रही है।

(3) “मैं कार्य में विश्वास करता हूँ, बहानों में नहीं।”

-पं. जवाहरलाल नेहरू

यह वाक्य मुझे सतत प्रेरणा देता रहता है कि काम को पूजा के रूप में स्वीकार कर आगे बढ़ा जाए। प्रतिदिन इस जेहन में रखने पर स्वतः काम को निष्ठापूर्वक करने की प्रेरणा मिलती रहती है। काम को बोझ मान कर करना उसे दूना दुखी करता है जो उस कार्य का कर्ता हो।

(4) “आत्मविश्वासी कठिन से कठिन कार्य करने में भी सफल हो जाता है।” आत्मविश्वास ही सफलता की पहली सीढ़ी है। “स्वयमेव भूमेन्द्रता।” ऐसी ही मनोभावना जगाता वह वाक्य आत्मविश्वास का संचार करता है। पूर्वकाल में युद्ध में वीरता पूर्ण ओजस्वी गीतों से चारण लोग सैनिकों में नया जोश पैदा कर देते थे। केसरी सिंह बारहठ के “चेतावणी का चूंगदया” तत्कालीन मेवाड़ महाराणा के मन में खलबली पैदा कर गया व दिल्ली के दरबार में मेवाड़ की कुर्सी खाली रही। इसी प्रकार के अनेक आदर्श वाक्य सभी के हृदयों में हलचल पैदा करते हैं। स्वामी विवेकानन्द की 150 वीं जयन्ती समारोह चल रहे हैं। आइए हम भी इस हेतु कुछ करें।

-बालकृष्ण शर्मा, प्रधानाचार्य

रा.उ.मा.वि., कनेछन कलां

मो. 9414615821

12 जनवरी 1863 को अवधरत नेन्द्रदत्त 25 वर्ष की अवस्था में ही कषाय वस्त्र धारण कर स्वामी विवेकानन्द हो गये और भारतीय नव-जागरण के अग्रदूत माने गये। गुलाम देश में नवजागरण लाने के लिये उन्होंने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया और पतन के कारणों एवं जीवन के सभी पक्षों और समस्याओं पर गहराई से विचार किया।

चारित्रिक शिक्षा पर बल देते हुये उन्होंने कहा था-“शिक्षा मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता का विकास है। वह शिक्षा जो जन समुदाय को जीवन जीने के उपयुक्त नहीं बना सकती, जो उनकी चरित्र शक्ति का विकास नहीं कर सकती, जो उनके मन में परहित-भावना और सिंह के समान साहस पैदा नहीं कर सकती क्या उसे भी हम शिक्षा का नाम दे सकते हैं?” शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट करते हुये उन्होंने कहा था-“सभी शिक्षाओं का, अभ्यासों का उद्देश्य मनुष्य निर्माण ही है। समस्त अभ्यासों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना है। जिस अभ्यास के द्वारा मनुष्य की इच्छाशक्ति का प्रवाह और आविष्कार संयमित होकर फलदायी बन सके, उसी का नाम शिक्षा है।”

स्वामीजी ने शिक्षा को ज्ञान का पर्वत मान्न न मानकर जीवन निर्माण, मनुष्यत्व के विकास एवं चरित्र के गठन का साधन माना है। उनका दृष्टिकोण है, “उस जानकारी के समुदाय का नाम नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में भर दिया गया है और वहां पड़े-पड़े सारे जीवन भर बिना फचाये सड़ रहा है। हमें तो भावों या विचारों को ऐसे आत्मसात कर लेना चाहिये जिससे जीवन निर्माण व मनुष्यत्व आये और चरित्र का गठन हो। यदि शिक्षा और जानकारी एक ही वस्तु होती तो पुस्तकालय संसार के सबसे बड़े सन्त और विश्वकोश ऋषि बन जाते।”

स्वामी जी विश्व को धार्मिक शिक्षा देने वाले आचार्य भी थे। उन्होंने शिक्षा को धर्म पृथक् न मानकर पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष शिक्षा का विरोध किया। उनका मत था कि व्यक्ति के समान राष्ट्र की भी एक विशिष्ट प्रतिभा होती है, उसके विकास का एक मार्ग होता है। भारत का प्राण केन्द्र धर्म ही है। अतः यहां धर्म-निरपेक्ष शिक्षा की कल्पना ही भ्रामक है।

उन्होंने कहा था-“हमारी शिक्षा, बुद्धि और हमारे विचार पूर्णतः आध्यात्मिक है जो धर्म में ही अपनी पूर्णता पाते हैं।” वे कहते थे कि

150वीं जयन्ती पर विशेष

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन

□ पी.डी. सिंह

गुरुकुल में गुरु के साथ ही रहकर ही शिक्षा लेना प्रभावी है। गुरु के व्यक्तिगत जीवन से उत्तम कोई शिक्षा नहीं हो सकती। निम्न चरित्र अग्नि के समान जाप्यमान अग्नि के समान हो, ऐसे व्यक्ति (गुरु) के सानिध्य में शिष्य को बाल्यावस्था से ही रहना चाहिये जिससे कि उच्चतम शिक्षा का सजीव आदर्श शिष्य के सामने रहे। पवित्र जीवन का प्रत्यक्ष उदाहरण ही मानव के अन्तःस्थित प्रसृत देवत्व को जागृत कर सकता है और उन्होंने गम्भीर स्वरों में उद्घोषण की थी-“यदि देश के बच्चों की शिक्षा का भार फिर से त्यागी व्यक्तियों के कंधों पर नहीं आता है तो भारत को दूसरों की पादुकाओं को सदा-सदा के लिये अपने सिर पर ढोते रहना होगा।”

उनका कहना था-“आज की यह उच्च शिक्षा रहे या बंद हो जाए, इससे क्या बनता बिगड़ता है, यह अच्छा होगा, यदि लोगों को थोड़ी तकनीकी-शिक्षा मिल सके, जिससे वे नीकरी की तलाश में इधर-उधर भटकने के बड़ले किसी काम में लग सकें और नीविकोपार्जन कर सकें, उनके इन कथनों से वर्तमान तकनीकी शिक्षा के प्रति उनको उदार दृष्टिकोण का परिचय मिलता है।

स्वामी जी विज्ञान की शिक्षा की आवश्यकता तो अनुभव करते थे, किन्तु उसमें वेदान्त का समन्वय आवश्यक समझते थे। उनका विश्वास था कि वेदान्त मानव को जीवित रहने के लिये विवेक तथा कष्ट सहने के लिए धैर्य प्रदान करने के साथ-साथ स्वार्थ एवं लोलुपता पर अंकुश लगाकर उसकी मनोगत आकांक्षाओं की पूर्ति भी करवा सकता है और विश्व की नैतिक क्षयप्रवृत्तता का निवारण भी कर सकता है।



विज्ञान के साथ-साथ स्वामी जी ने कला की शिक्षा को भी अनिवार्य माना। उनके मतानुसार जीवन की जटिलता एवं दुर्बलता में पड़कर भारतीयों को कला को विस्मृत नहीं करना चाहिये-“एशियावासियों की आत्मा ही कलाप्रिय है। वे किसी भी कलारहित वस्तु का उपयोग नहीं करते। कला हमारे लिये धर्म का ही एक अंग है। पश्चिम का आदर्श उपयोगिता है, भारत का आदर्श कला। दोनों का समन्वय ही हमारे लिये उचित है।” स्वामी जी मानसिक एवं आध्यात्मिक बल के साथ शारीरिक बल को भी अत्यधिक आवश्यक मानते थे। उनका विश्वास था कि शरीर से दुर्बल व्यक्ति आत्मसाक्षात्कार के सर्वथा अयोग्य होता है, इसलिये वे देश के सभी स्त्री-पुरुषों को सकल व सशक्त देखना चाहते थे।

मातृभाषा में शिक्षा तथा प्रादेशिक भाषाओं की संवर्धना का समर्थक होते हुये भी संस्कृत भाषा को सबसे उग्र मानते थे। वे कहते थे-“संस्कृत की ध्वनिमात्र ही शक्ति, क्षमता और प्रतिष्ठा प्रदान करती है। संस्कृत पुरातन विद्या का कोष तथा मानव जाति के सर्वाधिक उदात्त विचारों का संग्रह है। प्राचीन महानता का ज्ञान इसी से कर सकते हैं। उस महानता को हम विदेशी शासन तथा राष्ट्र विरोधी शिक्षा-प्रणाली के कारण गँवा चुके हैं। स्वामी जी तो संस्कृत को संस्कृति का रक्षक एवं पर्वत मानते थे। वे कहते थे कि यदि हम सुसंस्कृत होना चाहते हैं और संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं तो हमें संस्कृत भाषा एवं उसके वेदान्त, गीता, भक्तिग्रन्थ, धर्मशास्त्र तथा नीति के उपदेशों को ग्रहण कर आचरण में लाना होगा।”

वर्तमान युग संक्रान्ति का युग है। इस संक्रान्ति काल में ही भविष्य का स्वरूप निर्धारित होगा। एक गौरवशाली भारत का निर्माण और विकास चाहते हैं तो अपनी शिक्षा समस्याओं को सुलझाने, नयी शिक्षा-योजना के निर्माण में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक चिन्तन को महत्वपूर्ण स्थान देना होगा और उनके सुझावों को अपनाना होगा।

-निदेशक, टीएन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स, जबपुर
मो. 9829014513

प्रिय नीलेश,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। कल से लेकर अभी तक उसे कई बार पढ़ चुका हूँ। तुम्हारी बातों से बड़ी खीज और निराशा झलक रही है। विशेष रूप से वहाँ, जहाँ तुम लिखते हो”.... या तो ये बच्चे गणित नहीं सीख सकते या मुझे ही पढ़ाना नहीं आता.....।” मुझे चिंता भी हुई और खुशी भी। चिंता इस बात की कि तुम्हारे जैसा परिश्रमी व्यक्ति भी ऐसा कह सकता है, खुशी इस बात पर कि तुम बच्चों के नहीं सीखने से परेशान होते हो। काश! सभी शिक्षक तुम्हारी तरह, बच्चों की फिक्र करने वाले होते।

तुम्हारी यही बात मुझे बाध्य कर रही है कि मैं तुमसे इस पर बातें करूँ। पहले तुमसे बच्चों की कठिनाइयों पर बात करूंगा, फिर शिक्षक के रूप में तुम्हारी मुश्किलों पर। मैं नहीं जानता कि मैं जैसा सोचता हूँ उससे तुम्हें मदद मिलेगी या नहीं। कारण यह है कि हर बच्चे की अपनी समस्या होती है और कोई एक तरह का हल दूसरी जगह भी कारगर हो ऐसा ज़रूरी नहीं। फिर भी मुझे लगता है, कुछ ऐसी ज़रूरी बातें हैं जो सीखने की बेहतर परिस्थितियाँ बनाती हैं।

एक बच्ची गणित सीखते समय कैसी दिक्कतें महसूस करती है, कैसे उसे हल करती है? इस पर सोचते हुए मुझे कुछ याद आ रहा है। उसे वैसा ही लिखने की कोशिश करता हूँ ताकि तुम अपने ढंग से उसका विश्लेषण कर सको।

एक शाम जब मैं ऑफिस से घर लौटा तो देखा मेरी छोटी बेटी सत्या अपनी माँ से उलझ रही थी। गुस्से से लगभग चीख रही थी—“मैं नहीं पढ़ना चाहती गणित। सबसे गंदा विषय। कौन लाया इसको दुनिया में? मिलेगा तो बहुत मारुंगी, चल मेरी क्लास में बैठ के देख’ उसकी माँ ने मेरी ओर देखा। उनकी आँखों में एक सवाल था—“क्या करूँ?” मैंने इशारे से ही कहा “छोड़ दो।”

थोड़ी देर बाद मैं सत्या के पास जाकर बैठा। उसकी पीठ पर हाथ रखकर पूछा, “क्या बात है बेटा?”

उसने मेरी ओर देखकर कहा, “पापा, गणित अच्छा विषय नहीं है न?” मुझे जवाब नहीं सूझा। थोड़ा ठहरकर मैंने कहा, “हाँ बेटा कभी-कभी मुझे भी ऐसा ही लगता है।” वह आश्चर्य से उसके विचार को स्वीकृति मिल गई थी। मैंने पूछा

शिक्षक दिवस

कुछ इस तरह पढ़ाएं गणित

□ सुधीर श्रीवास्तव

गणित विषय जहाँ बहुत से बच्चों को कठिन लगता है वहीं कभी-कभी शिक्षक के लिए भी समस्या बन जाता है। शिक्षक की समझ में ही नहीं आता कि बच्चों को गणित किस प्रकार सिखाएँ। नित-प्रतिदिन के जीवन से जोड़कर कोई भी विषय सिखाया जाए तो बच्चों के लिए सीखना सरल हो जाता है। यही बात गणित विषय पर भी लागू होती है। कुछ ऐसी ही सीख यहाँ दिए गए एक पत्र में दी गई है जो एक शिक्षक द्वारा अपने शिक्षक मित्र को लिखा गया है।

“आज मम्मी से क्यों झगड़ रही थीं?”
“मम्मी होमवर्क पूरा करने को कह रही थीं।”

“होमवर्क मुश्किल था क्या?”
“मुश्किल नहीं था, वैसे तो मैं कर लेती हूँ, पर आज स्कूल में डाँट पड़ी इसलिए गुस्सा आ रहा था।”

“अच्छा तो ये बात है। क्या हुआ था स्कूल में?”

“पापा, आज दो तरह के सवाल मिले थे। एक, मीटर को सेंटीमीटर में और दूसरा, सेंटीमीटर को मीटर में बदलो। टीचर बोली कि मीटर को सेंटीमीटर में बदलने के लिए सौ का भाग दो।”

“तुम तो गुणा और भाग करना जानती हो इसमें क्या दिक्कत है?”

“दिक्कत है पापा। मैं कई बार भूल जाती हूँ, कहाँ गुणा करना है और कहाँ भाग देना? आखिरी सवाल में तो किलोमीटर भी आ गया है।”

“ओह!.....तुमने अपनी प्राब्लम टीचर को बताई?”

“हाँ पापा, मैंने उनसे पूछा कि मीटर को सेंटीमीटर में बदलते समय सौ का गुणा क्यों करते हैं?”

“वाह! तुम्हारा सवाल तो बढ़िया था क्या जवाब दिया टीचर ने?”

“टीचर जोर से बोली—“जितना मैं कह रही हूँ उतना करो।”

मुझे कुछ सूझा नहीं क्या बोलूँ। फिर मुझे लगा, इस समय टीचर की इस प्रतिक्रिया पर सोचने से अच्छा है बच्ची के सवाल पर विचार किया जाए।

जब मैंने इस सवाल पर गौर किया तो मुझे लगा कि और भी कई सवाल होंगे जिन पर सोचना होगा। जैसे बच्चे की वास्तविक समस्या क्या है? क्या वह मीटर, सेंटीमीटर के आपसी संबंध को समझता है?

क्या बच्चे मीटर और सेंटीमीटर के परिणाम में भेद कर सकते हैं? क्योंकि मुझे तो अभी भी कठिनाई होती है जब मैं किसी बिल्डिंग की ऊँचाई या जमीन की लंबाई-चौड़ाई का अनुमान लगाता हूँ या फिर मीटर या फुट में दिए गए परिणाम को आपस में बदलता हूँ। न जाने ऐसी और कितनी बातें होंगी जो मेरी सोच से परे हैं।

यह सब सोचते हुए मैंने तय किया कि पहले यह ज्ञात किया जाए कि बच्ची नाप-तौल

यों बनता है एक युग

भारतीय काल गणना पद्धति के अनुसार, 1 सेकंड के 34,000 वे हिस्से को कृति कहते हैं। सेकंड का 300वां हिस्सा त्रुटि कहलाता है। 2 त्रुटि का 1 लव होता है और 2 लव का 1 क्षणा 30 क्षण मिलकर 1 विपल बनाते हैं (यानी 0.4 सेकंड)। 60 विपल का एक पल होता है और 60 पलों से मिलकर 1 घड़ी बनती है (मतलब 24 मिनट)। अढ़ाई घड़ी का 1 होरा (घंटा) होता है और 24 होरा का 1 दिन। इसी तरह 100 वर्षों की 1 शताब्दी और 10 शताब्दियों की एक सहस्राब्दी होती है। 432 सहस्राब्दियों से मिलकर 1 युग बनता है।

के संबंध में मोटे तौर पर क्या-क्या जानती है। फिर उसे मीटर स्केल या टेप दिखाकर मीटर-सेंटीमीटर के बारे में बात की जाए। इतनी बातचीत से तो समझ बनेगी और उसके आधार पर आगे सोचा जाएगा।

खाते समय मैंने पूछा, “सत्या मेरे लिए रोटी लाओगी?”

“हाँ पापा।”

“दो किलो ले आओ बेटा।” मैंने सहज बनते हुए कहा।

“दो किलो?” उसने मेरी ओर आश्चर्य से देखा फिर कहा, “पापा किलो में तो सब्जी, दाल शक्कर लाते हैं।”

“अच्छा ऐसा है, तो चलो दो लीटर ले आओ। आज इतना ही खा लूँ।”

“क्या मज़ाक है पापा। रोटी पेट्रोल है क्या जो लीटर में मापेंगे?”

“अच्छा, तो जितनी तुम्हारी मर्जी उतना ही ले आओ।”

“बड़ी जल्दी हार मान गए। पापा मैं तो समझी थी कि अभी आप मीटर और घंटे में भी रोटी माँगाएंगे।

मुझे हँसी आ गई। मैंने कहा “बेटा, मैं जानना चाहता था मापने की कौन-कौन सी इकाईयों को तुम जानती हो।”

ये तो मैं आपके सवाल पूछने के ढंग से समझ गई थी। पापा मैं जानती हूँ कि मीटर और सेंटीमीटर से लंबाई नापते हैं। मैं तो इतना जानना चाहती थी कि यहाँ गुणा-भाग करने के लिए सौ ही क्यों लेते हैं?”

खाना खाकर जब उठा तो बात फिर शुरू हुई। मीटर टेप लेकर हम दोनों ने ‘एक मीटर’ लंबाई पर गौर किया। फिर यह देखा कि कमरे की कौन-कौन सी चीजें एक मीटर से ज्यादा लंबी या छोटी हैं। अपने अनुमान को जाँचा भी, अनुमान के सही होने का मजा भी लिया। एक और गतिविधि की, दीवार और फर्श पर छोटे-छोटे निशान बनाए, फिर अनुमान से दूसरे निशान इस तरह बनाए कि वे पहले से एक मीटर दूरी पर हों। इसे जाँचते समय बड़ा रोमांच हुआ। हम एक मीटर से बहुत नजदीक अनुमान लगा रहे थे।

फर्श पर एक मीटर लंबाई का अनुमान लगाते समय यह पता चला कि फर्श पर लगे हुए चार टाईल्स की लंबाई कैसे बताई जाए इस पर

बात करते हुए सेंटीमीटर की नाप को पहचाना। हमने यह देखा कि सत्या की तर्जनी का अगला हिस्सा मीटर टेप पर बने किसी भी सेंटीमीटर के हिस्से को ठीक-ठीक ढक लेता है।

अब यह पता चल गया था कि एक मीटर कहने से चार टाईल्स की लम्बाई के बराबर लम्बाई का अनुमान होता है, जबकि एक सेंटीमीटर कहने से अंगुली की एक पोर के फैलाने का पता चलता है। अब हमने फर्श पर लगी टाइल को अंगुलियों से नापना शुरू किया। यह नाप एक जैसा नहीं आ रहा। हमने तय किया कि इसे टेप से नापा जाए। नापने पर पता चला कि एक टाईल्स का एक किनारा पच्चीस सेंटीमीटर का है। दूसरी तीसरी और चौथी सभी टाईल्स के किनारे एक बराबर निकले।

मैंने बच्ची से पूछा कि दो टाईल्स की लंबाई कितनी होगी? उसने कहा-पच्चीस और पच्चीस यानी पचास सेंटीमीटर.....। फिर उसने कहा-“पापा, मुझे बताने दीजिए....चार टाईल्स की लंबाई माने चार बार पच्चीस.....यानी सौ सेंटीमीटर और चार टाईल्स की लंबाई एक मीटर भी है।”

“बिल्कुल सही, चार टाईल्स की लंबाई को हम दो तरह से बता सकते हैं-चार टाईल्स की लंबाई एक मीटर है या चार टाईल्स की लंबाई सौ सेंटीमीटर है।” -- “अब समझ गई पापा, जितने मीटर उतने सौ सेंटीमीटर। पाँच मीटर यानी पाँच बार सौ सेंटीमीटर यानी पाँच सौ

शून्य का स्थान

शून्य का आविष्कार भारत में हुआ था। यहां से वैदिक गणित जब अरब पहुंचा, तो वहां 0 को ‘हिक्सा’ नाम दिया गया। इसके अलावा, भारत ने अंकों के स्थानिक मान का भी सिद्धान्त किया। उदाहरण के लिए, 222 में देखें, तो 2 का निरपेक्ष मान 2 ही है, लेकिन स्थान के हिसाब से उसका मान 2 या 20 या 200 होता है। शून्य और इस स्थानिक मान के सिद्धान्त के कारण बड़ी संख्याओं का लिखना सम्भव हो पाया। यह लगती तो सामान्य बात है, पर 1759 लिखने के लिए जब रोमन में MDCCLIX लिखना पड़ता है, तब भारतीय अंकों का महत्व समझ में आता है।

सेंटीमीटर। थैंक यू पापा।” मैंने उसके गालों को थपथपाकर पूछा, “कैसा लगा?” वह बोली “मजा आ गया।”

रात के साढ़े ग्यारह बज गए थे। मैंने पूछा, “अब बस करें?” बच्ची ने कहा-“एक बात और बता दीजिए। सेंटीमीटर वाले भाग के अंदर जो छोटे-छोटे निशान हैं वो क्यों हैं?” “बेटा अब कल बात करेंगे....।” “नहीं, अभी बताइए उसका भी कोई नाम है क्या?”

“बस दो बातें बताऊंगा। वे मिलीमीटर के निशान हैं और जो चीजें एक सेंटीमीटर से भी कम लंबाई, चौड़ाई या मोटाई की हों उन्हें नापने में इसकी मदद लेते हैं। जैसे तुमसे कोई पूछे कि पेंसिल या झाड़ू की सीक कितनी मोटी है तो तुम इसे मिलीमीटर में बता सकती हो।” मैंने देखा उसका ध्यान कहीं और था। मेरी पूरी बात शायद उसने नहीं सुनी। मैंने पूछा “क्या सोचने लगी?”

उसने कहा “पापा यदि चींटियों के गाँव में सड़क बनानी पड़ेगी तो वो सड़क कम से कम तीन मिलीमीटर चौड़ी रखनी पड़ेगी। एक मिलीमीटर जानेवाली चींटियों के लिए, एक मिलीमीटर आने वाली चींटियों के लिए और एक मिलीमीटर की खाली जगह जिससे वो टकराएँ नहीं....।” उसकी इस कल्पना पर मैं चुप हो गया। मैं वहाँ तक नहीं पहुँच सकता था। उस रात मैं यही सोचता रहा कि कैसे दिमाग में नए विचार, नयी युक्तियाँ आती हैं। जब हम किसी काम में डूब जाते हैं तब शायद ऐसे मौके बनते हैं। एक बात और जो मुझे आनंदित कर रही है वह यह कि बच्चे भी नया सोचने में बड़ों से पीछे नहीं हैं।

दूसरे दिन शाम को जब हम सब साथ बैठे थे तभी वहाँ सत्या पहुँची। उसके हाथ में कैची और दूसरे हाथ में प्लास्टिक की दो डोरियाँ थीं एक बड़ी, एक छोटी। उसे देखते ही उसकी माँ ने पूछा “अरे! इसे क्यों काट डाला?...सत्या ने बड़ी शांति से कहा “इस टुकड़े को दुकान वाली आंटी को वापस करना है। आपने एक मीटर लाने को कहा था आंटी ने चार सेंटीमीटर ज्यादा दे दिया है।”

नीलेश की बातें खत्म नहीं हो रही हैं, गोया, चिट्ठी न हुई किताब हो गई। कई बैठकें हो गईं, बातें पूरी नहीं हुईं। टुकड़े-टुकड़े में लिखी ये चिट्ठी टुकड़ों में ही पढ़ लेना, लेकिन

कर पढ़ना, इतनी बातों में कोई एक तुम्हारे काम आ जाए तो मुझे तसल्ली हो जाएगी। मुझे तुम्हारी कोशिशों पर यकीन है। यकीन है कि तुम्हारे बच्चे तुम्हें प्यार करने लगेंगे। यकीन को सच में बदलने के लिए थोड़ी सी बातें और...

अब तक जो लिखा वह बच्चों से जुड़ा हुआ था। जब हम बच्चों की क्षमताओं और कमजोरियों को पहचानने लगते हैं, तब उन्हें अच्छी लगने और न लगने वाली अनुभूतियों को खुद भी महसूस करने लगते हैं तो मुझे लगता है एक अच्छा शिक्षक होने की दिशा में आगे बढ़ रहे होते हैं। लेकिन इतना ही पर्याप्त नहीं होता इसके बाद चरम होती है, अपनी जानकारी और पढ़ने के तौर-तरीकों को बेहतर बनाने की।

अपने ज्ञान को बढ़ाते रहने और जो कुछ हम जानते हैं उसे राखा करते रहने की हमारी आदत बहुत बढ़िया स्तर की नहीं है। पिछले सप्ताह एक शिक्षक साथी से भेंट हुई। चार माह पहले वे प्राथमिक पाठशाला से उच्च प्राथमिक पाठशाला में पदस्थापित हुए हैं। वहाँ गणित

पढ़ाने के नाम से वह बहुत परेशान दिखे। उनका कहना था “मैं किससे सीखूँ?” जब मैंने उनसे कहा कि “आपने गणित की पुस्तकों को पढ़ा क्या? उनका जवाब “नहीं” था। मैंने उनसे फिर पूछा “प्राथमिक पाठशाला में गणित पढ़ाने के लिए गणित की किताब पढ़ते थे?” तो उन्होंने कहा “कभी इसकी जरूरत ही नहीं पड़ी।” इसके पहले भी बहुत से लोगों में ऐसी सोच देखने को मिली।

मुझे लगा कि किसी स्तर पर हम सोचते हैं तो हमें बहुत मजा आता है। उसमें कुछ जोड़ने के लिए संदर्भ ढूँढ़ने, कुछ पढ़ने या कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। वहीं दूसरी तरफ थोड़ी सी परिस्थितियाँ बदल जाने पर हमारे हाथ-पैर फूल जाते हैं और तुरंत हम वह सोच लेते हैं कि हमसे तो कुछ हो ही नहीं सकता। दोनों ओर चरम पर रहते हैं। बीच में रहने की आदत ही नहीं बनी। किताबों के संसार को कभी देखा ही नहीं और इसीलिए उसकी ताकत का भी अंदाज़ा नहीं लगाया। नीलेरा, मैं समझता हूँ कि किताबें

हमारी बहुत अच्छी दोस्त हैं और बढ़िया टीचर भी। प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं और बैठकों में भी बहुत कुछ सीखने-जानने को मिलता है किंतु हम अपनी छोटी-छोटी समस्याओं के लिए उसका इंतजार नहीं कर सकते। यदि मेरी बात ठीक लगे तो गणित की किताबों को धीरे-धीरे एक बार पूरा पढ़ लो यकीन मानो इतनी सारी नई बातें मिलेंगी कि तुम्हें आश्चर्य होगा।

और हाँ! यह विश्वास रखना कि तुम एक अच्छे शिक्षक हो। छोटी-छोटी असफलताएँ तुम्हारा रास्ता नहीं रोक सकतीं, इतना संकेत जरूर करती हैं कि रास्ता बदलने की जरूरत है। तो कुछ-कुछ नया करो अच्छा लोगो।

पत्र लिखना। तुम्हारे पत्र मुझे अच्छे लगते हैं।

तुम्हारा ही
सुधीर

(संपादक : NCERT द्वारा प्रकाशित
प्राथमिक शिक्षा, जुलाई 2011)

माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा संचालित आई.सी.टी. अर्थात् Information and Communication Technology योजना आज के इस संचार क्रांति के युग में शिक्षण एवं अधिगम के लिए एक प्रभावी योजना है। राज्य के विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा दिवस चाने के अवसर से यह योजना माध्यमिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों में तीन चरणों में प्रारम्भ हुई। इस योजना का प्रथम चरण पूर्ण होने वाला है जबकि द्वितीय चरण क्रियान्विति पर है तथा तृतीय चरण के लिए इस योजना का प्रारम्भ विद्यालयों में शीघ्र होने वाला है। यह प्रक्रिया शुरू हो गई है।

इन योजनाओं की सफल क्रियान्विति से माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों में कक्षा कक्ष की अवधारणा बदली हुई नजर आने लगी है क्योंकि विद्यालयों को कम्प्यूटर मय कनेक्टर, ब्लूप्रिन्ट, प्रोजेक्टर, प्रिन्टर, इन्टरनेट आदि की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है जिससे ई-लर्निंग प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है। राज्य के विद्यालयों में छात्र समूह में कम्प्यूटर का ज्ञान अर्जित करने लगे हैं तथा इन विद्यालयों के शिक्षा विभाग द्वारा दिये गये प्रशिक्षण के उपरान्त ई-कन्टेंट बनाकर शिक्षण कार्य करने

आई.सी.टी. एक क्रांतिकारी योजना

□ रवि प्रकाश विजय

लगे हैं जिससे विद्यार्थियों में सीखने की प्रक्रिया को गति मिली है।

इस योजना के अन्तर्गत राज्य स्तर पर प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर अपने जिले के प्रत्येक आई.सी.टी. विद्यालय के दो शिक्षकों को चरणबद्ध प्रशिक्षित कर रहे हैं जो विद्यालय में कम्प्यूटर लैब संचालन का कार्य सम्पन्न करेंगे।



श्री रवि प्रकाश विजय जिले के शिक्षण प्रशिक्षण के क्षेत्र में हैं, उन्होंने ही दूर कम्प्यूटर शिक्षा कार्यक्रम में भी हैं। वे आई.सी.टी. योजना के संचालन के प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षक हैं। उनके मास्टर ट्रेनर में टीक मित्र के आई.सी.टी. एट न्यूटन कार्यक्रम प्रकृति की ओर अग्रसर है। आई.सी.टी. की क्रांतिकारी योजना बताने हुए रवि प्रकाश हैं-

-रवि प्रकाश विजय

प्रशिक्षित शिक्षक विद्यालयों में पावर पॉइंट प्रोग्राम के माध्यम से विषयवस्तु पर आवश्यक स्लाइड का निर्माण कर अधिगम प्रक्रिया को सहज, आसान एवं प्रभावी बनायेंगे। शिक्षण में प्रोजेक्टर व इन्टरैक्टिव बोर्ड के उपयोग से बालकों को दिया गया ज्ञान स्थायी होने के साथ ही गुणवत्ता युक्त परिणामों की सम्प्रति में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

अतः आज के परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक है कि संस्था प्रधान एवं प्रशिक्षित शिक्षक इन योजनाओं के प्रति रूचि लेकर विद्यालय में योजनाओं की प्रभावी क्रियान्विति हेतु कम्प्यूटर लैब के संचालन एवं इनके रखरखाव का पूर्ण ध्यान रखते हुए योजना के प्रभावी क्रियान्वयन की सुनिश्चितता करें ताकि छात्रों को अधिकारिक लाभ मिल सके। आई.सी.टी. योजना के प्रभावी संचालन से न केवल विद्यालय के छात्र-छात्राओं को लाभ होगा अपितु शिक्षकों एवं मंत्रालयिक कर्मचारियों का कम्प्यूटर कौशल भी विकसित होगा। हमें इस योजना को सफल बनाने के लिए प्राण-प्रेम से प्रयास करना चाहिए।

-ब.अ., राकेश दामर उ.मा.वि., टोंक
मो. 9983904050

शिक्षण कार्य जहाँ शिक्षक को आनन्द देने वाला है, वहीं एक चुनौती बनकर भी पेश आता है। प्रत्येक शिक्षक यह चाहता है कि उसका शिक्षण प्रभावी हो, किसे छात्र-छात्राएं सपहें; मगर साथ ही उसके समक्ष शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए साधनात्मक अध्ययन-अध्यापन होना भी आवश्यक है और उसमें भी नवाचारों का समावेश होना और भी जरूरी है।

विज्ञान पर आधारित शिक्षा ही लोगों की समृद्धि, कल्याण और सुरक्षा का निर्धारण करती है। यह किसी भी देश के जीवन स्तर में वृद्धि के लिये अनिवार्य है।

उत्तम विज्ञान शिक्षण के लिये वह आवश्यक है कि विज्ञान विषय सैद्धांतिक होने के साथ-साथ व्यावहारिक भी हो। व्यावहारिक विज्ञान शिक्षण के लिये शिक्षक को वर्तमान तकनीकी, राष्ट्र की आकांक्षा, बालकों का मनोविज्ञान, शिक्षण के कौशलशौ व विधियों का उचित ज्ञान होना आवश्यक है।

विज्ञान विषय अन्य विषयों से भिन्न प्रकृति का है जिसे सिर्फ किताबों द्वारा पढ़ा देना पर्याप्त नहीं है। अपितु एक अध्यापक को विज्ञान इस रूप में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रुचि, जिज्ञासा, वैज्ञानिक अन्वेषण व सृष्टि पैदा हो सके। हमारा यह अर्थ नहीं है कि हर व्यक्ति वैज्ञानिक बन जाये परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में प्रत्येक व्यक्ति में वैज्ञानिक व्यवहार हो तथा वह आधुनिक वैज्ञानिक संस्कृति से परिचित हो। इस प्रकार के व्यवहार व संस्कृति का उद्भव एक विज्ञान के शिक्षक का प्रमुख उत्तरदायित्व है।

इन गुणों का छात्रों में विकास प्राचीन शिक्षा प्रणाली द्वारा कर पाना सम्भव नहीं है। इसके लिये शिक्षक प्रशिक्षण में नवीन नवाचारों का प्रयोग आवश्यक है जो विज्ञान जैसे नीरस कहे जाने वाले विषय को सरल रोचक एवं प्रभावी ढंग से अध्यापन करवाने का कौशल विकसित कर सके।

वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम में मनोविज्ञान, दर्शन, प्रशासन व विद्यालय सम्बन्धी ज्ञान के साथ-साथ उन तकनीकियों से भी अवगत करवाया जाता है जो उन्हें शिक्षण की कठिनाईयों के निवारण के साथ-साथ शिक्षण को प्रभावी बनाने में सहायक होती है। शिक्षण में कम्प्यूटर का

प्रभावी शिक्षण

विज्ञान शिक्षण में नवाचारों का प्रयोग

□ डॉ. मीनाक्षी मिश्रा



प्रयोग इस क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है। कम्प्यूटर से अध्यापक सभी आवश्यक विज्ञान सम्बन्धी जानकारीयों को छात्रों की जिज्ञासा शांति उनमें विज्ञान विषय में रुचि उत्पन्न करने में उपयोग कर सकता है।

दृश्य-श्रव्य सामग्री की शिक्षण को रोचक बनाने में प्रभावी भूमिका है। एक अध्यापक चार्ट, मॉडल द्वारा विज्ञान की संरचनाओं, प्रक्रियाओं, आकृतियों को स्पष्ट व बोधगम्य बना सकते हैं। टी.वी. का प्रयोग शिक्षण वैज्ञानिक घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप में छात्रों को दिखाकर प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा शिक्षण कर सकता है। जैसे-ज्वालामुखी, भूकम्प, सीस्मोफ़ल की गतिविधियाँ, प्राकृतिक घटनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव वैज्ञानिक सिद्धांतों को छात्रों के लिये बोधगम्य बना देता है।

एक चीनी कहावत है-

“मैं सुनता हूँ, भूल जाता हूँ।

मैं देखता हूँ, कुछ याद रहता है।

मैं देखता हूँ सुनता हूँ,

जीवन भर नहीं भूलता हूँ।”

शिक्षकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिये प्रशिक्षण महाविद्यालयों निरन्तर पाठ्यक्रम में नवीन परिवर्तनों का समावेश किया जा रहा है। ब्लॉक टीचिंग जहाँ शिक्षार्थी को

आगापी विद्यालयी परिवेश से समायोजन कर अभ्यास करवाती है वहीं दैनिक पाठ्यशोचना कक्षा में शिक्षण की तैयारी के लिये सूक्ष्म शिक्षण एक नवाचार है जो शिक्षार्थी को शिक्षण की बारीकियों से अवगत करवाता है। दस मिनट का यह शिक्षण अभ्यास शिक्षार्थी को शिक्षण कौशल सिखाता है। कक्षा में प्रश्न पूछने का कौशल, पुनर्बलन कौशल, स्यामपत्र लेखन कौशल, प्रयोग प्रदर्शन कौशल आदि विज्ञान विषय के प्रस्तुतिकरण को सरल, रोचक बनाने के साथ-साथ छात्रों में विज्ञान विषय के प्रति जिज्ञासा व रुचि उत्पन्न करते हैं।

शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में क्षेत्रीय पर्यटन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद व अन्य सामाजिक गतिविधियों का समावेश भी एक भावी शिक्षक के व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करता है। परम्परागत शिक्षण प्रविधियों द्वारा विज्ञान को प्रभावी ढंग से पढ़ाना सम्भव नहीं है। विज्ञान का औचित्य ही बालकों में वैज्ञानिक सोच/सृष्टि पैदा करना है जो तभी संभव है जब विज्ञान शिक्षण को अधिकाधिक को व्यावहारिक बनाया जाये। व्यावहारिक बनाने के लिए आवश्यक है कि हम विज्ञान को नवीन विधियों जैसे प्रयोग प्रदर्शन विधि, क्षेत्र पर्यटन, प्रोजेक्ट विधि आदि द्वारा पढ़ावें।

भावी शिक्षकों को विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धी नवीन जानकारीयों देने के लिये महाविद्यालय में समय-समय पर समूह परिचर्चा, कार्य-शाला, विचार गोष्ठी आदि का आयोजन भी करवाते रहना चाहिये। भावी शिक्षकों के प्रशिक्षण के दौरान इस प्रकार के नवाचार उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ वैज्ञानिक व्यवहार भी विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं ताकि यहाँ भावी शिक्षक आगे चलकर विद्यालयों में भावी पीढ़ी को प्रारम्भिक स्तर पर ही विज्ञान विषय के प्रति अभिरुचि व वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न कर सके।

-भारती शिक्षक प्रशिक्षण स्नातकोत्तर संस्थान श्रीगंगानगर (उज.)

कैरियर डे विशेष निर्देशन सेवाएं हैं अहम्

□ नाथूराम गर्ग

कैरियर डे संकल्पना/भूमंडलीकरण, बाजारवाद और निजीकरण के इस भयावह प्रतिस्पर्धा के दौर में जीविकोपार्जन समस्याओं के महाविस्फोट में युवाओं के सामने बेरोजगारी सबसे गंभीर समस्या है। शिक्षित युवाओं को भावी जीवन में कैरियर चयन संबंधी निर्देशन माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में दिया जाना अति आवश्यक है।

निर्देशन एवं परामर्श : निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक अनुभव प्राप्त व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को जो अनुभव नहीं रखता अथवा अनुभवहीन है, सहायता देता है। निर्देशन का अर्थ है सहायता करना- दिखाकर, संकेत कर अथवा रास्ता बताकर।

निर्देशन के उद्देश्य

- (1) व्यक्ति में आत्म-निर्देशन की शक्तियों का विकास करना।
- (2) व्यक्ति को अपनी निहित शक्तियों और योग्यताओं से परिचित कराना।
- (3) व्यक्ति को अपनी योग्यताओं, रुचियों तथा क्षमताओं को विकसित करने में सहायता देना।
- (4) व्यक्ति को चुनाव करने में सहायता देना।
- (5) व्यक्ति को उनकी योग्यताओं के अनुरूप शैक्षिक एवं व्यावसायिक अवसरों का ज्ञान कराना।

निर्देशन की आवश्यकता- जन्म के बाद व्यक्ति ज्यों-ज्यों समाज के सम्पर्क में आता है वह अपने को समस्याओं से घिरा पाता है। घर में, स्कूल में, समाज में और अपने दैनिक कार्यों में प्रायः वह निर्देशन की आवश्यकता महसूस करता है। साधारण भाषा में निर्देशन का अर्थ 'सहायता' के रूप में लिया जाता है, परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में इस शब्द का अर्थ व्यापक रूप में लिया जाता है।

सुनियोजित निर्देशन कार्यक्रम द्वारा व्यक्ति अपनी योग्यताओं, रुचियों, अभिरुचियों तथा क्षमताओं का पूरा विकास करने के अवसर प्राप्त करते हैं।

निर्देशन के प्रकार

1. शैक्षिक निर्देशन- इसका संबंध बालकों की शैक्षिक समस्याओं से है।
2. व्यावसायिक निर्देशन- इसमें बालकों की व्यावसायिक समस्याओं का हल निकालने का प्रयास किया जाता है।
3. व्यक्तिगत निर्देशन- इसके 6 भाग हैं, जो इस प्रकार हैं-
 - शारीरिक एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं- जैसे रोग आदि।
 - संवेगात्मक संतुलन की समस्याएं- जैसे भय, चिंता, क्रोध आदि।
 - पारिवारिक समस्याएं- जैसे भाई-बहन का बर्ताव, माता-पिता का बर्ताव आदि।
 - यौन समस्याएं- जैसे प्रेम विवाह आदि।
 - नैतिक समस्याएं- सच बोलना आदि।
 - आर्थिक समस्याएं- गरीबी आदि।
4. नागरिक अथवा सामाजिकता के लिए निर्देशन-समाज के विभिन्न वर्गों से उपयुक्त संबंध स्थापित करना।
 - माध्यमिक शिक्षा में मार्गदर्शन (निर्देशन) कार्य की शुरुआत करने के लिए कुछ सुझाव।
 - माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन सेवा के प्रभारी का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए।
 - प्रशिक्षण संस्थानों में एक मार्गदर्शक प्राध्यापक अवश्य होना चाहिए। विद्यालय में एक निर्देशन सेवा कक्ष होना चाहिए।
 - निर्देशन सेवा से संबंधित साहित्य पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए।
 - निर्देशन एवं परामर्श सेवा योजना निर्माण कर अधिकतम गतिविधियों का संचालन करना।
 - शाला विकास समिति (SMC) की बैठकों में मूल बिन्दुओं पर चर्चा करना।
 - प्रार्थना सभा एवं अन्य विद्यालयी उत्सव आयोजन आदि के अवसर पर जानकारी देना।

मूलभूत आवश्यकताओं में निर्देशन

- विद्यार्थियों की समस्याओं, गुणों का अवलोकन कर समाधान में सहयोग करना।
- विद्यार्थियों की सामाजिक एवं संवेगात्मक समस्याओं की पहचान कर समाधान में सहयोग करना।
- अच्छे स्वास्थ्य हेतु ज्ञान कराना।
- आधारभूत निपुणताओं का ज्ञान कराना- जैसे सीखने एवं समझने की।
- अनुशासन में रहने योग्य बनाना।
- सुरक्षा एवं विश्वास की भावनाएं उत्पन्न करने में सहायता करना।
- अवकाशकालीन कार्यों की जानकारी कराना।
- विशिष्ट बालकों की पहचान कर आवश्यकतानुसार सहयोग करना।
- विद्यालयी पाठ्यक्रम को विद्यार्थी के अनुरूप अध्ययन में सहायता कराना।
- बालकों में रुचि और उनके अध्ययन में सहयोग करना।

मार्गदर्शन के मुख्य बिन्दु निम्न प्रकार हो सकते हैं

- माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में निर्देशन सेवा क्यों आवश्यक?
- कैरियर चयन
- स्वरोजगार एवं रोजगार के अवसर
- अकादमिक एवं व्यावसायिक शिक्षा
- आवासीय विद्यालयों की जानकारी
- छात्रवृत्तियों एवं विद्यार्थी दुर्घटना बीमा योजना की जानकारी
- 'कैरियर डे' का आयोजन एवं कैरियर कॉर्नर की स्थापना।

प्रति वर्ष युवाओं के प्रेरणा पुरुष "स्वामी विवेकानंद जयन्ती" 12 जनवरी को 'कैरियर डे' के रूप में मनाने के लिए चयन किया गया है। विद्यार्थियों को कैरियर चिन्तन के लिए प्रेरित करना और शिक्षकों एवं अभिभावकों को उनका सहभागी बना मार्गदर्शन करना इसका आधार है।

उद्देश्य-

- कैरियर संबंधी जानकारी देना
- कैरियर चिंतन विकसित करना
- रोजगार, स्वरोजगार, विकास के विभिन्न आयामों की जानकारी कराना।
- विभिन्न पाठ्यक्रमों/प्रशिक्षण सुविधाओं की जानकारी देना।
- विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं को कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम से जोड़ने हेतु प्रेरित करना।

कैरियर डे आयोजन के लिए विद्यालय स्तर पर किये जाने वाले कार्य-

- जिला शिक्षा अधिकारी से प्राप्त निर्देशों की पालना करना।
- प्रार्थना सभा में कार्यक्रम की जानकारी देना।
- शिक्षकों में कार्यक्रमानुसार कार्य विभाजन करना।
- अभिभावकों को कार्यक्रम में आमंत्रण करना।
- वित्तीय संसाधन जुटाना।
- दैनिक कार्यक्रम तैयार करना।
- योग्य वार्ताकारों को बुलाना।
- विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन की सूचना विद्यार्थियों को देना।
- कैरियर प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- कैरियर डे प्रतिवेदन 15 जनवरी तक सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक कार्यालय को प्रेषित करना।)

कैरियर डे कार्यक्रम

प्रातः 10.00 बजे से 11 तक प्रार्थना
 11.00 बजे से 11.30 बजे तक प्रदर्शनी उद्घाटन
 11.30 बजे से 12.30 बजे तक वार्ताओं का आयोजन
 12.30 बजे से 1.30 बजे तक अभिभावक सम्मेलन
 1.30 बजे से 2.00 बजे तक मध्यांतर
 2.00 बजे से 3.30 बजे तक प्रतियोगिताओं का आयोजन
 3.30 बजे से 4.30 बजे तक समापन एवं पारितोषिक वितरण।
 प्रदर्शनी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के लिए दिन भर खुली रहेगी, ऐसी व्यवस्था संस्था प्रधान

को करनी चाहिए।

‘कैरियर डे’ आयोजन के लिए प्रमुख गतिविधियाँ-

- कैरियर वार्ताएं
- कैरियर प्रदर्शनी
- कैरियर प्रतियोगिताएं-निबंध, चार्टस निर्माण एवं साहित्य प्रतियोगिताएं।

‘कैरियर डे’ आयोजन में सहयोगी संस्थाएं

- रा.रा.शै. अ.प्र.सं. उदयपुर
- जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान
- जिला उद्योग केन्द्र
- सूचना केन्द्र
- स्वयं सेवी संस्थाएँ
- रोजगार कार्यालय

निर्देशन कक्ष/कैरियर कॉर्नर

ऐसा कक्ष जहाँ पर शैक्षिक, व्यवसायिक, व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान करने हेतु साहित्य सामग्री उपलब्ध हो सके, उसे निर्देशन कक्ष कहते हैं। अभिभावकों-विद्यार्थियों से मिलने के लिए भी यथा स्थान सर्वाधिक उपयुक्त रहता है क्योंकि इसकी सजावट उपयुक्त रहती है तथा इसकी सजावट व प्रदर्शित सामग्री से सही सोच उत्पन्न होती है। कैरियर कक्ष के अभाव में एक कॉर्नर में भी निर्देशन साहित्य सामग्री को प्रदर्शित किया जा सकता है। नवीनतम जानकारी का निर्देशन पट्ट पर प्रदर्शित कर निर्देशन कॉर्नर बनाया जा सकता है।

आवश्यक सामग्री-

- पर्याप्त निर्देशन साहित्य
- चार्टस, पोस्टर

- अभिलेख संधारण हेतु सूचना फाइल्स व रजिस्टर
- निर्देशन पट्ट
- आवश्यक पत्र-पत्रिकाएँ

आवश्यक सूचनाएँ

- रोजगार संबंधी
- छात्रवृत्ति संबंधी/विद्यार्थी दुर्घटना बीमा संबंधी
- आवासीय विद्यालयों, सैनिक स्कूलों में प्रवेश प्रक्रिया की जानकारी व सूची।
- उ.प्रा.वि. मा.वि. उ.मा.वि. स्तर के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों तथा पाठ्यक्रमों की सूची
- रोजगारोन्मुखी कार्यक्रमों की जानकारी
- विद्यालय में उपलब्ध समस्त सुविधाओं की जानकारी

निर्देशन साहित्य का संकलन

- पत्र पत्रिकाओं से
- जिला उद्योग केन्द्र से
- रोजगार कार्यालय से
- पुस्तकालय से
- रोजगार कार्यालय

निर्देशन सूचना का प्रदर्शन व प्रस्तुतीकरण

- निर्देशन पट्ट द्वारा
- पोस्टर व चार्ट द्वारा
- एलबम व मॉडल द्वारा

आदर्श कैरियर शिक्षक मिलनसार मृदुभाषी मनोवैज्ञानिक अच्छा मार्गदर्शक होना चाहिए।

-प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., भादरिया (जैसलमेर) मो.

देश की सच्ची सम्पत्ति है उसके वे युवक व युवतियाँ जिनके शरीर की आभा में प्रकृति का सबसे अधिक स्पष्ट दर्शन होता है और जिनके लक्ष्य में उदारता और कर्मण्यता, सहिष्णुता और अदम्य साहस के स्रोत का प्रवाह पूरे जोरों पर है।

-गणेश शंकर विद्यार्थी

युवकों का उत्साह केवल ताप बनकर यदि न रह जाए और उसमें यदि तप भी मिल जाए तो वह बहुत निर्माणकारी सिद्ध हो सकता है।

-जैनेन्द्र (समय, समस्या और सिद्धान्त)

वि भिन्न पदों के लिये चयन में अथवा कैरियर प्लानिंग के लिये स्व-मूल्यांकन कर यह आकलन कर लिया जावे कि हम व्यक्तिगत जीवन में कहां खड़े हैं, तो उससे सर्वोत्तम कैरियर का चयन करने में मदद मिलती है। यदि वह किसी कैरियर का चुनाव कर चुका है, तो भी कैरियर एवं स्वयं के सम्बन्धों को जानकर अपनी सफलता के रास्ते की पहचान बेहतर ढंग से कर सकता है।

यदि कैरियर काउंसलरों से यह कहा जाये कि उनसे सबसे ज्यादा पूछा जाने वाला सवाल कौन्सा है तो वे सभी लगभग एक ही जबाब देते हैं। उन्हें भूतकाल और मौजूदा समय में यही सवाल पूछा जाता रहा है कि मुझे नही मालूम मुझे क्या करना चाहिये। क्या कोई ऐसा टेस्ट है जिससे मालूम हो जावे कि मेरे लिए सबसे सही कैरियर कौन्सा है? हालांकि इसका सही सटीक जवाब नही होता है क्योंकि ऐसा कोई टेस्ट नही होता है, जो चाहुई तरीके से यह बता सके कि आपको आगे की बिन्दुओं में क्या करना है। ज्यादातर कैरियर काउंसलर इस सवाल का जबाब खोजने के लिये अनेक तरह की स्व मूल्यांकन सूचिका का प्रयोग करते हैं। स्व मूल्यांकन कैरियर प्लानिंग प्रोसेस का पहला कदम है और उसके पूरे फायदे भी हैं। कैरियर प्लानिंग के अलावा खुद का आकलन कर यह जाना जा सकता है कि हम व्यक्तिगत जीवन में दरअसल कहां खड़े हैं। स्व-मूल्यांकन सूचिका से प्राप्त नतीजों के मुताबिक कैरियर प्लानिंग किया जा सकता है।

स्व मूल्यांकन की कई सूचिकाएँ हैं जिसमें से प्रमुख निम्न हैं:-

1. **मूल्य सूची**— किसी भी पेशे का चयन करते समय मूल्य सूचिकाएँ कैसे— उपलब्धियाँ, स्तर, स्वतन्त्रता आदि सबसे महत्वपूर्ण चीज हैं। यदि कैरियर प्लानिंग में मूल्यों को महत्व नहीं देते हैं तो संभव है आप अपने पेशे से नफरत करने लग जायें। ऐसे में आप सफल नहीं हो सकेंगे। मिसाल के तौर पर यदि किसी को अपने काम में स्वतन्त्रता पसंद है तो वह ऐसा काम पसंद नहीं करता, जिसमें निर्णय दूसरों द्वारा लिये जाते हैं। मूल्य सूचिका दो तरह की होती है, आंतरिक और बाहरी। आन्तरिक मूल्य पेशे से सीधे जुड़े होते हैं, इनसे समाज को फायदा पहुँचता है, जबकि बाहरी मूल्यों में कमाई और अन्य सुविधाएँ शामिल होती हैं। मूल्य सूचिका में सामान्यतया इस तरह के सवाल पूछे जाते हैं।

● क्या उच्च वेतन आपके लिये महत्वपूर्ण है।

कैरियर डे विशेष

जो चाहे बन जाए बालक

□ उषा टेलर



प्रतिवर्ष 12 जनवरी, विवेकानंद जयन्ती के दिन हम कैरियर डे आयोजित करते हैं। कैरियर पदार्थकाल के आदी पक्ष का शिक्षण कक्षाओं में अहम रोल बख़्तरा है। शिक्षकों को कक्षागत शिक्षण के साथ अपने इन ज्ञानवर्धक कौशलों की अभिरक्षा चाहिए। इस अवसर पर उपयोगी आलेख गिजवॉले के लिए हम उषा टेलर प्रोफेसराय, व.का.उ.मा.वि. देवमगढ़ (राजस्थान) के प्रति आभारी हैं।

—विवेकानंदपाठक

- क्या आपके लिये वह खास है कि काम में लोगों से सम्पर्क शामिल है।
- क्या आप इस बात को खास महत्त्व देते हैं कि आपका काम समाज में योगदान है।
- क्या प्रतिष्ठित जॉब आपके लिये ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- क्या आपके द्वारा सोचे जा रहे जॉब को करने से आपको जॉब सेटिस्फ़ेशन मिलेगा। वह उल्लेखनीय है कि आप किस काम को करने जा रहे हैं, उसे करने से आपको सुख एवं सन्तोष मिलना चाहिए। कैरियर काउंसलिंग में इस बात को भी सुनिश्चित करना चाहिए।

इस तरह के मूल्यांकन में कैरियर काउंसलर (MIQ) मिनेसोटा इन्स्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी (SIV) सर्वे ऑफ़ इंटरपर्सनल वैल्यू या (TVI) टेक्नॉलॉजी एण्ड वैल्यू इन्वेस्टीगेशन आदि काम में ले सकते हैं।

2. **अभिरुचि सूची**— इनमें सबसे ज्यादा लोकप्रिय सूची स्ट्रॉंग इंटेरेस्ट इन्वेंटरी है। ये सूचिका कैरियर प्लानिंग में सबसे ज्यादा काम में ली जाती है इनमें अनेक आश्चर्य और अभिरुचि से जुड़े सवाल पूछे जाते हैं। इन सूचिकाओं को सबसे पहले काम में लेने वाले ई.के. स्ट्रॉंग ने अनेक सर्वे और रिसर्च के बाद पाया कि किसी व्यक्ति की यदि किसी गतिविधि, वस्तु, व्यक्ति आदि में रुचि है और उसे उसी तरह का काम मिल जावे वह ज्यादा खुश व सफल होता है।

3. **व्यक्तित्व सूची**— कैरियर काउंसलर मानते हैं कि कुछ व्यक्तित्व किन्हीं कैरियर के लिये सबसे उपयुक्त होते हैं। मिसाल के तौर पर एक अन्तर्मुखी उस कैरियर को ज्यादा अच्छा नहीं कर सकता जिसमें भाषण की जरूरत होती है। अतः

इसका ध्यान रखा जाना फलदायक है।

4. **कौशल सूची**— जब आप यह निर्णय ले रहे होते हैं कि क्या करने जा रहे हैं तो उसके साथ यह भी सोचते हैं कि किस काम को आप ज्यादा अच्छी तरह कर सकते हैं, क्यों कि आप उसी काम को आनन्द के साथ कर सकते हैं जिसमें आपकी रुचि है। जब आप कौशल (जिन गतिविधियों में आप अच्छे हैं जैसे लेखन, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग, अभ्यापन आदि) पर विचार कर रहे होते हैं तो इस बात पर भी ध्यान दें कि इसमें पारंगत होने में कितना समय लगने वाला है।

कम्प्यूटर आधारित प्रोग्राम— SIGI-3 सिस्टम ऑफ़ इंटीग्रेटेड गाइडेंस एण्ड इन्फॉर्मेशन जैसे अनेक कम्प्यूटर आधारित प्रोग्राम हैं जिसकी मदद से खुद का आकलन किया जा सकता है। ये कैरियर सेंटर, स्कूल, कॉलेज पुस्तकालयों आदि में उपलब्ध होते हैं।

इन सबके अलावा स्व मूल्यांकन की प्रक्रिया में आपके पसंदीदा कैरियर को प्रभावित करने वाली अनेक बातों पर विचार किया जाना चाहिये जैसे—परिवार, जिम्मेदारियाँ और शिक्षा में आनेवाला खर्च आदि। इसके साथ यह भी ध्यान रखना चाहिये कि स्व मूल्यांकन कैरियर प्लानिंग का पहला कदम है, आखिरी नहीं। इसके बाद उन पेशों पर विचार करना है, जो आपने व्यक्तिगत और चरित्रों से मेल खाते हैं। इसके बाद उस विशेष क्षेत्र के बारे में ज्यादा खोजबीन की ज़रूरत है।

अपने लिये उपयुक्त, सहज और पसंदीदा क्षेत्र चुनने का चोखिम उठाइये। तभी आप वह बन पायेंगे, जो आप हैं। तो आइये, हम अपने विद्यार्थियों का निर्देशन करें।

—प्रधानाचार्य

रा.का.उ.मा.वि., देवमगढ़ (राजस्थान)
मो. 8829084671

महापुरुषों के जीवन से

अद्भुत है स्वामी रामतीर्थ का जीवन-कर्म

□ रूपनारायण काबरा

ज ए भारत के आगमन का विश्वास दिलाने वाले संदेशवाहकों में अत्यन्त असाधारण व्यक्तित्व के छनी थे स्वामी रामतीर्थ। पंजाब के मुरलीवाला गांव में 1873 में इनका जन्म हुआ था और हिमालय की गोद में गंगा में स्नान करते हुये दुर्घटना में मात्र तैतीस वर्ष की उम्र में ही वे इस संसार को छोड़कर चल बसे। वे कहा करते थे—

हम आधु से नहीं अपने कर्मों में जीते हैं विचारों में जीते हैं, न कि सांसारिक में। भावनाओं में जीते हैं न कि समय के चक्र में, वहीं सबसे अधिक जीता है जो सबसे ऊँचा और अधिक सोचता है और जो सबके लिये श्रेष्ठ भाव रखता है और श्रेष्ठतम कर्म संपादित करता है। इसलिये काम करो, काम करो, पूरा दिल लगाकर अपनी पूरी शक्ति से यह वाद रखते हुये कि 'काम ही पूजा है' और यह वाद रखते हुये कि 'काम ही जीवन है।' उत्तम कार्य अपना पुरस्कार स्वयं होता है। कार्य तो मनुष्य की सहज अवस्था है।"

ये शब्द हैं तीर्थराम गुसाई, एम.ए.के (बाबी स्वामी रामतीर्थ) 1898 में दिये गये एक व्याख्यान में और विषय था "गणित में महारत कैसे हासिल करें" जब वे फॉरमैन क्रिश्चियन कॉलेज, लाहौर में थे। और दो वर्ष बाद ही वे त्याग पत्र देकर हिमालय क्षेत्र में चले गये, संवासी बने, जापान गये, अमरीका गये और 1904 में भारत आ गये और 1906 में गंगा में दुर्घटनाग्रस्त होकर देह त्याग दी।

महात्मा गांधी ने कहा था, "गौरवमयी प्रसिद्धि का एक घंटा ही उससे अधिक है जिसको सी वर्ष में भी पहचान ही नहीं मिली हो।" स्वामी रामतीर्थ की शिक्षा एवं उपदेशों को प्रचारित प्रसारित करना ही है, वे महानतम दिव्य आत्माओं में से एक थे, केवल भारत के ही नहीं अपितु समग्र विश्व के। मैं उनके आदर्शों का श्रद्धावन्त प्रशंसक हूँ।"

'सूर्य के प्रकाश में बिताये गये कुछ पल ही पर्याप्त हैं। इस देदीप्यमान दीप्ति के स्वोत् का परिचय देने हेतु।

तीर्थराम के शैशव से लेकर एक 'नवीन भारत के भविष्यदुद्घा' बन जाने तक की गाथा अत्यन्त प्रेरणास्पद हैं। स्कूल में उन्होंने अपने फरसी टीचर को गुलिस्तां और 'दोस्ता' से फरसी कविताओं का शुद्धवाचन कर चमत्कृत कर दिया था। वे संस्कृत, गणित व अंग्रेजी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान हो गये।

बी.ए. परीक्षा का गणित पेपर सभी के लिये अत्यन्त कठिन था, मीडिया में भी यह खबर छपी थी। तेरह प्रश्नों में से कोई से न प्रश्न करने थे लेकिन तीर्थराम ने सभी तेरह प्रश्नों को हल करके निवेदन नोट लिखा, "कृपया हल



किये हुये 13 प्रश्नों में से कोई भी न जांच लें। यह थी उनकी महारत (योग्यता) और यह था उनका आत्मविश्वास। उनको 90% अंक मिले और इससे चमत्कृत होकर उन्हें एम.ए. करते ही उसी कॉलेज में प्रोफेसर नियुक्त कर दिया। यह था चमत्कार को नमस्कार।

उनके जन्म के तुरंत बाद ही माँ चल बसी थी। पिता एक निर्धन पंडित पुचारी थे। इन सन विपत्तियों के बावजूद वे अपनी प्रतिभा से लगातार उत्थानवृत्ति जीतते गये स्कूल में और कॉलेज में। छात्रवृत्ति की अधिकांश राशि पुस्तकें खरीदने में और शेष का अधिकांश भाग गरीब

छात्रों की सहायता में खर्च हो जाता था। उनका खाना-पीना व कपड़े अत्यन्त साधारण थे। कई बार तो लैप के लिये तेल खरीदने के कारण बिना खाना खाये भी रहना पड़ता था। वे कमबोर होते चले गये, व्यायाम बगैरह के बावजूद भी। उन्होंने आत्मसंयम के प्रभाव से न केवल कमबोरी दूर कर ली बल्कि इतनी शक्ति भी संचित कर ली कि हिमालय क्षेत्र में 40 मील की पदयात्रा बिना थके कर लेते थे। अमरीकन सिपाहियों को खूब लंबी दौड़ में हरा दिया था।

अपने पण-प्रदर्शक, धर्मगुरु भगत भजानी के पास इनके 1000 पत्र सुरक्षित रहे हैं। ये सब उर्दू में हैं और एक किताब के रूप में छप भी गये हैं। वे प्रातः 5 बजे उठ जाते थे और रात में 10.30 बजे सो जाते थे। घूमते हुये भी वे अपनी पुस्तक पढ़ा करते थे। कोई गणितीय समस्या को हल नहीं कर पाते तो उसे बीच में ही छोड़कर सोने चले जाते थे, दिमाग नींद में भी काम करता रहता और वे अर्द्धरात्रि में अचानक जग जाते और हल लिख लेते थे। राम विचित्र कसरतें भी करते थे जैसे चारपाई को दो टांगों से 160 बार उठाना, यह था उनका बेट-लिफ्टिंग।

एक पत्र में उन्होंने लिखा था, "जब हमारा पेट स्वस्थ रहता है तभी हम प्रसन्न एवं उमंग भरे रहते हैं, एकाग्रचित्त भी, और बुद्धि तथा स्मरण शक्ति तीव्र रहती है तथा तभी हम शुद्ध हृदय में ईश्वर की प्रार्थना भी कर पाते हैं। वे प्रत्येक ग्रास को पूरा पचाने का ध्यान रखते थे। उनकी नोट बुक्स बताती हैं कि वे कितने घोर पढ़ाफू थे। वे जो पढ़ते थे और जो खाते थे दोनों को ही पूरा पचाने का ध्यान रखते थे। वे प्राञ्च दर्शन के साथ ही पाश्चात्य दर्शन में भी पारंगत थे। साहित्य और विज्ञान में भी बेबोझ थे।

लाला हर दयाल, जब स्वामी रामतीर्थ अमेरीका गये, तब वहीं थे, उन्होंने कहा था, "रामतीर्थ एक महान संत एवं ऋषि हैं और हिन्दू अध्यात्म के पुरोधा हैं, वे विश्वात्मा में एकान्त हैं। कितनी बड़ी बात कही है।

जापान से पूर्णसिंह ने लिखा, "जापानी

यही महसूस करते हैं कि स्वामी रामतीर्थ एक 'मानव फ्यूजीभामा' हैं और गौतमबुद्ध की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं।" जापान में दिया गया व्याख्यान "सफलता का रहस्य" तथा अमेरिका में, "भारत की ओर से अमेरीकावासियों से अपील" में उनकी भाषा और प्रस्तुति का विशेषण आकर्षण होता था।

स्वामी रामतीर्थ के अनुसार सफलता का रहस्य निहित है 'श्रम (कार्य), आत्मनिर्भरता, आत्मविस्मृति, वैश्विक प्रेम, प्रसन्नता एवं निर्भयता में'। वे कहते थे, "यदि कोई मुझसे मेरे जीवन दर्शन को एक शब्द में जानना चाहता है तो वह है 'आत्मनिर्भरता'।

उन्होंने अमेरीकावासियों से अपील की थी, "समस्त विश्व के लिये राम आपसे भारत की समस्या हेतु सहयोग की आशा रखता है, सत्य और न्याय के नाम पर। राम, आपसे भारत का पक्ष लेने हेतु अन्तर्मन से निवेदन करता है।

वक्तव्य से पूर्व उनका सम्बोधन अनूठा होता था, वे बोलते थे, "देवियों और सज्जनों के रूप में मैं स्वयं" और बाद में अपने लिये "राम" शब्द का ही प्रयोग करते थे। वे अपने को बादशाह राम भी कहते थे। वे अपने को स्वयंभू बादशाह मानकर चलते थे। काहिरा से जहाज में हिन्दुस्तान आने के लिये बैठे थे। थोड़ी देर में जहाज चलने से पूर्व भारत जाने के लिये जॉर्ज पंचम भी आ गये थे, उन्हें देखते ही स्वामी रामतीर्थ बोले 'एक ही जहाज में दो बादशाह नहीं जा सकते,' यह कह कर वे जहाज से उतर गये थे।

उन्होंने अपने एक वक्तव्य में भारत के लिये यह भविष्यवाणी की थी, "समूह के साथ या स्वयं अकेला काम करते हुये राम गंभीरतापूर्वक वादा करता है कि दस वर्ष से पूर्व ही मैं यहाँ जीवन का सत्य अनुप्राणित करूँगा और भारत का तमस तथा कमजोरी दूर करूँगा और बीसवीं सदी के प्रथम अर्द्धांश में ही भारत को अपनी वास्तविक शान से भी अधिक ऊँचा दर्जा पुनः मिलकर रहेगा।" यह भविष्यवाणी कितनी सच निकली यह हम सब जानते हैं। स्वामी रामतीर्थ के जीवन से हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

—ए-438, किशोर कुटीर
वैशाली नगर, जयपुर-302021
मो. 823336083, 09967005820

बालिका शिक्षा

करें हम बेटी का सम्मान

□ निर्मला देवी

ह म सबको इस बात का गर्व है कि भारत विश्व में विश्व गुरु के नाम से जाना जाता है। वह इसलिए कि भारत की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर आज भी विश्व में अपना विशेष महत्व रखती है। भारतवासियों को इस पर गर्व करना चाहिए।

इसी के साथ प्राचीन समय से ही महिलाओं के प्रति आदर एवं सम्मान का भाव विशेष रूप से रहा है इसीलिए कहा गया है कि:- "यत्र नारीयस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता" इन्हीं भावनाओं का प्रभाव है कि भारत में गार्गी-मैत्रेयी जैसी विदूषी, सीता, सती, सावित्री जैसी पतिव्रता, इन्दिरागांधी, प्रतिभा पाटील, मीरा कुमार, सुषमा स्वराज, मायावती, उमा भारती आदि राजनीति के क्षेत्र में, किरण वेदी, बादाम बैरवा प्रशासनिक क्षेत्र में, मदर टेरेसा समाज सेवा के क्षेत्र में, पी.टी.उषा, कर्णम मलेश्वरी, सायना नेहवाल, मेरीकोम, कृष्णा पूनिया आदि खेल के क्षेत्र में, सुनीता विलियम्स (भारतीय मूल) व कल्पना चावला अन्तरिक्ष क्षेत्र में, महादेवी वर्मा, सुमित्रा कु0 चौहान, मीरा बाई साहित्य के क्षेत्र में, इन्दिरा नूई और चन्दा कोचर, व्यापार एवं औद्योगिक क्षेत्र में लता मंगेशकर संगीत के क्षेत्र में जो स्वर कोकिला के नाम से जानी जाती है। अपनी अनुपम मिसाल कायम कर साबित कर दिया कि महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं, तो इनके साथ ऐसा घोर अन्याय क्यों ? क्यों इनकी दुनिया में आने से पहले ही 'कन्या भ्रूण हत्या' की जा रही है? यह सभी महानुभावों के लिए विचारणीय प्रश्न है। इसका समाधान भी हमें ही तलाशना है।

आज हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। किन्तु अभी तक हम सामाजिक बुराईयों के जाल से बाहर नहीं निकले हैं जिसका परिणाम है कि आज महिलाओं के साथ भेद-भाव किया जा रहा है तथा लैंगिक असन्तुलन एक विकट समस्या के रूप में हमारे सामने खड़ा है। 1901 की जनगणना के अनुसार भारत में 1000 पुरुषों पर 927 महिलाएँ थी। 2011 की जनगणना के

अनुसार भारत में 1000 पुरुषों पर 940 महिलाएँ हैं अर्थात् 110 वर्षों में मात्र 13 महिलाएँ बढ़ पाई है तो यह आँकड़ा ना के बराबर है। इसी प्रकार 1901 में राजस्थान में 1000 पुरुषों पर 905 महिलाएँ और 2011 में राजस्थान में 1000 पुरुषों पर 926 महिलाएँ हैं। इतना घटना लिंगानुपात हमारे देश के लिए चिन्ताजनक है। इस पर निदानात्मक विचार किया जाना चाहिए।

हमारे लिए बड़े शर्म की बात है कि भारत में एक दिन में 4600 कन्या भ्रूण हत्याएँ होती हैं। और एक वर्ष में 19 करोड़ कन्याओं की हत्या भारत में होती हैं तो महिलाएँ कहाँ से आएंगी ? कैसे लिंगानुपात समान हो पाएगा ? इसके लिए दहेज प्रथा को प्राथमिकता से बन्द करना होगा। साथ ही हम सबको एक बेटी की पुकार सुननी होगी कि "माँ-पिताजी मुझे बचाओ, मुझे इस दुनिया में आने दो और नई रचना-रचाने दो" और उसकी पालना भी करनी होगी।

बेटे-बेटी के भेदभाव को मिटाना होगा, बेटी के जन्म को एक उत्सव के रूप में मनाना होगा। बेटी को तन-मन से मान-सम्मान, लालन-पालन, लाड़-प्यार देंगे तो बेटी कहीं भी हमें झुकने नहीं देगी। हमेशा हमारी शान ऊँची रखेगी और रखती आ रही है बशर्ते कि बेटी का संरक्षण पूर्ण रूप से हो। इसीलिए कहा कि बेटा दीपक है तो, बेटी बाती है, बेटा मान है, तो बेटी शान है।

शिक्षण संस्थाओं में बालिका शिक्षा की उत्तम व्यवस्था करके न केवल हम अध्ययनरत बालिकाओं के भविष्य के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं, बल्कि समाज में बालिका के जन्म और जीवन के प्रति भी उपयुक्त वातावरण बना सकते हैं। इस हेतु शिक्षकों को अभिभावकों के साथ मिलकर रणनीति बनानी तथा उनकी सहायता से उसकी क्रियाचिन्ति करनी चाहिए।

—रा.बा.उ.मा.वि. छावनी,
नीम का थाना (सीकर)
मो. 9460867274



दे श एवं समाज के विकास में बालिका शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। जब तक बालिका शिक्षित नहीं होगी तब तक समाज एवं देश के संपूर्ण विकास की परिकल्पना पूरी नहीं हो सकती है। यदि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो समाज के उत्थान के लिए बालिका शिक्षा अति आवश्यक है। बालिका शिक्षा के बिना एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की कल्पना करना भी मुश्किल है। एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज के निर्माण में बालिका शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार होता है।

बालिका शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं—“एक बालक को शिक्षित करने से एक व्यक्ति शिक्षित होता है जबकि एक बालिका को शिक्षित करने से एक परिवार शिक्षित होता है।” यदि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के दिए गए इस विचार की गहराई तक जायें तो यह सी प्रतिशत सत्य है क्योंकि एक बालिका ही आगे चलकर एक सफल माँ और शिक्षिका बनती है और यही सभ्य एवं संस्कृति भरे तैयार कर सकती है। अतः एक योग्य एवं सुशिक्षित महिला ही भविष्य में स्वस्थ एवं शिक्षित समाज की संरचना में भागीदार हो सकती है। किसी भी समाज की उन्नति बालिका शिक्षा के अभाव में संभव नहीं है। समाज के विकास में बालिका शिक्षा का विशेष महत्व है। बालिकाएं अपने माता-पिता एवं शिक्षकों से प्राप्त संस्कारों से दूसरे घर को संस्कारित करती हैं। देश के विकास में बालिका साक्षरता का बहुत बड़ा योगदान है इस बात को नकारा नहीं जा सकता। पिछले कुछ दशकों में बालिका शिक्षा का विकास हुआ है जिसका प्रभाव समाज एवं देश में दिखाई दे रहा है।

बालिका शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा होना समाज के लिये बहुत ही घातक है। आज आवश्यकता है सरकार एवं समाज द्वारा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के साथ ही नये-नये

बालिका दिवस विशेष

समाज निर्माण में अहम है बालिका शिक्षा

□ प्रहलाद शर्मा

प्रयासों द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा दिये जाने की। बालिकाओं के शिक्षित होने से अपने प्रकार की समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा। बालिकाओं के अधिकाधिक शिक्षित होने से न केवल जनसंख्या के विस्तार को कम किया जा सकता है बल्कि गरीबी की समस्या, स्वास्थ्य से संबंधित समस्या, बाल-विवाह एवं दहेज-प्रथा जैसी दानवी कुरीतियों को तथा अन्य विवादों से मुक्ति, कुप्रथाओं एवं कुप्रायों को बालिका शिक्षा द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

यह तो हम सब बली प्राप्ति जानते ही हैं कि यदि बालिकाओं को शिक्षित नहीं किया गया तो सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता। इसी उद्देश्य से केन्द्र एवं राज्य सरकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बालिकाओं का शिक्षण शुल्क माफ कर रही है साथ ही उन्हें पाठ्य-पुस्तकें भी निःशुल्क प्रदान की जा रही हैं। प्रतिभाशाली बालिकाओं को नई प्रौद्योगिकी से जोड़ने हेतु टेबलेट का निःशुल्क वितरण किया जा रहा है। राज्य सरकार ने बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सैपटॉप एवं स्कूटी योजनाओं की शुरुआत की है साथ ही नवीं कक्षा में अध्ययनरत बालिकाओं को आने-जाने के लिए साईकिल का वितरण किया जा रहा है। इसी प्रकार राज्य सरकार द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बालिका फाउण्डेशन की स्थापना की गई है। राज्य सरकार द्वारा इस प्रकार की गतिविधियों में बालिका शिक्षा को तीव्रता के साथ आगे बढ़ाया जा रहा है।

यह बालिका शिक्षा का ही प्रभाव है कि भारतीय नारियां जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। चिकित्सा, मनोविज्ञान, आनुवांशिकी, कानून, सैन्य, खेल, प्रबंधन आदि क्षेत्रों में महिलाएं पुरुषों से पीछे नहीं हैं शिक्षा के द्वारा ही स्त्रियों की सामाजिक चेतना जागृत हो उठी है। वे समाज की दुर्दशा के प्रति सचग एवं सावधान हैं साथ ही समाज सुधार के कार्यक्रमों में व्यस्त हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती सुचेता कृपलानी, श्रीमती बिजयलक्ष्मी पण्डित, साहित्यकार महादेवी वर्मा, मन्

मण्डारी आदि ऐसी नारियां हैं जिन पर भारतवर्ष को सदैव गर्व रहेगा। नारी ने अपने गौरवपूर्ण अतीत को ध्यान में रखकर त्याग समर्पण, सरलता आदि गुणों को नहीं गुलावा है। नारी के चिरकल्याणमय रूप को लक्ष्य कर कवि चयनकर प्रसाद नारी का अत्यन्त सजीव चित्रण करते हैं—

नारी ! तुम केवल अट्टा हो, निरवाद रत्न—
नग-पग-तल में/पीचूब खोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।”

वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि प्रौढ़ शिक्षा द्वारा महिलाओं को अधिक से अधिक शिक्षित किया जाए। साक्षरता अभियान के लिए सरकारी प्रयासों के साथ-साथ जन भागीदारी के द्वारा भी बालिका शिक्षा को महत्व दिया जाए एवं पुस्तकीय ज्ञान का आधार सीमित न होकर सम्पूर्ण ज्ञान से जोड़ा जाए। बालिकाओं के साथ-साथ अशिक्षित महिलाओं को भी शिक्षित किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में जब हम शिक्षा को सबके लिए आवश्यक मानते हैं तो उपेक्षित वर्ग की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

आज आवश्यकता है समाज में बालिका चेतना जागृत करने की, क्योंकि शिक्षित मां ही बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण कर उन्हें शिक्षित करके अच्छा नागरिक बना सकती है। इस प्रकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं एवं राज्य सरकार का महत्वपूर्ण कार्य है।

अन्त में यह कहना अतिस्थोक्ति नहीं होगा कि एक बालक को शिक्षित कर एक परिवार को समृद्ध कर रहे हैं जबकि एक बालिका को शिक्षित कर देश एवं समाज को समृद्ध कर रहे हैं। अतः हमें चाहिए कि सामाजिक सरोकारों के अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्वों को समझते हुए बालिका शिक्षा का पथ प्रशस्त करें। यह व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्रीय एवं वैश्विक दृष्टि से उत्तम होगा। हमें इस उत्तरदायित्व का निर्वहन करना चाहिए।

-5/279, एलएफएल अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
मो. 8829603862

सं स्थागत नियोजन किसी संस्था द्वारा निर्मित कार्यक्रमों का विवरण है। यह उन कार्यक्रमों व क्रियाकलापों का ब्यौरा है जो विद्यालय आगामी शैक्षणिक सत्र में करना चाहती है। सर्वप्रथम मुदालियर शिक्षा आयोग ने विद्यालयों के गुणात्मक विकास हेतु विद्यालय समुन्नयन योजना की सिफारिश की। इसमें प्रत्येक विद्यालय को उपलब्ध साधनों, मानवीय, भौतिक एवं शैक्षिक का परस्पर समन्वय करते हुए उनका पूर्ण नियोजित रूप से उपयोग करने की सलाह दी।

शैक्षिक संस्था या विद्यालय अपने उद्देश्यों की पूर्ति, उन्नति व सफल संचालन के लिए 'योजना' बनाती है, तो वह संस्थागत (विद्यालय) योजना कहलाती है। प्रत्येक विद्यालय में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति करने तथा विद्यालय कार्यक्रमों को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य एवं शिक्षकगण आपस में विचार-विमर्श करके आगामी सत्र में करणीय कार्यों की योजना बनाते हैं। जैसे-समय विभाग चक्र का निर्माण, पाठ्य पुस्तक विश्लेषण एवं पाठ्यक्रम विभाजन, शैक्षणिक सत्र में आगामी सत्र के प्रमुख लक्ष्यों का निर्धारण सह-शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन की रूप रेखा, भौतिक विकास की योजना आदि।

प्रो. एम.बी. बुच (M.B. Bush) के अनुसार- 'संस्थागत नियोजन उन कार्यक्रमों का समुच्चय है जिनको संस्था द्वारा अपनी अनुभूत आवश्यकताओं तथा स्वयं के उपलब्ध एवं भविष्य में उपलब्ध होने वाले संसाधनों के आधार पर तैयार किया जाता है। संस्था इन कार्यक्रमों का निर्धारण विद्यालय के स्तरों तथा व्यवहारों को उन्नत बनाने तथा संस्था के भावी विकास के सन्दर्भ में करती है।

शिक्षा आयोग के शब्दों में- "प्रत्येक शिक्षा संस्था अपने वर्तमान साधनों से ही वे कितने ही सीमित क्यों न हो-अधिक अच्छी योजना बनाकर और अधिक परिश्रम करके अपने शिक्षा स्तर को सुधारने की दिशा में और बहुत कुछ कर सकती है।"

विद्यालय योजना की मुख्य विशेषताएँ-

उद्देश्यों व लक्ष्यों का पूर्व निर्धारण- विद्यालय योजना में उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को सुस्पष्ट रूप में पूर्व निर्धारित किया जाता है। इन

विद्यालय योजना

संस्थागत नियोजन की आवश्यकता

□ मदनलाल मीणा

लक्ष्यों व उद्देश्यों के निर्धारण से पूर्व विद्यालय की आवश्यकताओं, इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं का निर्धारण तथा इनकी पूर्ति के मार्ग में आने वाली समस्याओं व उनके नियन्त्रण व समाधान की युक्तियों पर गहन चिन्तन करना होता है।

साधन सुविधाओं के बारे में पूर्व चिन्तन-विद्यालय योजना में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु मानवीय भौतिक व आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता व भविष्य में प्राप्ति का पूर्वानुमान लगाया जाता है।

विशिष्टता-प्रत्येक संस्था स्वयं में एक पृथक इकाई होती है और उस इकाई की अपनी विशिष्टता होती है। साथ ही उसकी अपनी विशिष्ट समस्याएँ होती हैं। उसके विकास की अपनी एक गति होती है तथा उसके अपने उपलब्ध विशिष्ट संसाधन होते हैं।

अधिकतम उपयोगिता का सिद्धान्त- संस्थागत नियोजन में योजना बनाते समय यह अनुमान लगाया जाता है कि कितने और कैसे संसाधन संस्था में उपलब्ध हैं, समुदाय से व सरकार से किस सीमा तक अतिरिक्त संसाधनों को प्राप्त किया जा सकता है तथा इनका अधिकतम उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है।

मानवीय प्रयासों को बढ़ावा- संस्थागत नियोजन एक ओर तो मानवीय तथा भौतिक संसाधनों के अधिकाधिक मात्रा में उपयोग करने पर बल देता है तो दूसरी ओर वह मानवीय प्रयासों को बढ़ाने पर भी बल देता है वह उनकी कार्यक्षमता, अनुभव, सूझबूझ आदि के बढ़ाने पर बल देता है।

विद्यालयों में संस्थागत नियोजन के उद्देश्य-विद्यालयों में संस्थागत नियोजन (विद्यालय योजना) का प्रमुख उद्देश्य शाला का चहुँमुखी विकास करना होता है। संस्थागत योजना का कार्यक्रम विद्यालय के विकास से सम्बन्धित है। इसका उद्देश्य है सभी संसाधनों का उपयोग विद्यालय के विकासात्मक एवं गुणात्मक कार्यों में करना।

संस्थागत नियोजन निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करता है-

- संस्था का शैक्षिक क्षेत्र में गुणात्मक सुधार करना।
- विद्यालय को पर्याप्त भौतिक एवं मानवीय सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
- शिक्षण की नवीन विधियों को उपयोग कर शिक्षण को प्रभावी बनाना।
- सह-शैक्षिक गतिविधियों का प्रभावी आयोजन करना।
- अध्यापकों की रचनात्मक योग्यता का विकास करने हेतु कार्य करना।
- शिक्षा योजना को वास्तविकता तथा दृढ़ता प्रदान करना।
- विद्यालय की शैक्षिक व अन्य समस्याओं का समाधान खोजना।
- उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग करना उनके मध्य सुजनात्मक समन्वय स्थापित करना एवं नवीन साधनों की खोज करना।

प्रशासनिक एवं वित्तीय दायित्वों के साथ-साथ संस्था प्रधान समस्त शैक्षिक, सह-शैक्षिक, भौतिक एवं सामुदायिक समुन्नयन एवं योजनाबद्ध विकास के लिए उत्तरदायी होता है। अतः इस उत्तरदायित्व को निभाने के लिए विद्यालय में वार्षिक योजना का निर्माण करना आवश्यक है।

विद्यालय योजना के क्षेत्र एवं कार्यक्रम- किसी भी विद्यालय नियोजन के चार प्रमुख पक्ष होते हैं-1. शैक्षिक क्षेत्र 2. सह शैक्षिक क्षेत्र 3. भौतिक क्षेत्र 4. विविध क्षेत्र

1. शैक्षिक क्षेत्र-शैक्षिक सुधार कार्यक्रम हेतु बनाई गई योजना शैक्षिक क्षेत्र से सम्बन्धित कहलाती है। इसके अन्तर्गत विद्यालय में शैक्षिक क्रियाकलापों में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार पर ध्यान दिया जाता है। शैक्षिक क्षेत्र में नियोजन के मुख्य विषय निम्न हैं:-1. अध्यापक दैनन्दिनी संधारण 2. विषय समिति 3. पाठ्यक्रम विभाजन 4. आदर्श पाठ

का आयोजन 5. प्रभावी परीक्षीकरण 6. कक्षा कार्य सुधार 7. गृह कार्य सुधार 8. भित्ती पत्रिका 9. वर्तनी सुधार 10. सामान्य ज्ञान वृद्धि 11. श्रुति लेख आदि 12. निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण 13. शिक्षण सहायक सामग्री का प्रभावी उपयोग

2. सह-शैक्षिक क्षेत्र:- पाठ्य सहाय्यी क्रियाकलापों में सुधार हेतु बनाई गई योजना सह शैक्षिक क्षेत्र के अन्तर्गत आती है। सह-शैक्षिक क्षेत्र में योजना निर्माण के मुख्य विषय निम्नलिखित हैं-1. प्रार्थना सभा का प्रभावी आयोजन 2. पुस्तकालय एवं वाचनालय का प्रभावी उपयोग 3. सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ 4. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा 5. शिक्षण उपकरणों का निर्माण 6. एन.एस.एस.एन.सी.सी., स्काउटिंग, गाइडिंग व पर्वतारोहण 7. सम्पूर्ण साक्षरता 8. शारीरिक एवं योग शिक्षा 9. बुक बैंक 10. खेलकूद की निवमित व्यवस्था 11. मालसभा का आयोजन 12. अध्यापक अभिभावक संघ 13. माल गणवेश का सुधार 14. मध्याह्न-भोजन (Mid Day Meal) की व्यवस्था 15. उत्सव व जयंतिओं का प्रभावी आयोजन।

3. भौतिक क्षेत्र:- विद्यालय भवन का विकास, खेल-मैदानों का सुधार, विद्यालय वाटिका आदि कार्यक्रम भौतिक क्षेत्र में आते हैं। भौतिक क्षेत्र में योजना निर्माण के मुख्य विषय निम्नलिखित हैं-1. विद्यालय भवन का निर्माण 2. चार दीवारी निर्माण 3. प्रसाधन सुविधा 4. वृक्षारोपण 5. खेल मैदान निर्माण 6. शुद्ध पेवबल व्यवस्था 7. विद्यालय भवन की रंगाई-पुताई 8. फर्नीचर निर्माण 9. विद्यालय साव-सब्जा 10. अन्तर्कक्षा स्वच्छता प्रतियोगिता आदि।

4. विविध क्षेत्र-राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रम भी योजना में सम्मिलित किये जायें। अतः प्रभावपूर्ण ढंग से संस्थागत या विद्यालय योजना बनाने के लिए विद्यालय के सभी पहलुओं, पाठशाला भवन, शिक्षण सुविधाओं, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, शैक्षिक कार्यक्रमों, खेलकूद का मैदान आदि को ध्यानमें रखते हुए तैयार की जानी चाहिए। विद्यालय योजना का विस्तार विस्तीर्ण साधनों तथा स्रोतों के अनुरूप हो।

नॉन डिवी के अनुसार-"पाठशाला समाज का लघुरूप माना जाता है। अतः इस दृष्टि से विद्यालय की योजनाओं में समाज की आवश्यकताओं, रीति रिवाजों, मूल्यों, विचारधाराओं तथा मान्यताओं आदि को भी महत्व दिया जाना चाहिए।"

योजना का मूल्यांकन-विद्यालय योजना का अर्द्धवार्षिक व वार्षिक मूल्यांकन निर्धारित प्रारूप में भरकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रस्तुत करना होता है। मूल्यांकन से योजना की क्रियान्विति की दशा व दिशा का ज्ञान होने के साथ ही क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का भी पता चलता है। योजना बनाने के पश्चात इसके अनुरूप क्रियान्वयन के प्रवास सत्र पर्वत किए जाने चाहिए तथा मूल्यांकन भी समय-समय पर किया जाना चाहिए। अतः सभी विद्यालय अपने विद्यालय के चहुँमुखी विकास एवं प्रभावी शिक्षण तथा आदर्श विद्यालय के लिए विद्यालय योजना जरूरी है। एक विस्तृत व प्रभावी विद्यालय योजना विद्यालय की सफलता की गारंटी होती है और इसी में संस्था प्रधान एवं शोध स्टाफ का यश निहित होता है।

-अध्यापक (अग्निवी) रा.उ.प्रा.वि.मेगवालों की छाणी राखेरा
जो. उम्हू, राह. शिव, नाइकेर
मो. 9928173922

हम माह का गीत

जंग न होने देंगे

□ अटल बिहारी वाजपेयी



एक सामान्य श्रेष्ठक के घर में जंगल
लेकर देश के प्रधानमंत्री के पक्ष पर
पहुँचे श्री अटल बिहारी वाजपेयी
जगतश्रेष्ठ बतन के लोकप्रिय नेता
होने के साथ ही उद्भट लेखक एवं
कवि हैं। आपकी भाषण कला का कोई
बराबरी नहीं है। आपकी पुस्तकें
अटलजी के जन्म दिन 25 दिसम्बर
2013 के शुभ अवसर पर उन्हें
लगाई के साथ प्रस्तुत है उसका
प्रसिद्ध गीत 'जंग न होने देंगे।'

-सविश्व सम्पादक

हम जंग न होने देंगे !

विश्व शान्ति के हम साथक हैं, जंग न होने देंगे।

कभी न हथैलों में फिर खूबी खाद फलेगी,

खसिफलों में नहीं नील की फसल खिलेगी,

आसमाज फिर कभी न अंगारे जगलेगी,

एटन से नागासाकी फिर नहीं जलेगी,

युद्धविहीन विश्व का सपना भंग न होवे देंगे।

जंग न होने देंगे।

हथियारों के ढेरों पर जिज्ञासा है देश,

मौड़ में शान्ति, बगल में बम, श्रोत्रों का फेरा,

कफर बेचने वालों से कद दो पिल्लाकर,

दुनिया जाय गई है उसका असली चेहरा,

कानधाव हो उनकी चालें, ठग न होने देंगे।

जंग न होने देंगे।

हमें चाहिए शान्ति, जिन्दगी इनको प्यारी,

हमें चाहिए शान्ति, सुनज की है तैयारी,

हमने चेड़ी जंग भूख से, बीमारी से,

आगे आकर हाथ बटाए दुनिया सारी।

हरी-भरी खरी की खूबी रंग न खेले देंगे।

जंग न होने देंगे।

भारत-पाकिस्तान पड़ोसी, साथ-साथ रहना है,

प्यार करें या वार करें, दोनों को ही सहना है,

रीत बार लड़ चुके लड़ाई, कितना नहींगा सीता,

रूसी बम हो या अमेरिकी, खूब एक बढ़ना है।

जो हम पर गुजरी बर्छों के संग न होने देंगे।

जंग न होने देंगे।

ग त वर्ष गांव में सैकण्डरी से हायर सैकण्डरी क्रमोन्नत हो गई। कक्षा 11 में कला वर्ग का चयन हुआ। कुल बीस छात्र-छात्रा विद्यालय में भर्ती हुए। दस बारह छात्रएं आस-पास के गांव से पढ़ने आने लगे। अधिकतर छात्र कृषि वर्ग से थे। छात्रों में अध्ययन के प्रति रुचि थी। वर्ष भर अध्ययन में रुचि लेकर सभी विद्यालय की शैक्षिक के साथ सह शैक्षिक गतिविधियों में भाग ले रहे थे, इस वर्ष भर्ती हुए छात्रों से परिचय बढ़ने लगा। नंदकिशोर अध्ययन में पूरी लगन एवं निष्ठा से कक्षा में अव्वल रहा। जुलाई में विद्यालय खुले, मैंने पाया नंदकिशोर का रंग एवं चेहरा काला एवं आभाहीन दिखाई दिया। मैंने जानकर भी इस संबंध में कोई बात नहीं की। दीपावली के अवकाश के दिन नजदीक आ रहे थे। सभी लोग दीपावली की पूर्व तैयारियों में लगे थे। छात्रों को दीपावली की छुट्टियों में सभी विषयों में गृहकार्य दिया गया। बीस में से पन्द्रह छात्रों ने गृहकार्य किया, कुछ बिना गृहकार्य किए दीपावली बाद विद्यालय में आये।

नंदकिशोर का चेहरा उतरा-उतरा हुआ बुझा-बुझा था। मैंने नंदकिशोर को कहा-क्या बात है ? तुम तो पढ़ने में अव्वल हो, फिर चेहरा उदास क्यों ? गृहकार्य क्यों नहीं किया ?” नंदकिशोर नीचे मुंह करके खड़ा रहा। मैंने उसे बैठने के लिए कहा, वो अपनी जगह बैठ गया, किंतु कुछ कहना चाहता था ऐसा मुझे लगा। मैंने उसे पूछा “नंदकिशोर अपने गुरु जी से कोई बात नहीं छुपानी नहीं चाहिए।” नंदकिशोर सहमा-सहमा अपनी बात बताने लगा - “सर दीपावली के अवकाश में मैं गृहकार्य करता तो सर मैं बोर्ड की फीस और वर्षभर पढ़ाई की फीस नहीं भर पाता। मेरे माता-पिता निर्धन हैं, थोड़ी खेती है लेकिन वर्षा नहीं आने से हालात अच्छे नहीं, वो पढ़ाई छुड़वाना चाहते थे लेकिन मैंने वादा किया कि पढ़ाई खर्च आपसे नहीं लूंगा, आप मुझे कक्षा 12वीं पढ़ने की छूट दें। पिताजी मान गये, अब मुझे दीपावली के अवकाश में घर-घर पुताई का काम कर घर का एवं मेरे बोर्ड फीस, अध्ययन का खर्च जुटाना था, अतः मैंने दीपावली के अवकाश में पुताई की। सर अब मेरे पास आवश्यकता के जितने रुपये हैं।”

मैं तो इतनी गहराई तक जा भी नहीं सकता था। आज मुझे ज्ञात हुआ नंदकिशोर का चेहरा काले चेहरे में पढ़ाई का उजास प्रकट होता

जीवन सुरभि

अंधिरे को गर करें रोशन

□ राजेन्द्र प्रसाद जोशी

“जीवन सुरभि” कृतम्भ के अंतर्गत प्रस्तुत अनुभव सदीवर्ती रचनाएं आमंत्रित है। अनुभव आधारित सुन्दर रचना भिजवाते के लिए हम श्री राजेन्द्र प्रसाद जोशी के प्रति आभारी हैं।
-दविष्ट संपादक

दिखाई दिया। मैंने नंदकिशोर को कहा-“पढ़ाई की आवश्यक वस्तुओं के लिए वह मुझे सम्पर्क करे।” नंदकिशोर ने कहा-“सर मैं ही नहीं गांव के बहुत से लड़के अवकाश के दिनों में शहरों में काम धंधा करके पढ़ाई का खर्चा निकालते हैं। गर्मी की छुट्टियों में अहमदाबाद, बैंगलूर, महाराष्ट्र में आइसक्रीम की लारियां चलाते हैं।”

मैं सोचने लगा शहरों में अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के लिए माता-पिता पानी की तरह पैसा बहाते हैं, उनकी सब सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हैं और गांव के सरकारी स्कूलों के छात्रों की दशा भी आज मैंने अनुभव की। गांवों के सरकारी स्कूल के छात्र-छात्राओं की परिस्थितियों से अवगत हुए बिना हम प्राइवेट अथवा अंग्रेजी स्कूलों के छात्रों से तुलना करते हैं, कहां तक न्याय संगत है ? गांवों में त्यौहार, शादी-विवाह, कृषि कार्य आने पर विद्यालय में छात्र इन दिनों पढ़ाई से ज्यादा इन कार्यों को महत्व देते हैं। बहुत बार इन कारणों से पढ़ाई छोड़नी भी पड़े तो छोड़ देते हैं। अतः छात्रों की परिस्थितियों एवं परिवेश के आधार पर स्कूलों की तुलना होनी चाहिए।

गांवों के अनेक छात्र अवकाश में शादी में केटर्स का काम करते हुए भी मैंने देखा। छात्र केटर्स की वेशभूषा में सर नमस्ते करते हुए मिलते हैं। मैं आमतौर पर छात्रों के हालचाल पूछ लेता हूं। तभी नंदकिशोर दिखाई देता है सर नमस्ते! हां भाई नमस्ते, क्या हालचाल है, पढ़ाई कैसी चल रही है ? नंदकिशोर ने कहा-बी.ए. (फाइनल) की परीक्षा दी है, सर अभी छुट्टियों में आगे की पढ़ाई की जुगाड़ करनी है। सर आपके भी विवाह-शादी हो या दीपावली पर पुताई का काम हो तो मुझे याद जरूर करना।

इस वर्ष दीपावली बाद मेरी पुत्री की शादी की तैयारियां चल रही थी। न जाने नंदकिशोर को कैसे मालूम हुआ कि सर के घर

बेटी की शादी है। वह पता मालूम करता हुआ घर पर आया और कहने लगा “सर पुताई का काम मैं ही करूंगा।-मैंने पूरे घर की पुताई का कार्य यह सोचकर नंदकिशोर को दिया कि उसे कुछ मदद मिल जायेगी। वह लगन एवं मेहनत से घर के एक-एक कोने को चमकाने लगा। मैंने सोचा इसे अधिक से अधिक मेहनताना दूंगा। जब पुताई का कार्य पूरा हुआ तो मैंने हिसाब बताने के लिए कहा तो कहने लगा- “सर शादी पर मेरे तरफ की भेंट समझ लें। सर मैं ज्यादा तो कुछ नहीं कर सकता, मेरी यह तुच्छ भेंट है।” मैं मना नहीं कर पाया किन्तु सोचा कि अवसर आने पर मैं इसका हिसाब कर दूंगा।

नंदकिशोर का बी.एड में चयन हुआ। वह बी.एड फीस बीस हजार रुपये की व्यवस्था कैसे करे ? मैंने नंदकिशोर को कहा-“चिन्ता की कोई बात नहीं मैं तुम्हारी फीस भरूंगा।” नंदकिशोर आभार प्रकट करते हुए चला गया। एक दिन मेरे पास आया और डिब्बा खोलकर बोला-“सर मिठाई।” मैंने कहा-“किस बात की ?” उसने कहा-“मेरी सरकारी नौकरी लग गई, पास ही के प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक पद पर नियुक्ति हुई।”

आज नन्दकिशोर राजकीय विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य कर रहा है। उसने कहा-“मैं भी आप ही की तरह जरूरतमंद छात्रों के लिए अध्ययन एवं आवश्यकता पर ध्यान देकर आपकी शिक्षा और ज्ञान को फैला रहा हूं।” आज मुझे नन्दकिशोर से गुरु-दक्षिणा मिल गई, मैं धन्य हो गया। हम शिक्षकों चाहिए कि अपने कक्षागत शिक्षण के दौरान छात्र-छात्राओं के साथ मधुर व्यवहार करें। हमारे किसी भी कार्य से उनके मन पर कुठाराघात न हो, यह ध्यान रखने की बात है। यदि हम ऐसा करेंगे तो निश्चय ही अपने कर्तव्य का पालन कर रहे होंगे।

-व्याख्याता (हिन्दी)

रा.उ.मा.वि. सुवाणा, भीलवाड़ा

मो. 9166576766

आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2014

1. विभाग में पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सन्दर्भ में दिशा-निर्देश।
2. पेंशन प्रकरणों के निस्तारण में त्वरित कार्यवाही-सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों सूचीकरण
3. विभाग द्वारा आयोजित 27वीं राज्य स्तरीय शिक्षक क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2013-14
4. हितकारी निधि के अन्तर्गत विभाग में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण।
5. कक्षा 6, 7 एवं 8 में प्रचलित संस्कृत पुस्तक 'रूचिरा' की निरन्तरता के सम्बन्ध में।
6. शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिताओं (2019-14) की तिथियाँ संशोधित हुई।
7. वर्ष 2014 के लिए सार्वजनिक/ऐच्छिक अवकाश घोषित

1. विभाग में पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सन्दर्भ में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/पेंशन-स/34981/2012/ दिनांक 03.01.2013 ● परिपत्र ● विषय : विभाग में पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सन्दर्भ में दिशा-निर्देश। ● राजस्थान पेंशन नियम 1996 के प्रावधानों के अनुसार इस कार्यालय के आदेश क्रमांक शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/09/120 दिनांक 15.10.12 की निरन्तरता में निम्नांकित दिशा निर्देश पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण हेतु पुनः प्रसारित किए जाते हैं:

1. राजस्थान सेवा नियम (पेंशन) 1996 के परिशिष्ट-8 के अनुसार समस्त नियुक्ति अधिकारी अपने अधीनस्थ कार्यरत कार्मिकों के सेवानिवृत्ति आदेश सेवा निवृत्ति तिथि से एक वर्ष पूर्व प्रपत्र-6 में जारी करें। सेवानिवृत्ति आदेश में विभागीय जांच विचाराधीन है अथवा नहीं प्रमाण पत्र अवश्य अंकित किया जावे।
2. राजस्थान सेवा (पेंशन) नियम 1996 के परिशिष्ट 8 में अवकाश प्रमाण पत्र जारी करने के लिए कार्यालयाध्यक्ष अधिकृत है। अतः निदेशालय एवं अधिनस्थ कार्यालयों द्वारा समेकित अर्देय प्रमाण पत्र जारी करने की प्रक्रिया को बन्द किया जावे।
3. समस्त नियुक्ति अधिकारी सेवानिवृत्ति आदेश (एक वर्ष पूर्व) जारी करने से दो, माह पूर्व प्रक्रिया प्रारंभ करते हुए विभागीय जांच/लेखाडी-4(चोरी, गबन) इत्यादि की लम्बित जांच के संबंध में रिपोर्ट प्राप्त कर सेवा निवृत्ति आदेश निर्धारित प्रपत्र-6 में प्रसारित करें।
4. निदेशक, पेंशन विभाग, जयपुर द्वारा जारी पेंशन प्रकरण चैक स्लिप जो इस कार्यालय के प्रसंगाधीन पत्र दिनांक 24.3.11 एवं 15.10.12 द्वारा सभी उप निदेशक/जिला शिक्षा अधिकारियों को प्रेषित की गयी थी, अनुसार प्रत्येक पेंशन प्रकरण की जांच की जावे ताकि प्रकरण में आक्षेप की संभावना नहीं रहे।

5. पेंशन विभाग से पेंशन प्रकरण आक्षेपों सहित प्राप्त होने पर आक्षेपों की पूर्ति हेतु संस्था प्रधान एवं संबंधित लिपिक को जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय बुलाकर आक्षेपों की पूर्ति हाथों हाथ करवाते हुए पेंशन प्रकरण पुनः पेंशन विभाग में भिजवाने की व्यवस्था की जावे, ताकि पेंशन प्रकरण का शीघ्र निस्तारण हो सके।
6. राजस्थान सिविल सेवा पेंशन नियम 96 के परिशिष्ट-8 में प्रदत्त अनुदेशों की पालना प्रत्येक कार्यालयाध्यक्ष स्तर पर सुनिश्चित की जावे। ● निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

2. पेंशन प्रकरणों के निस्तारण में त्वरित कार्यवाही-सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों सूचीकरण

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/पेंशन-स/34983/2012/ दिनांक 03.01.2013 ● समस्त उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक प्रथम/द्वितीय ● विषय : पेंशन प्रकरणों के निस्तारण में त्वरित कार्यवाही बाबत। ● प्रसंग : इस कार्यालय का समसंख्यक परिपत्र दिनांक 27.8.13

उपर्युक्त विषय एवं प्रासंगिक परिपत्र द्वारा कार्मिक के सेवानिवृत्ति से 24 से 30 माह पूर्व पेंशन प्रकरण समयबद्ध निस्तारण की तैयारी, एक वर्ष पूर्व सेवानिवृत्ति आदेश जारी करने एवं सेवानिवृत्ति से छः माह पूर्व पेंशन प्रकरण तैयार कर पेंशन विभाग में स्वीकृति हेतु भिजवाने के राजस्थान सिविल सेवा पेंशन नियम 1996 का सन्दर्भ सहित निर्देश दिये गये थे, किन्तु पेंशन प्रकरण निस्तारण की समीक्षा के दौरान पाया कि विभाग में काफी पेंशन प्रकरण बकाया चल रहे हैं। प्रासंगिक परिपत्र की प्रति पुनः संलग्न कर निर्देश दिये जाते हैं कि दिनांक 31.03.2015 तक सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों की सूची निम्न प्रपत्र में दिनांक 15.12.13 तक भिजवाने का श्रम करें:

प्रपत्र-ए : दिनांक 31.3.15 तक सेवानिवृत्त होने वाले जिशिअ एवं उच्चतर अधिकारियों की सूची :

क्र. सं.	नाम अधिकारी, पद, पदस्थापन	जन्मतिथि	सेवानिवृत्ति तिथि	विभागीय जांच बकाया है तो विवरण		
				आरोप किस नियम में है	आरोप पत्र जारी करने वाले अधिकारी का पदनाम	आरोप का विवरण संक्षेप में

प्रपत्र-बी : दिनांक 31.3.15 तक सेवानिवृत्त होने वाले व्याख्याताओं/समकक्ष की विषयवार सूची :

क्र. सं.	नाम व्याख्याता/समकक्ष पदस्थापन	जन्मतिथि	सेवानिवृत्ति तिथि	विभागीय जांच बकाया है तो विवरण		
				आरोप किस नियम में है	आरोप पत्र जारी करने वाले अधिकारी का पदनाम	आरोप का विवरण संक्षेप में

प्रपत्र-सी : दिनांक 31.3.15 तक सेवानिवृत्त होने वाले प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्यों एवं समकक्ष अधिकारियों की सूची :

क्र. सं.	नाम अधिकारी, पद, पदस्थापन	जन्मतिथि	सेवानिवृत्ति तिथि	विभागीय जांच बकाया है तो विवरण		
				आरोप किस नियम में है	आरोप पत्र जारी करने वाले अधिकारी का पदनाम	आरोप का विवरण संक्षेप में

प्रपत्र-डी : दिनांक 31.3.15 तक सेवानिवृत्त होने वाले वरिष्ठ अध्यापकों/समकक्ष की सूची :

क्र. सं.	नाम वअ, पदस्थापन	जन्मतिथि	सेवानिवृत्ति तिथि	विभागीय जांच बकाया है तो विवरण		
				आरोप किस नियम में है	आरोप पत्र जारी करने वाले अधिकारी का पदनाम	आरोप का विवरण संक्षेप में

प्रपत्र-ई : दिनांक 31.3.15 तक सेवानिवृत्त होने वाले अध्यापकों/समकक्ष की सूची :

क्र. सं.	नाम अधिकारी, पद, पदस्थापन	जन्मतिथि	सेवानिवृत्ति तिथि	विभागीय जांच बकाया है तो विवरण		
				आरोप किस नियम में है	आरोप पत्र जारी करने वाले अधिकारी का पदनाम	आरोप का विवरण संक्षेप में

प्रपत्र-एफ : दिनांक 31.3.15 तक सेवानिवृत्त होने वाले मंत्रालयिक एवं च.श्रे.क. की सूची :

क्र. सं.	नाम कर्मचारी, पद, पदस्थापन	जन्मतिथि	सेवानिवृत्ति तिथि	विभागीय जांच बकाया है तो विवरण		
				आरोप किस नियम में है	आरोप पत्र जारी करने वाले अधिकारी का पदनाम	आरोप का विवरण संक्षेप में

प्रासंगिक परिपत्र के निर्देशों के अनुरूप सेवानिवृत्ति से एक वर्ष पूर्व सेवानिवृत्ति आदेश मय विभागीय जांच बकाया/बकया नहीं, के आवश्यक रूप से प्रत्येक माह जारी किया जाना सुनिश्चित करें। माननीय राज्य मानव अधिकार आयोग जयपुर से दिनांक 20.11.13 को बैठक में हुए निर्णयानुसार प्रत्येक कार्यालय में पेंशन हेतु प्रभारी नियुक्त कर उसकी सूचना निम्न प्रपत्र में देवें :

क्र. सं.	नाम प्रभारी अधिकारी/ कर्मचारी	पद	सम्पर्क सूत्र	
			मोबाईल नम्बर	लैण्डलाइन
				कार्यालय निवास

निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान,
बीकानेर

3. विभाग द्वारा आयोजित 27वीं राज्य स्तरीय शिक्षक क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2013-14

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश: ● विभाग द्वारा आयोजित 27वीं राज्य स्तरीय शिक्षक क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2013-14 विभिन्न स्तरों पर निर्देशानुसार निम्नलिखित तिथियों में आयोजित की जावेगी :-

1. समस्त जिलों में तहसील स्तर पर चयन - 10-11 जनवरी, 2014
2. जिला स्तर पर प्रतियोगिता एवं दल गठन - 15-16 जनवरी, 2014
3. राज्य स्तरीय प्रतियोगिता - 20-22 जनवरी, 2014

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के सफलता पूर्वक आयोजनार्थ विभिन्न व्यवस्थाओं/आवासीय सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएँ तीन वर्गों में रखी गई है :

क्र. सं.	वर्ग	विवरण	आयोज्य स्थल	परिक्षेत्र
1.	पुरुष वर्ग	बॉस्केट बॉल, बैड मिटन, टेबल-टेनिस, शतरंज, ऐथेलेटिक्स-100मी., 200मी., 400मी., 4 गुणा 100मी., रिले, दौड़, लम्बी कूद, उंचीकूद, गोला फेंक-16 पौंड	द अंकुर प्राईमरी स्कूल, हाथी नाड़ा काकरौली (राजसमंद)	उदयपुर
2.	पुरुष वर्ग	फुटबॉल, बॉलीबाल, कबड्डी, सांस्कृतिक कार्यक्रम-सुगम संगीत, सामूहिक गान, एकाभिनय, विचित्र वेशभूषा	रा.उ.प्रा.वि., रजतगृह, बूंदी	कोटा
3.	महिला वर्ग	बॉलीबॉल, बैडमिंटन, टेबल-टेनिस, सांस्कृतिक कार्यक्रम-सुगम संगीत, सामूहिक गान, समूह नृत्य, एकल नृत्य, ऐथेलेटिक्स-100मी. 200मी. 4 गुणा 100मी. रिले दौड़ गोला फेंक 12 पौंड	सर के एम. उच्च प्राथमिक विद्यालय सिरौही	जोधपुर

प्रतियोगिता हेतु सामान्य निर्देश :

1. विभाग द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में समस्त राजकीय शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षा सेवा और राजस्थान शिक्षा सेवा व राजस्थान अधीनस्थ सेवा में वर्णित पदों पर कार्यरत शिक्षक सम्मिलित होंगे।
2. निर्देशानुसार वर्ष 1993-94 से पंचायत राज विभाग के अधीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को भी इस प्रतियोगिता में सभी स्तरों पर शामिल होने के लिए आदेश क्रमांक शिविरा/शाशि/व/शि.प्रति/33740/93-94/24 दिनांक 25-8-96 द्वारा पात्र माना गया है। अतः पंचायत समितियों के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक भी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकेंगे।
3. पुरुष/महिला वर्ग के तहसील एवं जिला स्तरीय चयन व दल गठन

- का दायित्व जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा का होगा।
- महिला वर्ग के लिए नियमानुसार तहसील स्तर पर चयन न होकर जिला स्तर पर ही चयन एवं दलों का गठन किया जाकर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में टीमों भेजने का दायित्व भी जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा का होगा।
 - इस प्रतियोगिता में एन.आई.एस. प्रशिक्षण (खेल विशेष) में एक वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षक उस खेल विशेष में भाग नहीं ले सकेंगे/सकेगी। जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा के अधीनस्थ सेवारत शिक्षा गत वर्षों की भांति उक्त प्रतियोगिता में भाग ले सकेंगे।
 - राज्य स्तरीय शिक्षक प्रतियोगिता के सफलता पूर्व संचालन का दायित्व पुरुष वर्ग का उप निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, उदयपुर एवं कोटा तथा महिला वर्ग का दायित्व उप निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, जोधपुर सौंपा गया है। शिक्षक प्रतियोगिता के लिए निर्मित नियमावली एवं मार्गदर्शिका के अनुसार सम्पूर्ण व्यवस्थाएँ करते हुए सूचना समस्त संभागी दलों एवं अधिकारियों को भेजेंगे।
 - प्रतियोगिता के संचालन मंत्री का दायित्व संबंधित संस्था प्रधानों का है, अतः खेल मैदानों, उपकरणों आवासीय व्यवस्था, निर्णायकों आदि की समुचित व्यवस्था करेंगे तथा संभागी दलों, जिला शिक्षा अधिकारियों एवं संबंधित कार्यालयाध्यक्षों को सूचित करेंगे। खिलाड़ियों के चयनार्थ आयोजित की जाने वाली प्रथम स्तर की प्रतियोगिता के लिए यात्रा व्यय नहीं दिया जायेगा।
- इस संबंध में तत्काल आवश्यक कार्यवाही करते हुए की गई कार्यवाही से इस कार्यालय को अवगत करवायेंगे। ● निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

क्रमांक : शिविरा/प्रारं/खेकू/स्वाशि/8013/शिक्षक प्रति./
2013-14 दिनांक 3-12-2013

4. हितकारी निधि के अन्तर्गत विभाग में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ●
क्रमांक: शिविरा/हिनि/28129/2013-14 दिनांक 1.12.2013 ●
समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) ● विषय :
हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण : अन्तिम तिथि : 31 जनवरी 2014

हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा/प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के अन्तर्गत शिक्षा विभाग में राजकीय सेवा में कार्यरत समस्त वर्ग के शिक्षा अधिकारियों/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा/अध्यापकों/मंत्रालयिक/सहायक कर्मचारियों) के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनार्थ वित्तीय सहायता दिए जाने बाबत संलग्न प्रारूप-पत्र में प्रार्थना पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। प्रार्थी द्वारा प्रार्थना-पत्र भरते समय एवं संबंधित अधिकारी द्वारा प्रेषित करते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर अग्रेषित किए जावें:-

- यह योजना राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत समस्त वर्ग के कार्मिकों के बच्चों के लिए ही लागू होगी।
- व्यावसायिक शिक्षा : इंजीनियरिंग, मेडिसन एवं मैनेजमेन्ट, बी.एड., एस.टी.सी. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत को ही वित्तीय सहायता देय होगी। निर्धारित पाठ्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार है:-
(अ) इंजीनियरिंग में स्नातक पाठ्यक्रम (चार वर्ष)-(आठ सेमेस्टर) : डिस्सिपलीन ऑफ सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रोनिक्स, एवं टेली-कम्यूनीकेशन, कम्प्यूटर साइन्स एण्ड इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल, आर्केटेक्चर, टैक्सटाईल, मार्निंग, रबर टेक्नोलोजी, केमिकल इंजीनियरिंग, इन्स्ट्रुमेन्टेशन एण्ड कंट्रोल, प्रिन्टिंग, केमिकल टेक्नोलोजी, मेटलर्जीकल इंजीनियरिंग, एरोनोटिकल इंजीनियरिंग, प्रोडक्शन टेक्नोलोजी, शिप बिल्डिंग एण्ड फेब्रिकेशन टेक्नोलोजी, नेवल आर्किटेक्चर, पैट्रोलियम इंजीनियरिंग।
(ब) मेडिकल (एलोपैथी), होम्योपैथी, आयुर्वेदिक फार्मस् ऑफ मेडिसिन्स एवं पशु आयुर्विज्ञान।
(स) उपर्युक्त पैरा (अ, आ) में उल्लेखित डिग्री (4 वर्ष), डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि तीन वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।
(द) डिप्लोमा पाठ्यक्रम, बी-फार्मा की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।
(य) स्नातक पाठ्यक्रम के पश्चात् मैनेजमेन्ट पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।
(र) बी.एड. पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष तथा एस.टी.सी. पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष की मान्य है।
- प्रार्थना-पत्र की सभी प्रविष्टियां स्वयं कर्मचारी/संस्था प्रधान द्वारा भरी जानी चाहिए।
- भुगतान किया गया वास्तविक शुल्क प्रार्थना-पत्र के कॉलम संख्या 11 में स्पष्ट रूप से अंकित करें। प्रार्थना-पत्र के साथ शुल्क की मूल रसीदें संलग्न करें। फोटोस्टेट प्रतियां स्वीकार्य नहीं होगी। सम्पूर्ण भुगतान की रसीद यदि प्रस्तुत की जाती है तो उसका मदवार विवरण प्रस्तुत करने पर ही प्रार्थना-पत्र विचारणीय होगा।
- सत्र 2013-14 में छात्र जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य का प्रमाण-पत्र संलग्न प्रारूप में संलग्न करें।
- सहायता राशि मात्र ट्यूशन, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला (लेबोरेटरी) शुल्क के भुगतान पर ही देय है। अतः अन्य मदों पर किए गए भुगतान एवं एक मुश्त में दर्शायी गई राशि पर सहायता देय नहीं होगी।
- सहायता राशि एवं शैक्षणिक सत्र तक ही सीमित है। राज्य कर्मचारी के बच्चों को वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र छात्र के शैक्षणिक सत्र 2013-14 में अध्ययनरत के लिए ही स्वीकार्य होंगे।
- व्यावसायिक शिक्षा में सहायता हेतु परिवार के एक ही बच्चे के लिए प्रार्थना-पत्र स्वीकार्य होगा।
- यह सहायता राशि वर्ष 2013-14 के लिए ही मान्य होगी। जिन्होंने इस सत्र में प्रवेश लिया हो उन्हें ही सहायता दी जावेगी।

10. प्रार्थना-पत्रों के आधार पर पात्रता की जांचोपरान्त, स्वीकृत राशि की अग्रिम स्टाम्प भिजवाने एवं हितकारी निधि कोष में राशि उपलब्ध होने पर सहायता देय होगी। प्रार्थना-पत्र प्रेषित कर दिए जाने से यह तात्पर्य नहीं है कि आपको सहायता मिल जावेगी। अतः अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं किया जावे।
11. राज्य कर्मचारी, हितकारी निधि का नियमित अंशदाता होना चाहिए। यदि अंशदान जमा करवाया हुआ है तो भेजे जाने वाले अंशदान का डी.डी. नम्बर, दिनांक व राशि का उल्लेख सहित विवरण प्रस्तुत किया जावे।
12. यदि आप हितकारी निधि के सदस्य नहीं हैं तो आज ही नियुक्ति तिथि से अंशदान एक मुश्त जमा करवाकर सदस्य बनकर अंशदान राशि का बैंक ड्राफ्ट अध्यक्ष, हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर के नाम से भिजवायें।
13. सहायता राशि-एक वर्ष से दो वर्ष तक की अवधि के पाठ्यक्रम हेतु रुपये 1500/- तीन वर्ष तक की अवधि के पाठ्यक्रम हेतु रुपये 2000/- एवं तीन वर्ष से अधिक की अवधि के पाठ्यक्रम हेतु रुपये 2500/- निर्धारित है। यह सहायता राशि पाठ्यक्रम की अवधि हेतु केवल एक बार ही देय होगी।
14. अपूर्ण प्रार्थना-पत्र, शुल्क की मूल रसीदें नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। अतः ऐसी स्थिति में एवं निरस्त हुए प्रार्थना-पत्रों के बारे में कोई सूचना भी नहीं दी जावेगी। प्रार्थना-पत्र 100 से अधिक स्वीकार्य नहीं होने के कारण किसी भी प्रार्थना-पत्र को निरस्त करने का अधिकार निम्न हस्ताक्षरकर्ता के पास सुरक्षित रहेगा।
कृपया उक्त विषयक सूचना अपने अधीनस्थ विद्यालयों/कार्यालयों में प्रसारित एवं प्रचारित करावें ताकि अधिकाधिक कर्मचारीगण इसका लाभ उठा सके। अतः निर्देशित किया जाता है कि अधीनस्थ संस्था प्रधानों को पाबन्द करावे कि प्रार्थना पत्र सीधे नहीं भेजे, प्रार्थना पत्रों को अपनी अनुशंसा सहित दिनांक 31 जनवरी 2014 के पद नाम से भिजवाने की व्यवस्था करें। तत्पश्चात् प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

संलग्न: निर्धारित प्रार्थना-पत्र ● उपनिदेशक (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि से राज्य कर्मचारियों, राजपत्रित शिक्षा अधिकारी/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/शिक्षक/मंत्रालयिक/सहायक कर्मचारी एवं समस्त वर्ग के राज्य कर्मचारियों (मा.प्रा.) के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र

1. कर्मचारी का नाम.....जन्मतिथि.....आयु.....
2. पद एवं पदस्थापन स्थान.....
3. कर्मचारी की नियुक्ति तिथि.....
4. कर्मचारी का स्थायी पता.....
टेलीफोन नं./मोबाइल नं.
5. अध्ययनरत छात्र/छात्रा का नाम.....
जन्मतिथि.....आयु.....

6. छात्र/छात्रा से संबंध.....
7. छात्र/छात्रा के व्यावसायिक शिक्षा का नाम (✓करें) मेडिकल/इंजीनियरिंग/मैनेजमेन्ट/बी.एड./एस.टी.सी.
8. पाठ्यक्रम की अवधि.....
9. महाविद्यालय/विद्यालय में प्रवेश तिथि (प्रथम वर्ष).....
10. महाविद्यालय/विद्यालय का नाम एवं पता जहां छात्र/छात्रा अध्ययनरत है
(✓करें) (संस्था राजकीय/अराजकीय/निजी/मान्यता प्राप्त)
11. व्यावसायिक विषय के लिए भुगतान की गई राशि की मूल रसीदें संलग्न करें:- कुल रसीद सं. राशि
12. संस्था से कोई छात्रवृत्ति ली जा रही है अथवा नहीं यदि हां तो कितनी.....
13. राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान से यदि कोई सहायता राशि मिली है अथवा नहीं यदि हां तो कितनी.....
14. छात्र/छात्रा जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है उस संस्था से प्राप्त प्रमाण पत्र संलग्न है : (हां/नहीं)
15. हितकारी निधि पंजीयन संख्या (वर्षवार कटौती विवरण) संलग्न पृष्ठ.....
16. बकाया अंशदान भिजवाने का ड्राफ्ट सं. व दिनांक
मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं में कोई असत्यता पाई जाती है तो हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा वह मुझे स्वीकार्य होगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर (पद एवं कार्यरत स्थान)

संस्था प्रधान द्वारा दिया जाने वाला प्रमाण-पत्र जहां कर्मचारी कार्यरत है

(संस्था प्रधान अराजपत्रित होने पर आहरण वितरण अधिकारी से अग्रेषित करवाया जाना आवश्यक है)

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती.....

पद एवं पदस्थापन स्थान.....

जो मेरे अधीन कार्यरत है। इनके पुत्र/पुत्री.....

जो (महाविद्यालय/विद्यालय) का नाम.....

में अध्ययनरत है एवं मेडिकल/इंजीनियरिंग/मैनेजमेन्ट/बीएड/एस.टी.सी.

सत्र..... में प्रवेश लिया है को सहायता हेतु इनका प्रार्थना-पत्र

अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को

अनुशंसा सहित अग्रेषित किया जाता है।

जिला शिक्षा अधिकारी मय सील संस्था प्रधान के हस्ताक्षर मय सील

अध्ययनरत महाविद्यालय/विद्यालय का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/सुश्री.....

पुत्र/पुत्री/श्रीमती.....

जो (महाविद्यालय का नाम).....

में अध्ययनरत है। इनके पुत्र/पुत्री इस महाविद्यालय का नियमित

छात्र/छात्रा है।

महाविद्यालय/विद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्रा विषयक विवरण निम्नानुसार है-

पाठ्यक्रम का नाम	पाठ्यक्रम की अवधि (समेस्टर सहित)	प्रवेश तिथि	वर्तमान में किस वर्ष में अध्ययनरत हैं	उत्तीर्ण/ अनुत्तीर्ण	विशेष विवरण

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर मय मोहर

अग्रिम रसीद : व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत निम्नानुसार राशि प्राप्ति की गयी।

नाम कर्मचारी एवं पदस्थापन स्थान	राशि	बैंक ड्राफ्ट संख्या एवं दिनांक

हस्ताक्षर (मोहर)

हस्ताक्षर मय रेवेन्यू स्टाम्प

5. कक्षा 6, 7 एवं 8 में प्रचलित संस्कृत पुस्तक 'रुचिरा' की निरन्तरता के सम्बन्ध में।

● राजस्थान सरकार, स्कूल शिक्षा विभाग, प्रारम्भिक शिक्षा (आयोजना) अनुभाग ● क्रमांक : प.15(2)प्राशि/आयो/2011 जयपुर, दिनांक : 19-11-13 ● कार्यालय आदेश

राज्य में वर्तमान में चल रही तृतीय भाषा संस्कृत कक्षा-6, 7 एवं 8 की पाठ्यपुस्तकों 'रुचिरा' भाग प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय की पुनर्समीक्षा हेतु एस.आई.ई.आर.टी. उदयपुर के संयोजकत्व में गठित उच्च स्तरीय विषय विशेषज्ञ समिति द्वारा एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार उपयुक्त पाये जाने पर उक्त पाठ्यपुस्तकों को कक्षा 6, 7 एवं 8 में शिक्षण के लिए निरन्तर रखे जाने की स्वीकृति एतद्वारा प्रदान की जाती है। ● राज्यपाल महोदया की आज्ञा से, (आर.सी. डेनवाल) संयुक्त शासन सचिव

6. शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिताओं (2019-14) की तिथियाँ संशोधित हुई।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा/स/22419/2013-14 दिनांक 21.11.2013 ● कार्यालय आदेश

निर्देशानुसार शिविरा पंचांग 2013-14 में निम्नांकित संशोधन तत्काल प्रभाव से किये जाते हैं:-

क्र. सं.	गतिविधियों का नाम	वर्तमान में आयोजित तिथि	प्रस्तावित संशोधित तिथि
1.	शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु तहसील स्तर का चयन	22-23 नवम्बर 2013	10-11 जनवरी 2014
2.	शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन	28-29 नवम्बर 2013	15-16 जनवरी 2014
3.	राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता	27-29 दिसम्बर 2013	20-22 जनवरी 2014

उप निदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

7. वर्ष 2014 के लिए सार्वजनिक/ऐच्छिक अवकाश घोषित

● राजस्थान सरकार सामान्य प्रशासन (ग्रुप-6) विभाग ● क्रमांक:

प. 6(2)साप्र/6/2013 जयपुर, दिनांक 10.12.2013 ● विज्ञप्ति ● कलैण्डर वर्ष 2014 (ग्रेगोरियन) ई. शक संवत् 1935-36 के दौरान निम्नलिखित दिनों को राज्य सरकार सम्पूर्ण राज्य में सार्वजनिक अवकाश/ऐच्छिक अवकाश घोषित करती है:-

सार्वजनिक अवकाश

क्र.सं.	अवकाश का नाम	राष्ट्रीय कलैण्डर	ग्रेगोरियन दिनांक	दिन का नाम
1.	गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती	17 पौष, 1935	07.01.2014	मंगलवार
2.	बारावफात (ईद-ए-मिलाद)(चाँद से)	24 पौष, 1935	14.01.2014	मंगलवार
3.	गणतन्त्र दिवस	6 माघ, 1935	26.01.2014	रविवार
4.	महाशिवरात्रि	08 फाल्गुन, 1935	27.02.2014	गुरुवार
5.	होलिका दहन	25 फाल्गुन, 1935	16.03.2014	रविवार
6.	धूलण्डी	26 फाल्गुन, 1935	17.03.2014	सोमवार
7.	चेटीचण्ड	11 चैत्र, 1936	01.04.2014	मंगलवार
8.	रामनवमी	18 चैत्र, 1936	08.04.2014	मंगलवार
9.	महावीर जयन्ती	23 चैत्र, 1936	13.04.2014	रविवार
10.	डॉ. अम्बेडकर जयन्ती	24 चैत्र, 1936	14.04.2014	सोमवार
11.	गुड फ्राइडे	28 चैत्र, 1936	18.04.2014	शुक्रवार
12.	प्रताप जयन्ती	10 ज्येष्ठ, 1936	31.05.2014	शनिवार
13.	ईदुलफितर (चाँद से)	7 श्रावण, 1936	29.07.2014	मंगलवार
14.	रक्षाबंधन	19 श्रावण, 1936	10.08.2014	रविवार
15.	स्वतंत्रता दिवस	24 श्रावण, 1936	15.08.2014	शुक्रवार
16.	जन्माष्टमी	27 श्रावण, 1936	18.08.2014	सोमवार
17.	रामदेव जयन्ती व तेजा दशमी	13 भाद्रपद, 1936	04.09.2014	गुरुवार
18.	नवरात्रा स्थापना	03 आश्विन, 1936	25.09.2014	गुरुवार
19.	महात्मा गांधी जयन्ती	10 आश्विन, 1936	02.10.2014	गुरुवार
20.	दुर्गाष्टमी	10 आश्विन, 1936	02.10.2014	गुरुवार
21.	विजयदशमी	11 आश्विन, 1936	03.10.2014	शुक्रवार
22.	ईदुलजुहा (चाँद से)	14 आश्विन, 1936	06.10.2014	सोमवार
23.	दीपावली	01 कार्तिक, 1936	23.10.2014	गुरुवार
24.	गोवर्धन पूजा	02 कार्तिक, 1936	24.10.2014	शुक्रवार
25.	भैया दूज	03 कार्तिक, 1936	25.10.2014	शनिवार
26.	मोहर्रम (ताजिया) (चाँद से)	13 कार्तिक, 1936	04.11.2014	मंगलवार
27.	गुरुनानक जयन्ती	15 कार्तिक, 1936	06.11.2014	गुरुवार
28.	क्रिसमस दिवस	04 पौष, 1936	25.12.2014	गुरुवार
29.	गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती	07 पौष, 1936	28.12.2014	रविवार

ऐच्छिक अवकाश

क्र.सं.	अवकाश का नाम	राष्ट्रीय कलैण्डर	ग्रेगोरियन दिनांक	दिन का नाम
1.	किश्चियन नव वर्ष दिवस	11 पौष, 1935	01.01.2014	बुधवार
2.	देवनारायण जयन्ती	17 माघ, 1935	06.02.2014	गुरुवार
3.	विश्वकर्मा जयन्ती	23 माघ, 1935	12.02.2014	बुधवार
4.	स्वामी रामचरण जयन्ती	24 माघ, 1935	13.02.2014	गुरुवार
5.	गुरु रविदास जयन्ती	25 माघ, 1935	14.02.2014	शुक्रवार
6.	गाडगे महाराज जयन्ती	29 माघ, 1935	18.02.2014	मंगलवार
7.	महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती	05 फाल्गुन, 1935	24.02.2014	सोमवार
8.	बैशाखी	24 चैत्र, 1936	14.04.2014	सोमवार

9. सैन जयन्ती	06 वैशाख, 1936	26.04.2014	शनिवार
10. परशुराम जयन्ती	11 वैशाख, 1936	01.05.2014	गुरुवार
11. बुद्ध पूर्णिमा	24 वैशाख, 1936	14.05.2014	बुधवार
12. शब-ए-बारात	24 ज्येष्ठ, 1936	14.06.2014	शनिवार
13. गुरु पूर्णिमा	21 आषाढ, 1936	12.07.2014	शनिवार
14. जुमातुलविदा	03 श्रावण, 1936	25.07.2014	शुक्रवार
15. थदडी	26 श्रावण, 1936	17.08.2014	रविवार
16. गणेश चतुर्थी	07 भाद्रपद, 1936	29.08.2014	शुक्रवार
17. संवत्सरी	08 भाद्रपद, 1936	30.08.2014	शनिवार
18. अनन्त चतुर्दशी	17 भाद्रपद, 1936	08.09.2014	सोमवार
19. महानवमी	11 आश्विन, 1936	03.10.2014	शुक्रवार
20. करवा चौथ	19 आश्विन, 1936	11.10.2014	शनिवार
21. पार्श्वनाथ जन्ती	26 अग्राहरण, 1936	17.12.2014	बुधवार

नोट:-

1. वर्ष में समस्त शनिवार व रविवार का सामान्य सार्वजनिक अवकाश रहेगा।

- निगोशिएबल इन्स्ट्रूमेंट एक्ट 1881 की धाराओं के अन्तर्गत बैंक कर्मचारियों के लिए सार्वजनिक अवकाश वित्त (मार्गोपाय) विभाग द्वारा पृथक से प्रकाशित किया जाता है।
- स्थानीय मेला/त्यौहार आदि के उपलक्ष में प्रत्येक जिले में संबंधित जिला कलेक्टर एवं दिल्ली स्थित राजकीय कार्यालयों में प्रमुख निवासीय/निवासीय आयुक्त कार्यालय, नई दिल्ली दो स्थानीय अवकाश घोषित करेंगे। यदि बाद में इन तिथियों के दिन राज्य सरकार के द्वारा कोई राजपत्रित अवकाश घोषित किया जाता है तो भी यह अपरिवर्तनीय रहेगा। स्थानीय अवकाश घोषित कर, आदेश की प्रति संबंधित जिला कलेक्टर इन विभाग को तुरन्त भिजवायेंगे।
- कोटा जिले में जन्माष्टमी के बाद आने वाला दिन स्वतः जन्माष्टमी के स्थान पर अवकाश के रूप में माना जावेगा।
- ऐच्छिक अवकाश की सूची में से कोई भी दो अवकाश प्रत्येक कर्मचारी को चुनकर उपभोग करने की अनुज्ञा प्रदान की जावेगी।
- मुस्लिम अवकाश चन्द्रमा दिखाई देने पर निर्भर करेंगे।
- यह आदेश केवल राजकीय कार्यालयों पर लागू होंगे।

(राकेश श्रीवास्तव) अति. मुख्य सचिव

माह : जनवरी, 2014		विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम			प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक	
दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठक्रमांक	पाठ का नाम
1.1.2014	बुधवार	उदयपुर	10	परीक्षामाला		सामाजिक विज्ञान
2.1.2014	गुरुवार	बीकानेर	10	परीक्षामाला		गणित
3.1.2014	शुक्रवार	जयपुर	12	परीक्षामाला		अनिवार्य हिन्दी
4.1.2014	शनिवार	जोधपुर	10	परीक्षामाला		अंग्रेजी
6.1.2014	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		हमारे आदर्श गुरु गोविन्द सिंह
8.1.2014	बुधवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला		अनिवार्य अंग्रेजी
9.1.2014	गुरुवार	जयपुर	12	परीक्षामाला		कम्प्यूटर विज्ञान
10.1.2014	शुक्रवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला		अर्थशास्त्र
12.1.2014	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		युवाओं के आदर्श स्वामी विवेकानन्द
13.1.2014	सोमवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		हमारे पर्व और त्यौहार
15.1.2014	बुधवार	जयपुर	12	परीक्षामाला		जीव विज्ञान
16.1.2014	गुरुवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला		गणित
17.1.2014	शुक्रवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला		अंग्रेजी साहित्य
18.1.2014	शनिवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप
20.1.2014	सोमवार	जयपुर	12	परीक्षामाला		चित्रकला
21.1.2014	मंगलवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला		गृहविज्ञान
22.1.2014	बुधवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला		रसायन विज्ञान
23.1.2014	गुरुवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस
24.1.2014	शुक्रवार	जयपुर	12	परीक्षामाला		समाजशास्त्र
25.1.2014	शनिवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		हमारा गणतंत्र
27.1.2014	सोमवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला		उर्दू साहित्य
28.1.2014	मंगलवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला		भौतिक विज्ञान
29.1.2014	बुधवार	जयपुर	12	परीक्षामाला		राजस्थान अध्ययन
30.1.2014	गुरुवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		शहीद दिवस
31.1.2014	शुक्रवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला		व्यवसाय अध्ययन

शिविर पंचांग

जनवरी, 2014					
दि	5	12	19	26	
रव	6	13	20	27	
सोम	7	14	21	28	
मंग	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

● कार्य दिवस 25, रविवार 04, अक्षरकाश 02, उत्सव 05 ● 4 जनवरी-मीना मंच के अंतर्गत द्वितीय ग्रीष्मकाल बैठक। 7 जनवरी-गुरु गोविंद सिंह जयंती (अक्षरकाश-उत्सव) 8-9 जनवरी-बालिका शिक्षा के अंतर्गत जिला स्तरीय अध्यापिका मंच समारोह। 11 जनवरी-बालिका शिक्षा (नवाचारी) प्रारम्भिक शिक्षा के अंतर्गत "मीना मंच में दादी नानी दिवस" का आयोजन। 12 जनवरी-स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस उत्सव), केरियर डे का आयोजन (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय) 14 जनवरी-बाराव फाट (अक्षरकाश चन्द्रशेखरानुसार), मकर संक्रांति (उत्सव) 14-31 जनवरी-वीरचन्द्र संरक्षण पक्षवाड़े का आयोजन। 18 जनवरी-बालिका शिक्षा (नवाचारी) प्रारम्भिक शिक्षा के अंतर्गत "मीना संवर्धन समिति की द्वितीय बैठक। 19 जनवरी-महाराणा प्रताप पुष्प शिबि, अभिषेक एवं शिबि की संयुक्त बैठक आयोजित कर अर्द्धवार्षिक परीक्षा परिणाम के प्राप्ति पत्रों का वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार-विमर्श। 20-22 जनवरी-विद्यार्थियों की द्वितीय स्वास्थ्य जांच एवं अभिलेख संधारण। 23 जनवरी-सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव) 24 जनवरी-बालिका शिक्षा (नवाचारी) के अंतर्गत बालिका दिवस (मीना दिवस) राज्य स्तरीय मीना सम्मेलन। 26 जनवरी-गणतंत्र दिवस (अक्षरकाश-उत्सव अनिवार्य) 30 जनवरी-शहीद दिवस (प्रा. 11.00 बजे दो मिनट का मौन), संस्था प्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर परीक्षा परिणाम उद्घाटन की कार्य योजना बनाना।



शाला प्रांगण से

मतदाता जागरूकता रैली का आयोजन
डग (झालावाड़)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ डग (झालावाड़) द्वारा बिल्डर स्तरीय स्काउट गाइड रैली का आयोजन किया गया इस रैली में स्थानीय संघ-डग के 180 स्काउट गाइड ने भाग लिया। मतदाता जागरूकता रैली में राजकीय माध्यमिक विद्यालय चाकुनी (डग) के बच्चों ने भाग लिया डग से झालावाड़ रैली को खाना कैल्शननाथ योगी व कुष्ण गेहर ने किया।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित

गोरा का खेड़ा (भीरवाड़ा)। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, गोरा का खेड़ा (बनेड़ा) विद्यालय परिसर में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों में सुचनात्मक एवं चिन्तन शक्ति के विकास हेतु आयोजित इस प्रतियोगिता में चार वर्ग कक्षा 9 व 10 में जीकराज जाट प्रथम, मिश्रीलाल गुर्जर द्वितीय हसीना बानू तृतीय स्थान पर रही। कनिष्ठ वर्ग में अल्ताफ खां प्रथम, बबलू कुमार द्वितीय, मोहन लाल रामका, ममता वैष्णव तृतीय स्थान पर रहे। विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया।

मतदाता जागरूकता अभियान

खाण्डी (पाली)। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, खाण्डी (पाली) के प्रधानाध्यापक गजेन्द्र सिंह राठी ने विद्यालय में निर्वाचन विभाग के निर्देशों के अनुरूप विद्यालय प्रांगण में एक आदर्श मतदान बूथ बनाकर बाल सभा अध्यापक बुना, बालकों को मतदान प्रक्रिया का जीवन अनुभव करवाया गया। लगभग 200 विद्यार्थियों से मतदान प्रेरक संकल्प पत्र भरवाया। निष्ठा निर्वाचन प्रक्रिया समझा कर बालकों को देश के निम्नोद्धार नागरिक बनने हेतु प्रेरित किया गया।

मतदाता हेतु निकासी रैली

नरसाणा (बाकौर)। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, नरसाणा में संस्था प्रधान रणजीतसिंह राठी तथा सपरंच नरसाणा शांति गर्ग ने मतदाता जागरूकता रैली को हरी झण्डी दिखाकर खाना किया। रैली नरसाणा के विभिन्न मोहल्लों से निकाली गई। संस्था प्रधान रणजीत

सिंह ने मतदाता का महत्व बताते हुए कहा कि लोकतंत्र में सभी मतदाताओं को सक्रिय भूमिका निभाते हुए शत प्रतिशत मतदान करना चाहिए। शत प्रतिशत मतदान के लिए ग्रामीण जनों से भी संकल्प पत्र भरवाये गए। गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति से विद्यार्थियों में नए उत्साह का संचार रहा।

बाल दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताएं

खादां (श्रीगंगानगर)। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, खादां में बाल दिवस का आयोजन उत्साह पूर्वक किया गया। छात्र छात्राओं ने बाल खेलों यथा चलेबी दौड़, रस्सी दौड़, एक टांग दौड़, सौ मीटर दौड़, मेड़क दौड़, चम्पच दौड़, लम्बी कूद, ऊंची कूद, रोप स्कीपिंग आदि खेलों में भाग लिया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को शाला प्रबन्ध समिति द्वारा पुरस्कृत कर मिठाई वितरण किया गया। संस्था प्रधान बलविन्द सिंह बराड़ ने विद्यार्थियों को चाचा नेहरू से प्रेरणा लेते हुए उनके सिद्धान्तों को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया।

विश्व एकता दिवस पर आयोजन

कारोई (भीरवाड़ा)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कारोई में विश्व एकता दिवस का आयोजन दो दिसम्बर, 2013 को किया गया। एक दिसम्बर मतदान दिवस व रविवार होने के कारण कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यापकों ने रोग फैलने के कारणों तथा नचाव के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। विद्यार्थियों द्वारा कारोई ग्राम का भ्रमण कर एक दिवस के बारे में जन जागृति हेतु नारे लगाकर रैली से ग्राम भ्रमण किया।

बाल दिवस समारोह

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, चीमूं (जयपुर) में बाल दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी लगाई गई। साथ ही बाल अधिकारों एवं शैक्षिक व व्यावसायिक अवसरों के बारे में बालिकाओं को जानकारी प्रदान की। संस्था प्रधानाचार्य श्रीमती साधना गर्ग ने बालिकाओं को परीक्षा की उत्तम तैयारी कर श्रेष्ठ अंकों से उत्तीर्ण होने की कामना की तथा बाल मेले में बालिकाओं द्वारा प्रदर्शित वस्तुओं का अवलोकन कर उनकी सराहना की।

□

मैं ने एक सपना देखा है। वह सपना है सबके मन में शान्ति, हाथ में काम और चेहरे में रोशी। जहाँ हम सबकी आत्माएं शरीर और मस्तिष्क को समझ सकें और एक-दूसरे की जरूरतों को पूरा कर सकें। ऐसी दुनिया बनाने के लिए अभी हमें भीलों चलना बाकी है। हमें अभी चलना है, चलते रहना है।
—नेल्सन मंडेला

उपर्युक्त आदर्श स्थिति के स्वप्नदृष्टा नेल्सन मंडेला नहीं रहे। दक्षिण अफ्रीका के गाँधी कहलाने वाले नोबल पुरस्कार विजेता नेल्सन मंडेला ने 95 वर्ष की अवस्था में 06 दिसम्बर 2013 को जोहान्सबर्ग में अन्तिम सांस ली। नेल्सन मंडेला नाम किसी व्यक्ति का न होकर उस वैश्विक आवाज का नाम है जिसने रंगभेद के खिलाफ आवाज बुलन्द की और अपने मानवीय मकसद को हासिल करने के लिए बेसुमार अत्याचार सहन किए और विश्व में शान्ति, समानता और भाईचारे के विकास के लिए अदभुत सूत्र प्रदान किए। स्वतन्त्रता का ख्याम देखने वाले तथा शोषण के विरुद्ध संघर्षरत लोगों के लिए नेल्सन मंडेला सदैव प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे। उनका जीवन उस मोमबत्ती जैसा फूलमाला के सपान है जो पीड़ितों एवं पीड़ितों की पीड़ा हरण करने की दिशा में काम करने वालों के पथ को आलोकित व सुवासित करता रहेगा।

दक्षिण अफ्रीका से दरअसल महात्मा गाँधी के सार्वजनिक जीवन की शुरुआत हुई थी। सविनय अवज्ञा एवं अहिंसा के मार्ग का प्रथम प्रयोग यही किया था महात्मा जी ने। उसी शुरुआत को उसी राह पर आगे-आगे बढ़ाया नेल्सन मंडेला ने। स्वेत और अस्वेत के मध्य इतनी बड़ी विभाजक रेखा खिंची हुई थी कि कोई अन्दाज नहीं लगा सकता था कि यहाँ कभी अस्वेतों को सरकार निर्माण में सहभागिता मिलेगी। ऐसे में अस्वेत नेल्सन मंडेला का राष्ट्रपति बनना किसी अचम्बे से कम नहीं कहा जा सकता। मगर इस न होने लगने वाले काम को होकर दिखाया लोहपुरुष नेल्सन मंडेला ने। उन्हें गुग फुरुष व शताब्दी पुरुष कहा जाना अतिस्मोक्तिपूर्ण कथन नहीं होगा।

लगभग 25 वर्ष की युवावस्था में सन् 1944 में उन्होंने नेशनल कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की और स्वयं को रंगभेद के खिलाफ कंग

ब्रह्मजंलि : नेल्सन मंडेला

चला गया एक और गाँधी

□ गोपाल सिंह कच्छावाह



“मैंने एक सपना देखा है। वह सपना है सबके मन में शान्ति, हाथ में काम और चेहरे में रोशी। जहाँ हम सबकी आत्माएं शरीर और मस्तिष्क को समझ सकें और एक-दूसरे की जरूरतों को पूरा कर सकें। ऐसी दुनिया बनाने के लिए अभी हमें भीलों चलना बाकी है। हमें अभी चलना है, चलते रहना है।”

—नेल्सन मंडेला

में झोंक दिया। उन पर कई आरोप लगाए गए। राष्ट्रद्रोह के संगीन आरोप में उन्हें जेल में डाल दिया गया। जेल में 27 वर्ष बिताकर सन् 1990 में वे बाहर आए। तत्कालीन सरकार के द्वारा अस्वेत दलों पर लगा प्रतिबन्ध हटा लिया और सभी राजनीतिक बंदियों को मुक्त कर दिया। सन् 1994 में रंगभेद रहित हुए चुनाव में नेशनल अफ्रीकन कांग्रेस ने लगभग दो तिहाई (62 फीसदी) मत प्राप्त कर सरकार बनाई जिसके मुखिया नेल्सन मंडेला बने। वे 1994 से 1999 तक राष्ट्रप्रमुख-राष्ट्रपति रहे। उन्होंने जून 2004 में राजनीति से सन्यास ले लिया। उनके शासन काल में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद रहित समाज की संरचना एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना की दिशा में उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न हुए।

उन्हें दुनियाभर के लोगों से बेबाह प्यार व सम्मान मिला। कई देशों ने उन्हें अपने देश की मानद नागरिकता प्रदान करते हुए अपने-अपने देश के सर्वोच्च सम्मान अर्पित किए इसमें भारत द्वारा भारत रत्न (1990) दिया जाना उल्लेख

योग्य है। राष्ट्रपति से इतर उनका सामाजिक जीवन बड़ा वन्दनीय है। देखा जाए तो यह 27 वर्ष की उनकी जेल यात्रा सामाजिक एकता स्थापित करने की दिशा में एक साधना ही थी जिसके बल पर वर्णभेद रहित दक्षिण अफ्रीका बन सका। वर्ष 1999 में राष्ट्रपति पद से निवृत्त होने के पश्चात् वे भिन्न-भिन्न सामाजिक एवं मानवाधिकार संगठनों के लिए सक्रिय हो गए। उनके द्वारा नेल्सन मंडेला, नेशनल मंडेला बाल फण्ड, मंडेला रोडेश फण्डेशन आदि की स्थापना में अपूर्ण सहयोग प्रदान किया। वे एड्स से रोकथाम के प्रबल पक्षधर थे। उनके द्वारा लिखी पुस्तकों में निम्न उल्लेखनीय हैं:-

1. No easy walk to Freedom
2. Long walk to Freedom
3. Nelson Mandela: - The Struggle is my life

नेल्सन मंडेला के जीवन पर एक फ़िल्म (1997) भी बन चुकी है जिसका नाम है-मंडेला एण्ड बी क्लाक। इतना ही नहीं फ़िल्म माल्कोम (1992) भी उनके जीवन से प्रभावित रही है।

नेल्सन मंडेला अब हमारे बीच नहीं है लेकिन उनका जीवन एक खुली किताब की तरह हमारे लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन का बीचमंत्र बनकर सामने खड़ा है। रंगभेद जैसे गैर मानवीय और भी काम हो सकते हैं, उन्हें निर्मल करने के लिए अहिंसक संघर्ष करना हर इंसार का फर्ज है। सत्य, न्याय, ईमानदारी, अपरिग्रह, दया, करुणा, विनम्रता, समता, समानता, समन्वय जैसे उदात्त मानवीय गुणों का पाठ हमें नेल्सन मंडेला से सीखना चाहिए। वे सही अर्थ के गाँधी थे। उनकी मृत्यु से दुनिया ने एक और गाँधी खो दिया है। उन्हें ब्रह्मजंलि देने के लिए हमें उनके द्वारा बताई राह पर चलने का संकल्प लेना चाहिए जिसमें संसार का भला निहित है। नेल्सन मंडेला एक मिशन के रूप में आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करता रहेगा।

—प्रबंध निदेशक,
पब्लिक मानेसरी सीनियर सेकण्डरी स्कूल,
पीपल राइज-342601 (जोधपुर)
मो. 9829898232

जीवन विज्ञान

सफलता की सीढ़ी : आत्मविश्वास

□ गायत्री शर्मा

आत्मविश्वास दो शब्दों से मिलकर बना है- आत्म + विश्वास अर्थात् स्वयं में विश्वास। स्वयं की क्षमताओं, योग्यताओं को भली-भांति पहचानना और उसके अनुकूल अपने कार्यों को करना ही आत्मविश्वास कहलाता है, आत्मविश्वास हमारे एक सच्चे हितैषी एवं मित्र के समान है जो आपातकाल में हमारी निःस्वार्थ मदद करता है। वह समय आने पर उचित मार्गदर्शन देता है। आत्मविश्वास हमारी मां के समान है जो हमें जमीन पर मजबूती से कदम रखना सिखाता है और लड़खड़ाते पर अपने आंचल में स्थान देता है।

आत्मविश्वास का अर्थ सकारात्मक दृष्टिकोण एवं सकारात्मक सोच से है। जब कोई व्यक्ति अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेता है तो उसकी प्राप्ति के लिए उसमें आत्मविश्वास संचारित होने लगता है तथा कुछ करने की चाहत व्यक्ति में उत्साह एवं आत्मविश्वास भरती है। उत्कृष्ट आत्मविश्वास तो साहस एवं निर्भीकता से परिपूर्ण होता है जो वैभव एवं विजय का उत्तरदायी होता है। यह भारतीय क्रिकेटर युवराज सिंह का आत्मविश्वास ही था कि कैसर जैसी भयंकर बीमारी से ग्रसित होने के बाद भी उससे उभरकर भारतीय टीम में खेल रहे हैं। ठीक इसी प्रकार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को अपने आप पर विश्वास था कि मैं अहिंसात्मक तरीके से भारत को स्वतंत्र करवा सकता हूँ और उन्होंने ऐसा किया भी।

याद कीजिए शिवाजी के शौर्य एवं पराक्रम को जो उनमें कूट-कूट कर भरा था। अकेले दम पर उन्होंने अपना साम्राज्य स्थापित किया। उनके आत्मविश्वास के पीछे उनकी मां जीजाबाई ने प्रेरणा दी। बचपन में ही वह शिवाजी को वीरों की कहानियाँ सुनाया करती थीं और वैसा ही बनने की प्रेरणा देती थीं। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सूरदास अन्धे थे, लेकिन उनकी रचनाएं साहित्य में अद्वितीय हैं। मुख्य रूप से अंधे होते हुए भी श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का जो सजीव वर्णन उन्होंने किया है वो शायद नेत्रों



से युक्त कवि भी नहीं कर सकता था। पदमावत के कवि मलिक मोहम्मद जायसी की भी एक आंख खराब थी, लेकिन उनके आत्मविश्वास के कारण ही उनकी काव्य प्रतिभा का लोहा सभी ने माना। इसे कहते हैं आत्मविश्वास।

इसी प्रकार महान वैज्ञानिक आइंस्टीन, डार्विन, मेंडल, रमन, जे.सी.बोस इत्यादि का आत्मविश्वास ही था कि वह अपने लक्ष्यों को उत्कृष्टता तक पहुँचा पाये। महान स्वतंत्रता सेनानी सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, लाला लाजपत राय एवं बालगंगाधर तिलक का आत्मविश्वास ही था कि अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को खोखला कर भारत को स्वतंत्र करवाया। ऐसे लोग अपने आप से कहते रहते हैं, वर्षा हो या धूप, सर्दी हो या गर्मी अपनी मंजिल की तरफ तब तक बढ़ते रहते हैं जब तक कि अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर लेते हैं, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास का होना आवश्यक है।

विद्यार्थी अपना लक्ष्य निर्धारित करता है और परिश्रम करना प्रारंभ कर देता है और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये उसमें आत्मविश्वास संचारित होने लगता है और वह मैरिट प्राप्त करता है। एक कुशल एवं साधारण व्यक्ति उंचाईयों तक पहुँचने के लिए कई प्रकार की सुख सुविधाओं को छोड़कर परिश्रम करने लगता है। चमत्कारों एवं महान आविष्कारों के पीछे भी

महान साधना, कठिन परिश्रम एवं कठोर तपस्या की कहानी होती है। खरगोश एवं कछुए की कहानी में खरगोश को अहंकार था जबकि कछुए को आत्मविश्वास था तभी तो वह विजयी हुआ। पाणिनी का आत्मविश्वास एवं दृढ़ निश्चय ही था कि पण्डित द्वारा भाग्य में विद्या नहीं होने की बात को गलत सिद्ध करते हुए व्याकरणाचार्य बन गये और उन्हें आज विश्व में संस्कृत के महान व्याकरणाचार्य के नाम से जाना जाता है।

सच्चाई यह है कि अनेक व्यक्ति स्वयंमेव ही अपने में उत्पन्न साहस एवं आत्मविश्वास विकसित कर सच्चा एवं आदर्शवादी इंसान एवं प्रेरणा के स्रोत बन जाते हैं। वे समाज को नई दिशा एवं संदेश दे जाते हैं। आत्मविश्वासी व्यक्ति परिस्थितियों का दास नहीं होता है वह किसी भी स्थिति में कार्य करने को तत्पर रहता है तथा ईश्वर भी ऐसे व्यक्तियों की हमेशा मदद करता है। जो व्यक्ति अपने उद्देश्य के प्रति गंभीर होता है उसमें एक उन्मादी लगन होती है, एक जुनून होता है उसमें गजब का आत्मविश्वास होता है। वह अपनी धुन का पक्का होता है। उसे अपने कार्य के अतिरिक्त अन्य कोई बात नहीं सूझती। वह अपने आत्मविश्वास से कह उठता है-

इस जीवन का उद्देश्य नहीं है,

शांत भवन में टिके रहना।

किन्तु पहुँचना उस सीमा तक

जिसके आगे राह नहीं।।

विद्यालय में शिक्षण के दौरान अध्यापकों का यह कर्तव्य बनता है कि वह बालक-बालिकाओं में आत्मविश्वास के बीज अंकुरित करें। यह आत्मविश्वास ही है जिसके बल पर व्यक्ति जीवन में रणक्षेत्र में आने वाली बाधाओं से मुकाबला कर सकता है, अपने जीवन को सफल व सुख में बना सकता है। अतः हमें अपने इस कर्तव्य का पालन तत्परता के साथ करना चाहिए।

(लेखिका राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त हैं)

5/279, एस.एफ.एस., अग्रवाल फार्म,

मानसरोवर, जयपुर-302020

मो. 8829075513

जीवन विज्ञान

विनम्रता व्यक्तित्व का शृंगार है

□ अमय कुमार जैन

- विनम्र व्यक्ति ही इस धरती पर सुख से शासन कर सकेगा।

—इमर्सन

- जीवन का तीन चौथाई आधार मनुष्य का चाल चलन है इसमें नम्रता बड़ा श्रेष्ठ गुण है। इसका प्रभाव दूसरों पर तत्काल पड़ता है।

—बैष्णु आर्नस्ट

- जो नम्र होकर झुकते हैं वही ऊँचे उठते हैं।

—बाइबिल

“सरलता एवं नम्रता (निराभिमानिता) जीवन के श्रेष्ठ आधार हैं। यह व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी उत्तम माध्यम है।”

ऐसा कहा जाता है कि यदि मानव जीवन में विनम्रता यानी कि नम्रता का गुण विद्यमान है तो उसका वह जीवन तो क्या आने वाला जीवन भी धन्य हो जाता है।

इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम भवानीमंड़ी नगर के डॉ. अरोड़ा का उल्लेख करना चाहता हूँ आज से लगभग तीन साढ़े तीन दशक पूर्व उन्होंने भवानीमंड़ी में साधारण चिकित्सक से अपना जीवन शुरू किया था वह इस नगर के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सकों में गिने जाते हैं। इन सबके पीछे उनका मधुर व्यवहार, मीठी वाणी व नम्रता से भरा व्यवहार तथा कभी भी चेहरे पर कोई आवेश, गुस्सा नहीं ऐसा आभास होता है कि क्रोध (गुस्सा) तो उनसे कोसों दूर है, उनके इस नम्रता, मधुर व्यवहार ने ‘अरब पति’ बना दिया है। लक्ष्मीपति होने के साथ-साथ नगर भी कई संस्थाओं का प्रधान बना दिया है।

आपने हमने सभी ने यह अनुभव महसूस किया होगा कि जो अध्यापक, दुकानदार, अधिकारी, प्रबन्धक, मालिक मधुर व्यवहार व नम्रता से प्रस्तुत आते हैं तो उनके विद्यार्थी, ग्राहक, स्टाफ व मकदूर प्रसन्न रहते हैं तथा वह अपने-अपने क्षेत्र में प्रगति, विकास, उन्नति करते हुए शिखर पर पहुँच जाते हैं।

एक कवि ने विनम्रता का महत्व बताया



हुए कहा है कि नम्रता में इतना दम है कि यदि चाहे तो पुरस्कार के रूप में हाथी तक पाया जा सकता है या वाणी में मिठास न हो तो उसी हाथी के नीचे सवा स्वरूप आ सकते हैं। कवि ने कहा है “जातन हाथी पाइये जातन हाथी पांव” अतः उग्रता वा क्रोध से हमेशा दूरि ही होती है और अंत में सामान्य होने पर पड़तावा होता है।

विनम्रता एक ऐसा व्यापक एवं उपयोगी सूत्र है जिससे सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। महान दर्शनिक कन्फ्यूशियस ने तो यहां तक कहा है कि मानव मात्र से बिताने भी सरल गुण है वा फिर मनुष्यता के जो भी तत्व है उन सबको ठोस आधार (नींव) एक मात्र विनम्रता में ही विद्यमान है। ऐसा नहीं कि आप हमेशा अपने से बड़ों के सामने ही विनम्र बने और अपने आपको श्रेष्ठ कहलाने का प्रयास करें आप में तो ऐसा गुण होना चाहिए कि अपनी से बड़ों के साथ छोटी से तथा बड़ों के साथ से विनम्रता से प्रस्तुत आना चाहिए। इस सम्बन्ध में थामस मूर नामक प्रसिद्ध अंग्रेज नीतिज्ञ द्वारा बड़े प्रभावी ढंग से कहा गया है कि बड़ों के सम्मुख विनम्र होना हमारा कर्तव्य (धर्म) है। छोटों के प्रति विनम्र होना हमारी पहलुता (महानता) तथा समवयस्क के सम्मुख विनम्र होना शिष्टाचार की श्रेणी में आता है। और सब के प्रति विनम्र होना हमारी सुरक्षा का कवच माना गया है।

नम्रता मानवता का शृंगार है इसके बिना मनुष्य अपनी पहचान खो बैठता है। विनम्रता न

केवल आपके व्यक्तित्व में निखार लाती है अपितु उसे नवा आवाम भी प्रदान करती है। बल्कि कई बार आपकी सफलता का प्रमुख कारण भी बन जाती है। असंभव कार्य भी आपकी विनम्रता के सहारे आसानी से कर सकते हैं। अतः इसे अपनाइये।

पोप ने अपनी ‘टबुल टाक’ में कहा है “किसी कार्य को कृपालुतापूर्वक करना कहना ही विनम्रता है। विनम्रता की यही पहचान है कि व्यक्ति स्वयं शान्ति का अनुभव करे और अपने व्यवहार से दूसरों को शान्ति प्रदान करे।

महात्मा कबीर ने कहा है—“ऐसी वाणी बोलिये मनका आपा खोय, ओरन को शीतल करे आप ही शीतल होय” मन का आपा अर्थात् अहंकार को जब तक हम नष्ट नहीं करेंगे तब तक विनम्रता नहीं आ सकती है। इसलिये भागतकार का वह कथन सार्थक बन बड़ा है। अहंकार के शासन का श्रेष्ठ उपचार है प्राणी मात्र के प्रति विनम्रता का भाव एक संस्कृत सूक्ति में भी नम्र मनुष्य को कुलीन बताया है।

नमस्ति सफलाना वृद्धा नमन्ति कुलजाः नराः शुल्काकाष्टन मूर्खज न नमन्ति कदाचित्।

अर्थात् फल युक्त वृद्ध और कुलीन व्यक्ति ही नमते हैं सूखे वृक्ष और मूर्ख मनुष्य कभी नहीं झुकते।

महाकवि कालिदास का कथन है कि संसार में परोपकारी प्राणी सदैव विनम्र होते हैं। जैसे वृक्ष फलों के भार से झुक जाते हैं। बादल बल से भर जाने पर धरती पर झुक कर बरसते हैं और सत्पुरुष समृद्धि पाकर विनीत बन जाते हैं। किन्तु शिष्टाप्रद है यह उदाहरण।

चित्त और विद्वान सिसरों के अनुसार किसी भी महान व्यक्ति के लिए नम्रता से बड़ा और कोई गुण नहीं हो सकता। सेट आइस्टाइन ने तो यहां तक कहा है कि अभिमान देव को दानव बना सकता है और नम्रता मनुष्य को देवत्व की ऊँचाई तक पहुँचा देती है महाकवि यदु सबर्च भी नम्रता की प्रशस्ति में लिखते हैं—

“हम ऊँचे आते हैं उसकी अपेक्षा जब हम नीचे झुकते हैं तब विवेक के अधिक निकट होते हैं।”

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने कहा है जहां नम्रता से काम निकल जाये वहां उग्रता नहीं दिखाना चाहिए। वास्तव में यदि आप भी अपने जीवन में नम्रता से कार्य निकालते हैं तो अपने आपको धन्य कह सकते हैं। फ्रेंच दार्शनिक जेवर्ट ने विनम्रता की महिमा का बखान करते हुए बताया है कि जिस प्रकार तन के लिए वस्त्र, आभूषण आदि शृंगार का कार्य करते हैं उसी प्रकार जो मनुष्य अपने स्वभाव में मन में विनम्रता को धारण करते हैं वह मनुष्य सुंदर सरल और सहज हो जाते हैं। अर्थात् उनका कहना था कि— “विनम्रता मनुष्यता का शृंगार है।”

एक प्रसिद्ध अंग्रेज कवि ने कहा है— “मनुष्य जितना ही महान होगा उसमें उतनी ही अधिक विनम्रता होगी वास्तव में ऐसा देखा गया है कि महापुरुष जो महान होते हैं वे अपने जीवन में विनम्रता का भरपूर भंडार लिए होते हैं। यदि आज के युग में मनुष्य को विवेकशील बनना है तो भी उसे विनम्रता का गुण धारण करना होगा। महाकवि वर्ड्स वर्थ ने विनम्रता की तारीफ करते हुए कहा है कि उड़ने की अपेक्षा झुकते हैं तब हम विवेक के अधिक नजदीक होते हैं। अर्थात् यदि मानव को विवेकशील बनना है तो उसे विनम्र होना आवश्यक होगा। दूसरे शब्दों में इस कवि के आशय को ऐसा जान सकते हैं कि विनम्रता ही विवेक की पहली और अंतिम सीढ़ी है।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी कहा है— “जिसे विनम्रता नहीं आती है या नहीं है वे व्यक्ति विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते हैं अर्थात् विनम्र (विनयशील) व्यक्ति ही अपने जीवन में प्राप्त की गई विद्या का उपयोग कर स्वयं का कल्याण कर सकते हैं।

आर्थर हेल्प्स ने तो विनम्रता को मनुष्य की मार्मिक तकलीफों की औषधि निरूपित किया है उनके शब्दों में विनम्रता मानवता के कितने ही भावनात्मक कष्टों की अचूक रामबाण औषधि है।

सारांश—

हम जानते हैं कि कई बार जब सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता है तो टेढ़ा करना पड़ता है यानी आपको भी कड़वा बोलना पड़ता है। कुछ अवसरों पर यह ठीक है लेकिन यदि

आप सोचे कि सभी डिब्बों से घी अंगुली टेढ़ी करके निकलेगा तो यह सही नहीं। वैसे भी आज के जमाने में आपको घी निकालने के लिए अंगुली की आवश्यकता ही क्या है। चम्मच लीजिए और घी निकालिये यानी मीठा बोलिये और काम करवाइये।

वैसे भी कड़वे वचनों से व्यक्ति के व्यवसायिक ही नहीं पारिवारिक रिश्ते भी खराब होते हैं। कटु सुनना किसे पसंद है जो व्यवहार आपको पसंद नहीं यदि वह आप दूसरों के साथ करोगे तो आपको भी निश्चित ही नुकसान उठाना पड़ेगा। इसलिये आप कितने ही कुशल और कर्मठ व्यक्ति क्यों न हों, आपका अपनी जीभ पर नियंत्रण नहीं है तो यकीन मानिये उसका खामियाजा आपको भुगतना ही पड़ेगा। यानी आपकी प्रगति करना चाहते हैं तो अपनी जबान में कटुता नहीं मिठास घोलकर रखो, इससे आपको सफलता की ओर जाने की आवश्यकता ही नहीं होगी वह तो खुद ब खुद आपके पास चली आएगी। जिंदगी अध्ययन से संवरती है अनुभव से संवरती है। सत्संग और संकल्प से जिंदगी सार्थक होती है। प्रेम के पुट से जिंदगी संतुष्ट होती है जिंदगी की राहों में आत्मबल का विगुल बजाये। इसे ज्ञान की गरिमा देकर अज्ञान को मात दे। अच्छाइयों को गले लगाये, कठोरता को त्याग करे मधुरता व विनम्रता को अपनाए।

कुछ असे पूर्व श्रीमती शर्मिला दुबे ने अपने लेख में जीवन व्यवहारिकता की कुछ बातें बताई थी। उनका उल्लेख करना भी अप्रासंगिक नहीं होगा। उनके द्वारा बताई कुछ बातें इस प्रकार हैं—

- अपने व्यवहार में दो शब्द हमेशा ही साथ रखें। जी हां, सॉरी और थैंक्यू जो आपकी हर जगह मदद करेंगे।
- विनम्रता को अपने जीवन रूपी शृंगार का अत्यावश्यक हिस्सा बनाएं, जिससे आपका व्यक्तित्व और भी निखरेगा।
- अपने से बड़ों का सम्मान और छोटे लोगों को स्नेह करें तो पाएंगे कि यह क्रम निरंतर चलता रहेगा। समाज में सम्मान और स्नेह की एक शृंखला स्वतः ही बन जाएगी।
- अपने घर-परिवार में, रिश्तेदारों में, मित्रों और आसपास के वातावरण को शांति और सौहार्दपूर्ण बनाने के लिए वाणी माधुर्य का गुण अपनाएं।

- अपनी गलती स्वीकारना सीखें, इससे आपका आत्म-विश्लेषण होगा और अपनी गलतियों से कुछ नया सीखने को मिलेगा।
- निंदा की प्रवृत्ति से बचें, क्योंकि इससे आप दूसरों की नजरों से गिर सकते हैं।
- अपने मित्रों की झूठी तारीफ न करें बल्कि उन्हें उनकी गलतियों, कमजोरियों और बुरी आदतों से अवगत कराएं और उसे सुधारने में सहयोग।
- सहयोगात्मक रवैया अपने जीवन में अनिवार्य रूपसे शामिल करें। दूसरों के सुख-दुख में, बीमारी में, उनका सहयोग जरूर करें।
- समय प्रबंधन एक ऐसी व्यवस्था है जिसके आधार पर आप बड़े से बड़ा काम भी आसानी से कर सकते हैं। अतः समय के महत्व को समझकर उसका सदुपयोग करें।
- क्रोध से बचें, क्योंकि क्रोध सदैव मनुष्य के स्वास्थ्य और मस्तिष्क के लिए हानिकारक है।
- अपना मस्तिष्क अच्छे विचारों से ओतप्रोत रखें। संकुचित विचारधारा अपने दिमाग से बाहर निकालें।
- अंधविश्वासी न बनें। किसी भी बात को तर्क की कसौटी पर कसें तभी उसका पालन करें।
- हमेशा कुछ नया सीखने की चाह रखें। और यह भी ध्यान रखें कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई गुण अवश्य होता है उसे ग्रहण करने का प्रयास करें।
- अपने कार्य में हमेशा मेहनत, ईमानदारी और लगन का समावेश करें क्योंकि ये ही आपकी वास्तविक पूंजी हैं।
- स्वावलंबी बनें। अपना काम दूसरों पर कभी भी नहीं थोपें।
- अहंकार से कोसों दूर रहें। अहंकारी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व की छवि धूमिल कर बैठता है।

इस प्रकार विनम्र बनकर हम अपने व्यक्तित्व में एक रत्नजड़ित आभूषण जब देते हैं जो हमें यश व सम्मान दिलाने के साथ ही सफलता की गारंटी भी प्रदान करता है। याद रखिए, विनम्र बनना आपके हाथ में है। इसके लिए लगेगा कुछ नहीं और मिलेगा सब कुछ।

—‘तृप्ति’, बंदा रोड, भवानीमंडी कोटा

आ ब पूरे चार दिन हो गए हैं पानी का नल आया। अब तो घर में जमा पानी की कुण्डी भी खाली होने को आई। कहीं प्यासा मरने की नीमत न आ जाए। हे राम, अब क्या होगा। सुबह-सुबह दादी माँ चिन्ता व्यक्त कर रही थीं।

एक समय था जब पानी के लिए सब कुछ वर्षा पर दारोमदार हुआ करता था। वर्षा के पानी को लोग तालाबों में जमा कर वर्ष भर अपने पीने के पानी की आवश्यकताओं के साथ ही अन्य सभी जरूरतों को पूरा कर लिया करते थे, लेकिन अब तो कुएं, नहरें, हैण्डपम्प, घर-घर में नल कनेक्शन वाली जल आपूर्ति के अनेक साधन उपलब्ध हो गए हैं। इन सबके बावजूद पानी की किल्लत कहीं अधिक हुई है। इसके पीछे लोगों की जल आवश्यकताओं में हुई वृद्धि के साथ ही उनकी स्वार्थपरता प्रमुख कारण है। कुछ भी हो आज पानी का पेना यहाँ-वहाँ आराम से सुना जा सकता है। दादी ने दोनों ही तरह का समय देखा है, वह इस मामले में टि-सुना टूटा है।

दादी उससी को पार गई है। जमाना तो उन्होंने देखा ही है पर समय के साथ भुगतने अनुभवों को सहेबा भी है दादी माँ ने। घटनाओं का विश्लेषण करने की अदभुत क्षमता है उनमें। बोझ-तालाब एवं कुओं से पीने का पानी भर खाने से लेकर आज घरों में लगे पानी के नलों तक की सारी यात्रा उनके देखते-देखते पूरी हुई है। दादी का अपना दर्शन है, उनकी अपनी दृष्टि है पानी को लेकर।

“चार-चार दिन जब नल नहीं आया तो क्या होगा ? कहीं कुएं की मोटर तो खराब नहीं हो गई है। कोई पता तो लगाए।” दादी ने फिर दोहराया। वह नित्य कर्मों की शृंखला में हाथ में पूजा की थाली लिए मन्दिर जाने की तैयारी कर रही थी। दादी अक्सर कहती थी, “जब तक कुएं नहीं सूख जाएंगे, हम जल की कीमत नहीं समझ पाएंगे। हम क्यों नहीं समझते कि जल में औषधियाँ हैं, जल में अमृत तत्व है।” पर दादी की कौन सुनता। हम पानी वैसे ही बहते रहे और पड़ोसियों के प्रति हमारा कर्तव्य भाव हमें कभी नहीं सुझा।

□□□

“कुछ भी हो इन पड़ोसियों को न कोई चिन्ता है और न कोई शर्म ही। वे पानी के पीछे हाथ जोकर पड़े हुए हैं। जब देखो तब इनके बच्चे हाथों में भरतन लिए पानी भरने अपने बहाँ आते

कहानी

बूस्टर

□ ओमप्रकाश सारस्वत



रहते हैं। पानी को क्या दोष दें।” दादी के मंदिर जाने के बाद माँ ने पापा को सुनाकर कहा। वे चौक में बैठे अखबार पढ़ रहे थे।

दरअसल वह मध्यम व कमजोर स्थिति वाले लोगों की बस्ती थी। बीसियों घरों में पानी के नल लगा चुके थे तो दो चार अब भी बीसियों की कृपा पर अवलम्बित थे। कुएं जब तक थे तो इन लोगों का मान स्वाभिमान अव्यक्त दर्जे का था। घरों में मर्द सूर्योदय से पहले आठ-दस घड़े पानी कुएं से लाकर घर की कुण्डी के गले डाल चुके होते। सांय के समय औरतों के हैण्ड पानी के भरतन उठाए गली में शोभा बढ़ाते लेकिन कुओं की वह व्यवस्था क्या समाप्त हुई, इन मेहनतकर्मियों का जैसे स्वाभिमान व सम्मान ही कहीं चला गया।

सरकारी सार्वजनिक नल भी उस क्षेत्र में लग नहीं पाया था। लोग बताते हैं कि कभी एक स्टेण्ड वहाँ नगरपालिका द्वारा बनाया गया था जो समय रहते पानी का कनेक्शन न होने की वजह से वर्षों ईंटों का चबूतरा बन रहा। बच्चे उसके पास बने एक पेड़ पर बन्दरों की तरह चढ़ते-उतरते और चरुत पड़ने पर उस चबूतरे का सहारा भी लेते। कुछ नटखट बच्चों ने चबूतरे

की ईंटों पर पत्थर मार-मार कर उन्हें हटाना शुरू किया और धीरे-धीरे पानी के लिए बना वह स्टेण्ड खू-पन्तर हो गया। सुनते हैं कि किसी की सिफारिश पर वह नल बड़ों की बस्ती में लगा दिया है जहाँ अधिकतर समय पानी बेकार में ही बहता रहता है।

“तुम लोग फिर आ गए अपने लोटे-तबेले लेकर, कोई शर्म भी है! चार दिन हो गए हैं पानी के दर्शन किए। खुद तो मरेंगे सो मरेंगे, हमें भी ले मरेंगे। अपने घरों में नल लगा क्यों नहीं लेते ?” बड़े भइया ने इस अंदाज में कहा जैसे वे साधन होते हुए भी जानबूझ कर घर में पानी का नल नहीं लगावा रहे हों। पीने के पानी की बुगाड़ में नलविहीन गरीब पड़ोसी ने अपने दो बच्चों को सिलवर के भरतन लेकर भेज दिया था। गरीबी व अभाव का दर्शन बड़ा दर्दनाक होता है। कोई नहीं चाहता अपमानके शब्द सुनना, मगर निर्धनता अक्सर मान-अपमान की परिभाषा बदल देती है और यही था गरीब पड़ोसी के चरित्र में। बिचारा क्या करता, ऊपर से बच्चों का तो कोई दोष ही नहीं था। माँ-बाप के काँटों में सहारा बनने वा यों कहे कि उनके कर्मों में हाथ बंटाने आए बच्चे बड़े भइया से अपमानित होने के बावजूद अपने स्थान पर खड़े थे। बड़ा मार्मिक दृश्य था किसे कोई संवेदनशील व्यक्ति ही समझ सकता है।

“तू पानी के लिए मना करता है रे। लोग तो प्याऊ लगावते हैं, रिंदोही में जानवरों के लिए बनी कुण्डियों में पानी डलवाते हैं और इधर तू है जो घर में पानी होते हुए भी जकड़तमन्दों को नट रहा है, नकरकट कहीं का।” दादी की नाराजगी सुन पड़ोसी बच्चों के चेहरों पर विचय के भाव प्रकट हो गए और अगले ही क्षण उनके भरतन पानी से भर भी दिए गए। पापा ने पानी भरने के लिए बच्चों की तरफ इशारा कर दिया था।

वास्तव में पानी की कमी वाली कोई बात यहाँ नहीं थी। पानी की सप्लाई बल्लुआ विभाग द्वारा सुबह-शाम दोनों समय बडस्तूर जारी थी।

बड़े लोगों ने अपने घरों में पानी की बूस्टिंग मशीनें लगा रखी थीं। उनके घरों में धरती तल से 30-35 फुट की ऊँचाई पर बने वाटर टैंकों में पानी पहुँचता करने के लिए ये मशीनें जरूरी बन गई हैं। इन मशीनों से सबसे बड़ा नुकसान यह हुआ है कि पानी का प्रेशर इनकी तरफ खिंचा चला जाता है तथा दूसरे घरों में उनकी जरूरत जितना पानी भी पहुँच नहीं पाता। कई बार पानी की सप्लाई कमजोर होने पर तो बिना बूस्टर लगे घरों में पानी बिल्कुल भी पहुँच नहीं पाता और यही सुनने में आता है कि आज फिर पानी नहीं आया। क्या विडम्बना है !

तीन-चार दिन के अन्तराल से पानी की सप्लाई से परेशान होकर आखिर एक दिन पापा ने कहा, “अब तो हमें भी बूस्टर लगाना पड़ेगा। यों कब तक काम चलेगा ? यह तो रोटी-दाल की तरह जरूरी बन गया है। यह खर्चा तो अब करना ही पड़ेगा। पानी के बिना तो काम नहीं चल सकता।”

माँ ने सहमति में सिर हिलाया था। सर्वाधिक प्रसन्नता बच्चों को हुई थी। घर्घर्...घर्घर् मशीन चलेगी और उधर जल कुण्ड में पानी की धार गिरेगी। अब तो मन करेगा उतने पानी से नहाएँगे।

उसी दिन सायं को पापा के दफ्तर का चपरासी अपनी साईकिल के पीछे एक मशीन लाद लाया था। उसके साथ एक मिस्त्री था जिसने मशीन लगाकर उसको चलाने व बन्द करने का तरीका समझा दिया था। हम सबने ध्यान पूर्वक इस कला को सीख लिया था।

इक्कीस रुपये की मिठाई मंगवाकर प्रसाद बांटा गया। किसी समय पानी के लिए इन्द्र और वरुण देवता की पूजा कर प्रसाद चढ़ाए जाते थे, यज्ञ किए जाते थे, और अब.....। अब आदमी को प्रकृति पर विजय पा लेने का बुखार चढ़ गया है, अतः मशीनों को प्रसाद चढ़ाया जाता है। मशीनें भगवान बन गई हैं।

अगले दिन सुबह जब पानी आया तो मशीन को आजमाया गया। पानी खींच कर आ रहा था। ठेट तल तक खाली हो गई पानी की कुण्डी में लटके रबड़ के नल से पानी गिर रहा था-धड़....धड़....धड़.....।

दादी उस समय पड़ौस में ही बने शिव मन्दिर में दर्शन करने गई हुई थीं, रोज की तरह।

थोड़ी देर बाद वह आई तो बच्चों ने दौड़कर बताया कि कैसे उनके यहाँ आज धड़ाधड़ पानी आ रहा है।

बच्चों की बात सुनकर दादी विस्मय के साथ चौक में आई और अपनी जानकारी के लिए पूछा, “पानी कब से आ रहा है...अभी आया लगता है।”

“नहीं, पानी तो आध घण्टे से आ रहा है। आपके मन्दिर के लिए घर से निकलते ही समझो आ गया था।” पापा ने आगे बढ़कर बताया। वे दफ्तर जाने के लिए शोब बनाने की तैयारी कर रहे थे।

“ऐसा कैसे हो सकता है। सीधी मन्दिर से ही आ रही हैं। वहाँ पानी कल से नहीं आया है। पुजारी जी कह रहे थे कि बूंद-बूंद पानी नल से टपक रहा है, एक बाल्टी भी नहीं आया है, और यहाँ जैसे कोई इन्द्र बरस रहा है। आखिर यह चमत्कार हुआ कैसे ? आश्चर्य से भरी दादी जल कुण्ड के पास आकर बोलीं जहाँ जल कुण्ड में रफ्तार के साथ पानी को गिरता साफ-साफ

देखा जा सकता था।”

“माँ, यह सब इस मशीन का चमत्कार है। इधर आकर देखो। मैं आपको समझाता हूँ।” पापा ने दादी को आवाज देकर बुलाते हुए कहा।

दादी के चेहरे पर कई तरह के भाव आ-जा रहे थे जिन्हें समझने के लिए हम सबका विवेक बहुत छोटा पड़ रहा था। जिसने जमाने को समझा हो, उसे समझ पाना क्या कोई आसान काम है।

“हाँ, बताओ यह काहे की मशीन है ?” दादी ने पापा के नजदीक आकर जानना चाहा। दादी मशीन की घरघराहट को सुनती हुई उसकी ओर गौर से देख रही थीं।

“दादी माँ, यह सब विज्ञान का कमाल है, विज्ञान जिसकी पढ़ाई मैं कर रहा हूँ। यह मशीन बिजली से चल रही है। यह गली में बिछी पानी की पाईप लाईन से पानी को खींच कर टॉटी तक ला रही है।” बड़े भाई ने दादी के समक्ष अपना वैज्ञानिक ज्ञान बघारते हुए कहा। वे कानपुर स्थित एक औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान से डिप्लोमा कर रहे हैं तथा गर्मी की छुट्टियाँ बिताने घर आए हुए हैं।

दादी माँ इतना जानने के बाद कुछ क्षण तो मौन रहीं। फिर बोलीं, “अब आया मेरी समझ में कि क्यों दूसरों के घरों में पानी नहीं के समान आ रहा है और क्यों हमारे यहाँ इन्द्र बरस रहा है। इन्द्र! कलयुगी इन्द्र!! मशीनी इन्द्र!!! भगवान के घर की व्यवस्था के अनुसार तो भूमि तथा पानी सब के लिए समान है और यहाँ पानी का विभाजन कर उसके वितरण में भी भेदभाव कर लिया है। यह सब विज्ञान के नाम पर किया जा रहा है, यह कहती है तुम्हारी विज्ञान! कुएँ जब थे तो चार आने महीने पियाई लगती थी और गली-मौहल्ले के सब लोग बिना किसी भेदभाव के पानी लाते थे। गली में पनिहारिनें पानी के मटके सिर पर रखे निकलती थीं तो लगता था कि पूरा मौहल्ला, पूरी गली, पूरा गाँव एक ही घर है, एक ही परिवार है। सबके लिए एक समान अवसर और पानी का कोई दुरुपयोग भी नहीं। अब तो जैसे कहीं किसी को किसी से वास्ता नहीं। सब अपने को शहनशाह समझने लगे हैं। धिक्कार है यह जीवन। यह सम्पन्नता किस काम की जो किसी का दर्द न मिटा सके।”

दादी ने जिस कुपित भाव के साथ यथार्थ

128 लीटर पानी प्रतिदिन

इस्तेमाल करते हैं हम...

दुनिया की जनसंख्या 7 अरब है। 2050 तक आंकड़ा 9 अरब हो जाएगा, लेकिन अगले 30 सालों में दुनिया में मौजूद पानी भी सूखने लगेगा। इधर यूएनडीपी की एक रिपोर्ट के अनुसार अरब देशों में पानी की कमी की समस्या दूर नहीं हुई तो वे मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स से दूर रह जाएंगे। आइए जानते हैं अलग-अलग देशों में पानी की उपलब्धता और खपत के बारे में...

सबसे ज्यादा पानी खर्च करते हैं कनाडा के लोग

देश	प्रति व्यक्ति रोजाना खपत	टैप वाटर की उपलब्धता
कनाडा	759	88
यूएस	570	100
मेक्सिको	340	90
भारत	128	92
ब्रिटेन	119	100
चीन	80	100

स्रोत: दैनिक भास्कर (2.12.2013)

व विज्ञान की व्याख्या की, को सुनकर किसी से कोई जवाब देते नहीं बना। बड़े भैया कुछ बोलना चाहते थे लेकिन पापा ने इशारा कर उन्हें बोलने नहीं दिया।

“भाई, अब तो टाइम का यही तकाबा है। आप ही देख लो आस-पड़ोस के सभी घरों में यह मशीन लगा रही है। सब करेंगे वैसा हमें भी करना पड़ेगा।” पापा ने स्पष्टीकरण देते हुए दादी माँ से कहा।

“तुम्हारा टाइम वह कहता है कि गरीब पड़ोसी पानी की एक-दो बाल्टी प्राप्त कर लेने की चाह लिए तुम्हारी तरफ ताकता रहे बिचारा और घनपति फर्श घोंने वा कि पौधों को सींचने वा कि दिन में तीन-चार बार नहाने और यहाँ तक कि अपने कुत्तों को नहलाने में पानी अनुसार पानी बहाए।” “दादी का उल्लाहना व समझावनी अब गुस्से में बदल रही थी।”

पानी के कुण्ड में कलधार निरन्तर गिर रही थी। बूस्टर मशीन की घरघराहट बच्चों के लिए एक संगीत बन गया था। बच्चे इस संगीत की तर्ब पर अपने मुँह से संगीत बना रहे थे। उन्हें दादी की बात से कोई लेना-देना नहीं था।

“पानी तो परमात्मा का उपहार है, मानव जाति के लिए। यदि इस तरह बूस्टर मशीनें लगाकर पानी प्राप्त करने में भेदभाव शुरू किया गया तो क्या नीली छतरी वाला कभी माफ करेगा और दूसरी बात यह कि यदि सबके घरों में नल लगा जाएँ व सबों के यहाँ पानी खींचने वाली मशीनें लगा जाएँ तो फिर क्या होगा ? फिर भी आपणा इस तरह पानी ? फिर क्या लगाओगे ?” दादी गुस्से से प्रश्नों की बीछार कर रही थीं, बिनका उत्तर दे पाना हमारे लिए सम्भव नहीं था।

सबके सब चुपचाप नवरे झुकाए खड़े थे। किसी को कोई जवाब नहीं सुझ रहा था।

“बोलते क्यों नहीं। तुम सब लोग बोलो मत खड़े हो ? मेरी शंका का समाधान करो, मेरे प्रश्नों का जवाब दो।” “दादी ने सलाटा तोड़ते हुए फिर कहा। लोग बोलें तो बोलें क्या, क्या जवाब दें, वे सब तो पानी-पानी हो रहे थे।

दादी को अपनी शंका का समाधान व प्रश्नों के उत्तर सबकी साझी चुप्पी में मिल गए थे। वह आगे बढ़ी तथा बूस्टर मशीन का तार निकाल कर फेंक दिया।

—वैद्य संवादक (शिवि)
मो. 9414060938

रपट - 16.12.2013

शिक्षा निदेशालय स्थापना समारोह

□ सांग सिंह इन्दा



राजस्थान शिक्षा विभाग मंत्रालयिक कर्मचारी संघ द्वारा निदेशालय में दूसरी बार आयोजित समारोह दिनांक 16.12.2013 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि और बीचनेर (पूर्व) क्षेत्र की विधायक सुश्री सिद्धिकुमारी व कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वी.श्रवण कुमार निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा ने की। इस समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री राजीव भाकल अतिरिक्त निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा, श्री शिवजीराम चौधरी, संयुक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, श्री ओमप्रकाश सारस्वत, वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा, श्री विजयशंकर आचार्य, उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा थे। कार्यक्रम की शुरुआत किशन कुमार खंगाणी द्वारा गणेश वन्दना से हुई। इस अवसर पर निदेशालय में कार्य कर चुके कार्य कुशल व कर्तव्य सेवानिवृत्त पांच कर्मचारियों का तिलक लगाकर, स्मृति चिह्न देकर प्रशस्ति पत्र भेंटकर व पुस्तकें प्रदान कर सम्मानित किया गया। बिन सेवानिवृत्त महानुभावों को सम्मानित किया गया है वे हैं—(1) श्री देवकिशान रंगा (2) श्री प्रकाश मणि गोस्वामी (3) श्री भानुशंकर जोशी (4) श्री चांद रतन वर्मा (5) श्री केदारचन्द स्वामी।

इसी प्रकार सम्मानित मंच ने वर्तमान में दोनों निदेशालयों में काम कर रहे कर्मिकों को भी उपर्युक्त प्रकार से ही सम्मानित किया गया, जो इस प्रकार हैं— (1) श्री शिव रतन सुवार, प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय (2) श्री रामसिंह रावपूत, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, (3) श्री पवन कुमार मोदी, निजी सहायक, अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, (4) श्री खैयचन्द खत्री, सहायक प्रशासनिक अधिकारी,



माध्यमिक शिक्षा निदेशालय (5) श्री विशा प्रसाद अधिकारी सहायक कर्मचारी प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय।

मंच पर विराजमान मुख्य अतिथि महोदय व अन्य सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए श्री सत्नारायण व्यास, अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी संघ ने कहा कि आपस में अपना अमूल्य समय देकर यहाँ पधारे व हमारा मान बढ़ाया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए शिक्षा निदेशालय की गरिमा को बढ़ाने में मुख्य अतिथि महोदय से निवेदन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री वी. श्रवण कुमार ने निदेशालय व सम्पूर्ण शिक्षा विभाग के भौतिक संसाधनों को बढ़ाने व नवाचार कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने का आश्वासन देते हुए निदेशालय के पारिवारिक वातावरण की सराहना की। कार्यक्रम में माध्यमिक शिक्षा निदेशक महोदय की हार्दिक शुभकामनाओं का वाचन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री सिद्धिकुमारी महोदया ने निदेशालय की स्थापना में अपने पूर्वजों के योगदान को याद करते हुए निदेशालय परिवार को आश्वासित किया कि शिक्षा विभाग की समस्याओं के निदान के लिए उनकी तरफ से विधान सभा के माध्यम से भी प्रयास किए गए हैं और भविष्य में भी मैं अपनी तरफ से प्रयास जारी रखूंगी। श्री राजेश व्यास, कर्मचारी नेता ने सभी आगन्तुक महानुभावों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच संचालन श्री मदन मोहन व्यास, वरिष्ठ लिपिक नेता ने किया।

—सहायक निदेशक (शिवि)
मो. 94461879679

दृ रवाचे की ओर ताकते बच्चे, घंटी की टन्-टन् सुनने की बेताब शिक्षक पढ़ा रहे हैं अपनी गति से परन्तु बच्चों के मन चंचल एवं अस्थिर हवा में उड़ रहे हैं।

बस्ते में किताबें रख दीं। कापियां सम्भाल कर बस्ते में दूँस दीं। पेन, पेन्सिल, रबर आदि को भी बस्ते में रख दिया। दोपहरी के लिए लाये टिफिन को भी एक बार फिर संभाल कर बस्ते में व्यवस्थित कर दिया।

ओह!.....अब भी छुट्टी की घंटी नहीं बजी ? पानी की बोतल से पानी के दो घूंट फिर ले लिये। परन्तु नर्वन बरबस उस गेट की ओर टकटकी लगाए घंटी बजाने के लिए चाते हुए सहायक कर्मचारी को देखने का प्रयास कर रही है। बाल-मन के मस्तिष्क में अब भी सवाल अनुत्तरित हैं, ओह!..... अब तक घंटी क्यों नहीं बजी? सहायक कर्मचारी उस समय उन्हें किसी फरिस्ते से कम नहीं लगता। घंटी की तरफ बढ़ते सहायक कर्मचारी के कदम बच्चों के दिल में उत्साह व उमंग का संचार करने वाले होते हैं। तब सहायक कर्मचारी अंकल उन्हें बहुत प्यारा लगता है।

शिक्षक का आठवाँ कालांश/अभ्यापन के लिए शिक्षण कर रहे हैं सत्त्व प्रयास। बार-बार टोकना पड़ता है, 'श्याम, बाहर क्या देख रहे हो', 'इसे अपनी कापी में नोट क्यों नहीं करते?', 'किताब-बस्ते में क्यों रख दी', 'ध्यान से सुनो' आदि शब्दों का निरन्तर एवं सदा दोहराने वाले हैं परन्तु बच्चों पर असर दिखता ही नहीं। यथा 'जिकने बड़े पर पानी की बूंद'।

बच्चों को एक क्षण ध्यान केन्द्रित करने पर ब्लेक बोर्ड पर लिखे शब्द रचना दिखती है तो दूसरे क्षण ऐसी अपठनीय लिपि लगती है जैसे किसी दूसरे गृह के 'एलिवन' ने कुछ लिख दिया हो।

बच्चों को आठवाँ कालांश, आइन्सटीन के 'सापेक्षवाद के सिद्धान्त' का अनुशासन करवा हुआ अत्यधिक विस्तारित लगने लगता है। ये कालांश 35-40 मिनट का न होकर 90 मिनट से भी ज्यादा अवधि का महसूस होता है।

बच्चों के फालों में छुट्टी के लिए 'टन्-टन्' की आवाज की अनुगूँव महसूस हो रही है जो फल बजी थी। ओह!..... इतनी देर कर दी.....लगता है कर्मचारी सो गया, भूल गया आदि की उम्मेदगुन में बाल-मन हवा में पता की

उम्र स्वप्ना

आठवाँ कालांश

□ एम.एल. जांगिड़



विद्यार्थ्य कैसे छात्राई के लिए छात्राई का घब बसे। छात्राई का घब छात्राई ऊँह छात्राई के लिए छात्राई हन छात्राई मछली बहे छात्राई विद्यार्थ्य, छात्राई छात्राई की हन छात्राई कतनाते बहे। हन विषय पन हन काँह में छिछता पछता बहे है। विद्यार्थ्य में आठवाँ कालांश में बच्चों की मछःस्थिति तो अण्ड-अण्ड होती है। छुट्टी की छपटी टल-टल-टल उसके लिए मछुन बछीत के कम लछी होती। 'आठवाँ कालांश' क्षीर्षक जो इना आलेनद में पक्षि विविश के नामचीन लेखक एवं मूर्धन्य विद्यापि श्री एम.एल. जांगिड़ के विराज।
-इन्दिरा कल्याण

भांति हिजकोले खा रहा है।

बार-बार दवावे जिड़की से बाहर ताक-झांक करते बच्चों को जैसे ही घंटी की दिशा में चाते कर्मचारी की झलक दिखते ही 'फरटि दीड़' के लिए 1-2-3..... 'रेडी' हो गये। बहुसंख्य बच्चों ने पहले से ही अपने बस्ते बच्चों पर ऐसे लटक रखे हैं जैसे आमी के चयान अपने 'मिशान' के लिए उत्तर हो। शेष बच्चों ने हाथों में अपने-अपने बेग इस तरह कसकर पकड़ रखे हैं ताकि इस 'फरटि' दीड़ में वह किसी से पीछे न रह जाये।

'टन्-टन्' की आवाज कानों तक पहुँची ही नहीं कि बच्चे अपनी कक्षा कक्ष से एक ही 'फदाक' में बाहर आने की होड़ में शामिल हो गये। कक्षाभ्यापक अभ्यापन छोड़, बच्चों को अनुशासन के साथ कतारबद्ध ढंग से बाहर निकलने का बार-बार निर्देशों का 'हवाई-फावर' करते हैं परन्तु ये सब 'फावर' दीपावली पर छोड़े गये पुराने पटाखों की तरह 'फुस' हो चाते हैं। वहाँ तक संस्था प्रधान, पीटीआई आदि भी रोब दिखाकर अनुशासित रहने का जोर-जोर से उद्बोधन करते हैं परन्तु ये सब इस वक्त 'कागजी' बनकर मात्र हवा में तैरते रहते हैं।

'टन्-टन्-टन्' के साथ बाहर आने की 'धक्कामपेल' में दवावे या टूटी/बिनाशिल की खिड़कियों से कक्षा कक्ष के चक्रव्यूह से बाहर निकले बच्चों के 'विनयी' चेहरों की चमक एवं खुशी शायद ही ऐसी पहले देखी हो ? प्रफुलित चेहरा, चमकती आँखें, गर्वोन्मत्त बाँते, उन्मुक्ता से भरते कदम आदि बच्चों के इस आठवाँ कालांश के बाद 'टन्-टन्' की प्रातःकालीन

खिलती कॉपल की कहानी लगती है। कक्षा कक्ष से निकलते हुए बच्चे दूसरी मंजिल से नीचे आने की सीढ़ियाँ भी ऐसे पार करते हैं जैसे कोई 'सुपरमैन' उड़ता है। स्कूल भवन के बाहर खड़ी बस, बैन या टैक्सी के लिए कुछ बच्चे अपने अभिभावकों के बाहन को दूर से पैनी नजर से देखे, बत्ती से पहुँच कर गद-गद होकर बैठ ऐसे अनुभव करते हैं कि ये उनका 'रावसी रथ' है। कई बार तो अपनी साबीगण, जो पैदल ही चल रहे हैं या इन्तबार में खड़े हैं, उन्हें गुँह बिदकाकर चिढ़ाने का प्रयास कर खुरा खोवा है।

आस-पास क्षेत्रों से पैदल आये बच्चे अपने छोटे-छोटे समूहों, चुम्बकीय डोमेन में चलते, मटरास्ती करते, जोर-जोर से बातें करते, नोक-झोंक करते और हंसते बोलते ऐसे लगता है कि आज कोई 'गढ़ फतह' कर आये हैं। तेजी से चलते एवं खुशी के मारे इन बच्चों की 'बोली' भी बदली बदली लगती है।

बच्चों के लिए आठवाँ कालांश 'एक्वेस्ट की चोटी' पर पहुँचने के समान है। इनके लिए खुशी, विमुक्ति, उपलब्धि आदि का मिश्रण है। छुट्टी की 'टन्-टन्-टन्' की आवाज इनके एक्वेस्ट चोटी पर 'विनयी ध्वज' फहराने की अद्वितीय उपलब्धि है। यदि इसके बाद, कल के दिन 'एक्विार' हो या अन्य अवकाश, तो फिर इन बच्चों में उत्साह एवं खुशी दो-गुनी ही बल्कि चार-गुनी हो जाती है। काश ! बच्चों के लिए हर कालांश, आठवाँ कालांश की भांति नव उत्साह और उमंग का स्रोत क्यों न बन जाये ?

-रीडर, एच.उ.अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर
मो. 9414147270

बा त सन् 1971 भारत-पाक युद्ध के बाद की है। मेरा जन्म सिन्धु प्रांत के जिला धारपाकर (सोडान-प्रदेश) की तहसील छाछरो के गांव 'माहदेड़ा' में हुआ। सन् 1971 दिसम्बर में भारत-पाक युद्ध के समय मेरे परिवार जन धर्म एवं आन-शान की स्वार्थ मातृ भूमि को सदा के लिए त्याग कर बाह्यरे जिले के शिविर 'नीम्बला' में आ गए जो भारत सरकार के पुनर्वास केन्द्रों द्वारा स्थापित था। इस शरणार्थी शिविर में कभी तम्बुओं की तपती लाव, तो कभी हम स्वयं के श्रमदान से बनी तीतर पंखी शोषणियों की छाया में, तो कभी मछमली बालू पर साधक की तर बैठकर उठार-चढ़ाव के धपेड़ों को झेलते हुए माँ सरस्वती के चाक्षुष-चेतना के आलोक में पांचवीं तक शिक्षा अर्जित की और आठवीं इसी गांव के विद्यालय में करने के बाद कक्षा दसवीं शहर बाह्यरे से उत्तीर्ण की। शिक्षा की दृष्टि से वह समय मेरे लिए एक 'क्रांति-काल' कहा जाएगा। दरअसल मेरे परिवार में बड़े पैमाने के अलावा सब जन अनपढ़ ही थे। पिताजी बड़े नेक एवं साफ दिल के एक बुद्धिमान इंसान थे। माताजी का बड़ा सहच, सरल एवं आत्सल्य भरा भाव आज तक पञ्च-प्रेम के रूप में मेरी किन्दगी का जीता-जागता दर्पण रहा है, जिसका समय-समय पर उत्साही स्वभाव मेरी शिक्षा के उत्थान में मील का पत्थर बनकर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता आया है।

मुझे शिविर में रहते हुए शायद 8-10 माह हो चुके थे। मैं जब करीब 9 वर्ष का रहा होगा, हमेशा नक़रियाँ चराने जाता था। परन्तु शिविर में शाला खुल चुकी थी। विस्थापितों में से ही अध्यापक लगाए गये थे। मेरी बिरादरी के एक साथी भूरसिंह मुझे रोच कहते थे कि 'तुम स्कूल चलो।' मैं स्कूल के नाम से सीधे मुंह बात न कर सिर हिला देता था। वह हर रोज पीछे पड़ा रहा। उसने पक्का इरादा कर लिया कि 'संग्राम को स्कूल ले जाना है।' अन्ततः उसकी रोते वाली रट काम कर गई। आखिर मैं उनकी बात से सहमत हो गया। परन्तु मुझे केवल पिताजी की शंका थी। मैंने अपनी बात माताजी को कही तो उन्होंने हाँ भर ली। मैंने हाँकते हुए छोटी बहिन को कहा कि 'तू पिताजी को कह दे।' उसने पिताजी से कहा कि-'संग्राम पढ़ने के लिए स्कूल जाना चाहता है।' पिताजी ने मुझे बुलाया

संघर्ष की कहानी : शिक्षक की जुबानी गहरिये बालक का शिक्षक बनना

□ संग्राम सिंह सोढ़ा



श्री बंखाराम सिंह शिक्षक लेखक हैं। पढ़ते हैं, पढ़ते हैं और लिखते हैं। साहित्यकार के रूप में लिखित पेंथ बखते हैं। मजबूत शिक्षक हैं। एक गहरिये बालक से शिक्षक बनने का उनका माफ़क बड़ा वीरगर्भक है। कदम-कदम पर संघर्ष मजबूत संघर्ष के साथ मुकाबला। गहर कोलम संघर्ष की कहानी : शिक्षक की जुबानी में पढ़िए बंखाराम सिंह जी की भाषा। आप भी ऐसी संघर्ष भरी साथ भाषाएं प्रकाश के लिए मिलें। -वसिष्ठ बख्खादक

और चोर देते हुए कहा कि-'देख तू स्कूल कभी मत चुकना।' बस, उसी दिन मैं अपनी माँ से एक रुपया लेकर पाटी-कस्ता खरीद लाया। दूसरे दिन भूरसिंह के साथ स्कूल जा घमका। उस समय एक तो अर्थाभाव और दूसरे पूरे परिवार का संघर्षमय जीवन में स्कूल जाने की विधिवत शुरुआत कैसे होती? विधि का सौभाग्य कहाँ से मिलता? और! अच्छे कार्य को कौन बुगु कहेंगा।

शिविर के पास खुले मैदान में तम्बू में स्कूल चलाया जाता था। सदी के दिनों में छात्र तम्बू के बाहर बैठकर पढ़ते थे। कभी-कभी भूरसिंह मेरे साथ नक़रियाँ चराने जाते थे। तब वे मुझे रेत पर अक्षर-ज्ञान कराते थे। जब मेरा पहली कक्षा में प्रवेश हुआ तब बड़े विनम्र सरल स्वभाव के गुरुदेव हरिक्रिशन बोशी थे। उन्होंने पाटी पर मुझे सारे स्वर लिख दिये। मैंने उसी दिन सारे स्वर बाद कर दिखाए तो बड़े खुश हुए। पांच सात दिनों में मुझे पहली प्रवेशिका पढ़ानी शुरू कर दी। मैंने एक ही साल में दूसरी कक्षा उत्तीर्ण कर ली। इससे शाला में सब छात्रों में श्रेष्ठ गिना जाने लगा। दिनों-दिन मैं भीतर ही भीतर असाहित होवा रहा। श्री जोशीजी के प्रिय छात्र के रूप में हो जाने से वे मुझे दूसरे कमबोर छात्रों को पढ़ाने हेतु कहते थे। वे स्वयं बड़े प्रेम के साथ अनोखे ढंग से पढ़ाते थे। उनका स्नेह भरा प्यार हमें पढ़ाई के प्रति लालायित करता था। वे हमेशा गृहकार्य के रूप में घर से पाठ संबंधी लेखन लिखकर लाने देते थे। कोई छात्र नहीं लिखकर लाता तो मार पड़ती थी। उसे मुर्गा बनने की सजा भी भुगतनी पड़ती थी। शाम को सभी छात्रों को बाड़ी-बारी से कविताएं, पहाड़े एवं

गिनती बोलनी पड़ती थी। पीछे-पीछे सभी छात्र दुहराते थे। हाव-भाव, उठार-चढ़ाव पर विशेष ध्यान होने से वह गूँज पूरे शाताकरण को गरिमा प्रदान करती थी। इसमें स्कूल से नहीं चुड़ने वाले छात्रों पर काफी प्रभाव पड़ता था। वे भी दूसरे दिन अपने अभिभावक के साथ शाला की चारदीवारी में वीणापाणि के स्वरों को सुशोभित करते। उदार स्वभाव वाले आचार्य के प्रति छात्र हमेशा अनुशासनात्मक रूप से विद्या अध्ययन करते थे जिससे गुरु-शिष्य का संबंध एक सेतु के रूप में समाज से सुवश फैलता था।

श्री चिन्मलाल बोशी 'विद्या ददाति विनयम्' उक्ति के धनी विघात्री के बागीरा एवं चित्रकला के चित्तरे प्रायः हमें हिन्दी विषय पढ़ाते थे। उनकी अध्यापन शैली बड़ी प्रभावशाली थी। वे बड़े चित्त से बार-बार शुद्ध उच्चारण पर जोर देते हुए शब्द भंडार की गुणवत्ता भरते थे। उनसे मैं क्या, सभी छात्र डरते थे। उन्होंने कई बुरी आदतें जैसे-छूट बोलना, एक दूसरे साथी की चुगली करना, पढ़ाई के प्रति लापरवाही इत्यादि छुड़ाई। अतः उनका इस कबह से छात्रों पर काफी अंकुश था जिससे मेरे जीवन में काफी परिवर्तन आया। मैं प्रायः नित्य प्रातःकाल ऊँचे स्वर में पढ़ता था, जो लोक-मानस के हृदय-पटल पर गहरी छाप छोड़ देने के अलावा मेरे साथियों में पढ़ने की बिज्झा को उत्तेजित ही नहीं कर देता, बल्कि अग्नि में घृत का काम करता था। मेरी इसी सतत अध्ययन प्रवृत्ति का काफी छात्रों पर अनुकूल असर पड़ा। उनमें दिनों-दिन पढ़ने की प्रतिस्पृह की सतक आत्म-विश्वास के साथ उत्तरोत्तर बढ़ती गई। जब शाला में गुरुजन प्रस

पूछे तो कई छात्रों के हाथ ऊपर उठते थे। यह इसी कसौटी का परिणाम था। प्रायः शाला में प्रथम स्थान पाने की होड़ मची रहती। इससे अन्य सभी अध्यापक छात्रों का आदर करते थे। छात्र स्वयं अपने दायित्व को निभाते थे।

एक दिन मेरे ननिहाल से गुजराती भाषा में लिखा पत्र आया। उस पत्र में अशुभ समाचार था। श्री चिमनलालजी गुजराती भाषा जानते थे। उन्होंने मुझे पत्र के समाचार अवगत कराए। मैं सीधा घर जाकर यथावत् सारी बात अपनी माँ को सुनाई तो घर में दुःख का सागर उमड़ पड़ा। वस्तुतः वह अशुभ समाचार उसी समय नहीं कहना था। यह बात दूसरे दिन श्री चिमनलालजी ने सुनी तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने इस दुःख का सम्पूर्ण रहस्य समझा तो उन्होंने हम पांच-साठ बड़े छात्रों को गुजराती भाषा सिखाई। वे हमारी पारिवारिक परिस्थितियों को जानते थे। इस एक छोटी सी घटना से हमें गुजराती भाषा सीखने का सौभाग्य मिला। इसी तरह हमारे शिक्षक दशरथ कुमार खत्री हमें अपने शैक्षिक-जीवन के दुर्लभ प्रसंग सुनाते थे, जिनका प्रभाव मेरे जीवन पर भी पड़ा। वे बड़े परिश्रमी थे। उनकी परिश्रमी बनने की प्रेरणा से मैं अपनी पढ़ाई करने के बाद खाली समय में भरत (कसीदा) भरता था और गर्मियों की छुट्टियों में जंगल से छाणे बीन कर लाता था। उसे कूटकर महीन खाद बनाकर बोरियां भरता था। उस एक बोरी के सिर्फ 8 रुपये उस समय मिलते थे। उन रुपयों से मैं अपनी पाठ्य पुस्तकें एवं अन्य स्टेशनरी सामग्री खरीदता था। उन गुरुजनों की असीम प्रेरणा से पढ़ाई-सिखाई के अलावा आजीविका हेतु श्रम करना सीखा, वह श्रेय उनको ही जाता है।

मैं सदा कक्षा-मॉनिटर रहने के अलावा कक्षा तीसरी से नववी तक कक्षा में प्रथम नम्बर से उत्तीर्ण भी होता रहा। दरमसल पढ़ाई के अलावा स्कूल में व्यावहारिक विषयों की चर्चा होती थी। समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते थे। विशेषकर स्कूल में खेल की भावना से हम सब सहपाठी साथ में खुले वातावरण में प्रकृति की प्रदत्त मखमली रेत पर भाव-विह्वल होकर उत्साहित माहौल में उत्प्रेरणा के साथ कम्बुड़ी एवं मलपुद्ध का खेल खेलकर खूब आनन्द लूटते थे। ईर्ष्या, द्वेष एवं घृणा जैसी भावना का नाम-निशान नहीं था। आपस में अफनत्व का मैत्रीपूर्ण

भाव ब्रह्मा और स्नेह की सरिता में चार चांद लगा देता था। इस तरह श्री हर्षिकेशन, चिमनलाल, अचीबाई एवं पीताम्बर जैसे बोम्ब शिक्षकों से शिक्षा पाई।

उस समय समूचे समाज में शिक्षा का सौहार्द भग्न माहौल था। पढ़ाई के प्रति घनिष्ठ जुड़ाव था। शिक्षक और शिक्षार्थी में विज्ञासात्मक संबंध थे। विज्ञासा उत्पन्न होने पर प्राप्त ज्ञान ही हृदयगम्य होता है। 'चित्रावली' की निम्न सूक्ति को भली-भांति चरितार्थ करते थे-

‘गुरु चक्षुषः चक्षुः अंजनं देह।’

‘हिया मुकुर मज्जन करि लेहू।’

शिक्षक शिक्षार्थी के दिलों दिमाग में शिक्षा ज्ञान के माध्यम से उनमें सबगता के साथ स्वचेतना की भावना आत्म-विश्वास से पैदा करता था। जिससे छात्रों एवं अभिभावकों पर नैतिकता की दृष्टि से भी सकात्प्रत्मक प्रभाव पड़ता था।

अफसोस है कि आज इस आपाधापी के युग में शिक्षक और छात्रों के बीच का जो रगतात्मक रिश्ता है, वो इस शिक्षा की सौहार्द भरी गरिमा से कौनों दूर अपने कर्तव्य के औचित्य को निभाने में असफल बनता जा रहा है। आज जमाना इण्टरनेट का होता जा रहा है। अतः सीखना एक अनिवार्य अंग हो गया है।

‘जिन गुरु जगत् को निरूपण पावा।’

-सोहन लोक साहित्य सदन, चक सविधानुष्ठान, बम्बू पो. 9983181510



अच्छे कर्म करे जा बन्दे

□ साँवलसाम नामा

कहा गया है-“अच्छे कर्मों से ही व्यक्ति फर्क से अर्थ पर पहुँचता है, वह राष्ट्र की आन, मान-शान को संसार में फैलाता है।” अपने ही औरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, मानव मूल्यों को साक्षर कर चार चांद लगाता है, वो आज के परिप्रेक्ष्य में आत्मसात और अति अनुकरणीय है।

शास्त्रेयता, सदाचार महामुक्तों के गुण होते हैं। अधीनस्थ कर्मियों के साथ आदर-सम्मान के भाव भरे रहते हैं। डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम नागरिक अर्थात् महात्मा गांधी राष्ट्रपति थे उन उनकी सेवा के लिए ‘तुलसी’ नामक एक च.बै. कर्मचारी नियुक्त किया गया था। ‘तुलसी’ ईमानदार था, उपाधि यश-कदा लक्ष्यवाही कर देता परन्तु ‘कमा कर्मेण को चाहिए छोटन को उत्पात’ कहावत को राजेन्द्र बाबू अकमाते थे। वही बर्तों का बहमन है। अतः तुलसी की लक्ष्यवाही से बहुत ही नर सचेत कर चुके थे। उनके उपरान्त भी हाक के तीन पाठ। एक विदेशी अतिथि ने अत्यन्त प्रभावित हो अचल हाथी दाँत का एक कलात्मक पेन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को सफ़र, अग्रह से भेंट की थी। वे उन्हें सदा फावला से टेबल पर रखा करते थे, अतः उन्हें पेन से आत्मीयता हो गयी थी।

एक दिन तुलसी ने सफ़र, सबावत करते वक्त लक्ष्यवाही में देहा रत्न राजेन्द्र बाबूजी के उस प्रिय पेन को तोड़ दिया। तुलसी को बोझ इटक लगा। जब डॉ. राजेन्द्र बाबू के हाथ टूटे पेन पर लगा ऐसा देख उन्हें काफी दुःख का महासात हुआ। परन्तु तुलसी पर सिल पर भी नाराज नहीं हुए।

मन में गंभीरता से सोचकर सचिव को बुलाकर कहा-“तुलसी को अन्यत्र लगा दे, जहाँ सामान टूटने की संभावना न हो तथा न ही राष्ट्रीय सम्पत्ति की हानि हो। जब तुलसी को उछान में लगा दिया। दूसरे ही दिन अपने सेवाकार्य में ‘तुलसी’ ने देखा राजेन्द्र ने पेन तो सोचने लगे-“आजकल न्यूज़ की बर्तों की कठोर मेहनत से बना शोध पत्र टामी कुत्ते की अनबानी से शोध पत्र बलकर राख हो गया था, सारी मेहनत ही स्वादा हो गई थी, परन्तु न्यूज़ ने टामी को कुल भी नाराज होकर नहीं कहा और पुनः शोधपत्र बनाने में मशगूल हो गये” भित्ती बड़ी दबावुता और संयम की राह दिखता है” अतः तुलसी की अनबानी से पेन टूट गई वो मेरे ऊपर कौन-सा फ़ाड़ टूट पड़ा, गहरी सांस लेते हुये मन ही मन सोचा “मैंने उसे अपने काम से निश्चल कर उसका अपमान किया है।” सचिव से कहा-“तुलसी तुलसी को मैं पास भेजिए।” तुलसी आया और अपराधी की भाँति खड़ा हो गया तो राजेन्द्र बाबू ने कहा-“तुलसी ! तुम मुझे क्षमा कर दो, मैं तुम्हारे हुक्मों में मेरे पास से अन्यत्र भेज दिया।” देहा रत्न अनावाहू डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्व प्रथम राष्ट्रपति जी समान सद्ब्यवहार शास्त्र ही अन्वय देखने मात्रण में उधारकर सशिक्षा, व्यवहारिक शिक्षा देखने को मिले।

-सुर बाबा, निरंज बड़ा चौहान, धौमात पो. 9587848485

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

मरुधरा का पूर्वांचल भरतपुर

□ डॉ. दाऊदबाल गुप्ता



हमारी सांस्कृतिक धरोहर शीर्षक के अन्तर्गत हम प्रति माह प्रदेश के एक जिले का पवित्र शब्द चित्र विमत कई महीनों से प्रस्तुत कर रहे हैं। साथ ही अन्तिम कदम पैर पर सम्बन्धित जिले के किसी दार्शनिक मूल का तथ्यात्मक वंशीय फोटोग्राफ मध्य विवरण प्रकाशित किया जा रहा है। इस माह का जोहानपुर के रूप में पहचाने जाने वाले जिले भरतपुर का विविध साहित्यिक अंदाज में लिखा आलेख प्रस्तुत है जिसे हमारे विविध अनुसंधान एवं प्रबंधन साहित्यिक एवं शिष्ट/संस्था शिष्ट के लाभकारी लेखक डॉ. दाऊदबाल जी गुप्ता के लिखने की कृपा की है। यह श्रद्धालु आने भी जानी रहेगी।

-दक्खिण संपादक

यह जो मरुधरा का पूर्वांचल है और जिसे 'लोहागढ़' नाम से जाना जाता है, है वो बहुत छोटा किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण है। इस भरा धाम पर सदियों से जो जीवन-पुष्प खिलता रहा, उसके परागकों की सुगंध गह-गह महक कर अपनी मूल संस्कृति का परिचय देती रही। फलतः गाहे-बगाहे प्राणियों को अपनी ओर आकर्षित करती रही। विविध क्रिया-कलापों के माध्यम से प्राकृतिक सुषमा के साथ एकलव्य होकर ऐसी मिठास चोली रही जो जीने का उत्साह जगाती है। विश्व प्रसिद्ध पक्षी अभयारण्य यहीं है और मानव प्रकृति की दूषित मनोवृत्ति के कारण भले ही भरतपुर आखेट स्थली रहा हो परन्तु आज वह परिष्कृत संस्कृति के फलस्वरूप पक्षियों की सुरक्षित स्थली एवं देशी-विदेशी मेहमानों के लिये पर्यटन केन्द्र है। अस्तु यहाँ आकर किसी भी प्रवासी को यह अस्सास सहज हो जाता है कि-

अरण्य वह मधुमय देश हमारा।

यहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

-चय शंकर प्रसाद

यही कारण है कि या तो इस निरुपद्रव धाम पर कोई प्रवासी आकर बस जाता है या फिर आकर्षण-विद्ध होकर जब-जब लौट आता है।

संस्कृति स्वरूप-तथास्थित राजपूताने का यह अंचल पूर्व में 26°.43' से 27°.50' उत्तर में 76°.55' से 77°.46' पर 1982 वर्गमील का विषम चतुर्भुजाकार क्षेत्र है। समुद्र तल से 180 मी. की ऊँचाई पर अवस्थित इस भू-भाग से उत्तर में हरियाणा के फरीदाबाद,



दक्षिण में उत्तर प्रदेश के आगरा व राजस्थान के भीलपुर तथा कपौली जिले एवं पूर्व में उत्तर प्रदेश के मथुरा तथा पश्चिम में राजस्थान के अलवर व दीपा बिलों की सीमाएँ सटी हैं। जैसा सीमाओं को देखकर प्रतिभाषित होता है, वह भू-भाग ब्रज, मेवाती व राजस्थानी संस्कृतियों का संगम स्थल है। परस्पर सामंजस्य का ऐसा प्रवाह चहाँ विद्यमान है कि मिली जुली गंगा-जमुनी संस्कृति की मनुष्य छटा प्रतिपल दिखलाई देती है।

भाषा-ब्रजभूमि से सटा और ब्रज संस्कृति से पटा भरतपुर का यह सौभाग्य ही है कि यहाँ दैनन्दिन व्यवहार में ब्रज भाषा का बोलबोला है। अतः ब्रज भाषा में रची-बसी ब्रज संस्कृति यहाँ सहज ही लोक में धुलकर सुधा पान करती है। फलतः साहित्य-रचना हो या परस्पर मान-मनुहार अथवा गायन हो या बाँसुरी वादन अथवा हँसने हँसाने वाली ठिठोली ही क्यों न हो ब्रज भाषा ही संस्कृति की अभिव्यक्ति का सरस माध्यम है-

बाँसुरी कूँ लोरी गाव पालनी सिखायी तैने गोपी खाल बालन ठिठोलवौ सिखायी है। राधा कूँ मान मनुहार अभिसार अरु

बाँसुरी कूँ रस चोरिबी सिखायी है। साहित्य कूँ रस रीति शब्द अर्थ अलंकार ललित कलान की द्वार खोलिबी सिखायी है। धन्य ब्रज बानी तेरी अकथ कहानी तैने बानी के विधाता कूँ बोलके सिखायी है।

-गोपाल प्रसाद व्यास

भरतपुर अंचल की संस्कृति में ब्रज भाषा तथा ब्रज भाषा की पोर-पोर में ब्रज संस्कृति ऐसी एकलव्य हुई है कि उनका अलगाव संभव नहीं है।

लोकगायन की छटा-भरतपुर अंचल की सांस्कृतिक छटा, लोकरीति, नीति मनोरंजन और मौजमस्ती का पता यहाँ प्रचलित लोक-गायन से चलता है। इस क्रम में नीटंकी, हुरंगे, बम नृत्य, लौंगुरिवा तथा कन्हैया अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं। संक्षेप में इनका परिचय इस तरह जाना जा सकता है।

1. नीटंकी-भरतपुर का प्रमुख नाट्य है। इसमें लोकमन खूब रमता है।

2. हुरंगे-होली के बाद पंचमी से लेकर अष्टमी तक भरतपुर जिले के ग्रामीण अंचलों में हुरंगों की धूम होती है। बम-नगाड़े तथा माष्ट की ताल पर होली की मस्ती में नारी व पुरुष विभिन्न प्रकार के स्वाँग धरकर नृत्य करते व गीत गाते हैं, जिन्हे देखते ही बनता है।

3. बम नृत्य-इसमें दीर्घकाय नगाड़ों का प्रयोग होता है। बम अर्थात् नगाड़ों की धुन के साथ रसिया गाया जाता है। इसे बम रसिया नृत्य भी कहते हैं। साथ ही डोलक, मबीरा, करताल, धाली, चिमटा आदि भी बजाये जाते हैं।

4. लौंगुरिवा-यह एक लोकगीत है,

जिसे कैला देवी मेले में अवसर पर गाया जाता है। इसमें शिव व शक्ति की महिमा का बखान होता है। यह लोकगीत स्थानीय स्तर पर अत्यन्त लोकप्रिय है।

5. कन्हैया—लोक संस्कृति से जुड़ी, भरतपुर में प्रचलित हेलाख्यास से मिलती-जुलती लोक नाट्य शैली का नाम है। देव बाबा लोकदेवता है जिनका मेला नगला जहाजपुर में भरता है। इसी से मिलता-जुलता गायन तुरा-कलगी भी प्रचलित है।

जन-जीवन के आयाम—जन-जीवन के जितने आयाम जन्म से लेकर मरण तक होते हैं, उन सबसे सम्बन्ध जोड़कर, सुख-दुख की घड़ी को मन-मस्ती में मोड़कर, लज्जा-संकोच को छोड़कर जब मुक्त कंठ से गायन किया जाता है तो उसे सुनकर जो आनन्दानुभूति होती है, वह बेजोड़ है। रसिया की टेक के रूप में कुछ बानगी देखिये—

- (क) कैसे काटूँ सखी जवानी, मेरी बलमा बासै री।
- (ख) अब न साझे में घुटैगी बलमा दार अकेली रहूँगी बाखर में।
- (ग) जंगलिया दावे दार कै जाड़े मर गई रे सुन जंगलिया।
- (घ) मत माँरे दूगन की चोट रसिया होरी में मेरे लग जाएगी।
- (ङ) आज बिरज में होरी रे रसिया।

वल्लभ संप्रदाय का प्रभाव—भरतपुर अंचल के डीग, कामाँ और गोवर्धन का पूँछरी परिक्रमा मार्ग ब्रज संस्कृति के परिचायक हैं। कहना न होगा कि ये कृष्ण की लीला भूमि भी रही हैं। अतः उसके प्रभाव से मन्दिर संस्कृति इस अंचल पर पूर्णतः आच्छादित है। अकेले कामाँ में वल्लभ संप्रदाय के दो पीठ हैं। जबकि कुल पीठों की संख्या सात है। इन दो प्रसिद्ध पीठों में 'गोकुल चन्द्रमा जी' तथा 'मदन मोहन जी' विराजमान हैं। यहीं विमलकुण्ड है। वल्लभ संप्रदाय के प्रभाव से हवेली संगीत की झंकार पूरे क्षेत्र में झंकृत होकर सांस्कृतिक छटा बिखेरती है। राग 'धमार' में गाये जाने वाले पदों की बानगी देखिये—1. ए री सखी निकले हैं मोहन लाल 2. आयौ फागुन मास कहैं सब होरी होरा

आये दिन पर्वों, उत्सवों, ऋतु परिवर्तन के समय फूल बंगला का आयोजन आदि इस

क्षेत्र की सांस्कृतिक परम्परा का द्योतक है। 'सात वार और नौ त्योंहार' उक्ति में यही उत्साह व्यंजित होता है।

नदी-पर्वत के प्रति भाव—निस्संदेह इस क्षेत्र के इष्ट देव श्री गोवर्धन महाराज हैं। ये पावन गिरि के रूप में विराजित है तथा श्रीकृष्ण के रूप में पूजित हैं। यह गिरिराज पर्वत, मानसी गंगा तथा भरतपुर में बना गंगा मंदिर दैनंदिन व्यवहार में आने वाले पर्वतों, नदियों, कुण्डों आदि को पूजने की सांस्कृतिक परम्परा अभी तक जीवित है जिसमें अंधानुकरण से हटकर उपयोगी स्वरूपों में पूजकर श्रद्धा व्यक्त की जाती है। श्रद्धा के साक्षात् स्वरूप हैं।

ब्रज संस्कृति का उदारवादी एवं समन्वयवादी दृष्टिकोण ही है जिसमें गंगा मन्दिर तथा जामा मस्जिद दोनों का निर्माण कार्य राजा बलवन्त सिंह ने कराया था तथा दोनों इमारतों की भव्यता एवं बेजोड़ शिल्पकला प्रशंसनीय है। भरतपुर की सांस्कृतिक विशेषता यह रही कि यहाँ धार्मिक उन्माद उत्पन्न होने की स्थिति नहीं रही जिससे सामाजिक समरसता को प्रश्रय मिला। यही नहीं तहसील स्तर पर मन्दिर, मस्जिद, सैयद, पीर, औलिया, जैन मंदिर, गिरिजाघर बनाये गये जिनका अस्तित्व आज भी मौजूद है। इसके अलावा गणेश मंदिर, शिव मंदिर, देवी मंदिर, उषा मंदिर आदि भी समभाव से पूजित हैं। कामाँ के करीब आदि बंदी स्थान पर भगवान बदरीनाथ, उसके पास केदारनाथ आदि के मंदिर हैं। जिनसे यह प्रवृत्ति उजागर होती है कि कामवन सभी देवी-देवताओं का केन्द्र स्थल रहा था तथा आज भी है।

खान-पान-राजस्थान का यह पूर्वांचल कृषि की दृष्टि से उपजाऊ है। यहाँ दोनों फसलें रबी व खरीफ पैदा होती है। रबी से प्राप्त खाद्यान्न तो वर्षभर खाये ही जाते हैं तथा खरीफ से प्राप्त बाजरा विविध रूपों में शीत ऋतु के अन्तर्गत रुचिपूर्वक खाया जाता है। बाजरे-ज्वार के आटे से बनी राबड़ी छाछ के साथ खाने का प्रचलन है। ग्रीष्म में गेहूँ व चना को भाड़ में भुनवाकर सत्तू बड़े चाव से खाया जाता है। आये दिन दाल-बाटी-चूरमा अथवा खीर या राबड़ी, माल पूआ यहां के निवासियों का रुचिपूर्ण भोजन है। इसी क्रम में कार्तिक मास के आगमन पर दीपावली के बाद 'अन्नकूट' बनाने व सामूहिक रूप से

खाने-खिलाने को सांस्कृतिक महत्व प्राप्त है। यह रसोई श्री गिरिराज पूजन से जुड़ी है। भरतपुर अंचल में घर-घर गोबर से गिरिराज तथा ग्वाल-बालों की प्रतिमा चीती जाती है, पूजन-पश्चात् अन्नकूट की प्रसादी खाते हैं।

बगीची संस्कृति—भरतपुर शहर के बाहर जाने वाले हर द्वार पर प्राचीन काल से ही बगीची बनी हुई हैं। जिसमें मस्तराम की बगीची, अलक-झलक, गोल-मोल भूर सिंह की बगीची प्रसिद्ध है। इन्हीं बगीचियों से जुड़ी व्यायाम शालाएँ हैं। यहाँ सैर-सपाटे के साथ-साथ-साथ मल्ल विद्या को लेकर पहलवानी के गुरों को सीखना तथा कुश्तियों का शौक पूरा करने का प्रावधान है। आये दिन कुश्ती-प्रतियोगिता में भाग लेना युवाओं के लिये गौरव की बात है। पूरे जिसे में ही इस मल्ल विद्या का अभ्यास किया जाता है। करन सिंह माँजपुरिया, पूरन पहलवान, कौरट के कारे पहलवान का नाम आज भी आदर के साथ लिया जाता है जिन्होंने अपना नाम पूर्व में पहलवानी के क्षेत्र में उजागर किया।

प्राचीन अवशेष—शहर से तीन कि.मी. दूर पूर्व में 'नोह' का टीला रहा जिसकी खुदाई अमरीका के कैलीफोर्निया वि.वि. द्वारा कराई गई थी। यहाँ ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी में एक यक्ष-प्रतिमा प्राप्त हुई। छह फुट लंबी विशालकाय इस प्रतिमा का पेट बाहर निकला है तथा गहरी नाभि है जो समृद्धिशाली देवता का प्रतीक है। इसे यहीं एक मंदिर में स्थापित किया गया है तथा ऐसी ही दूसरी यक्ष प्रतिमा को भरतपुर संग्रहालय में रखा हुआ है। कुषाणकाल की वोधिसत्व की प्रतिमा भी मिली है। इसके अतिरिक्त वीणाधर शिव-7वीं शती, एक स्त्री-नौवीं शती, शिव-पार्वती विवाह पूर्व मध्यकाल, विष्णु शीप-12वीं शती दक्षिणी लाल पत्थर की बनी मौर्यकाल की, एक सजी-धजी स्त्री, एक कुत्ता और अनेक खंडित मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इससे प्रमाणित होता है कि 'नोह' एक समृद्धिशाली नगर था जहाँ धन के स्वामी यक्ष-यक्षिणी, विष्णु, शिव-पार्वती आदि की पूजा-अर्चना होती थी।

नोह के टीले के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण टीले हैं जिनसे मूर्तियाँ, मन्दिरों के अवशेष तथा शिलालेख प्राप्त हुए हैं। अनुमान

होता है कि भरतपुर के 10-12 कि.मी. के अन्दर इतने समृद्धिशाली नगर थे जहाँ ये सभ्यताएँ व संस्कृतियाँ पली-ढली थीं। दक्षिण-पूर्व में 'अधापुर' एवं दक्षिण में 'मसाह' ऐसे ही स्थल हैं। उत्तर में जधीना तथा उत्तर-पश्चिम में तुहिया-खोगर है। यह शृंखला भरतपुर से 40-50 कि.मी. दूर तक गई है और फिर एकदम लुप्त हो गई है। भरतपुर शहर से उत्तर-पश्चिम में आठ कि.मी. दूर 'डहटा-अवार और सूरौता' के टीले हैं। 15 कि.मी. दूर 'पेंगौर-तमरे' के टीले हैं। थोड़ा पश्चिम में हटकर 'कुम्हेर-धनवाड़ा' है। पच्चीस कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में 'मदवई-कटारा' आदि हैं और 30 कि.मी. दक्षिण में बयाना, ब्रह्मवाद आदि के टीले हैं। भरतपुर संग्रहालय द्वारा 1960-61 में प्रकाशित के पृ.सं. 9 से लेकर 35 तक लगभग 169 मूर्तियाँ व शिलालेखों का विवरण है जो यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर का ठोस आधार है। उल्लेखनीय है कि भरतपुर में वैष्णव, शैव, शाक्त तथा अनेक अद्वैतवादी सन्यासियों के आश्रम हैं।

अभिवादन-ब्रज रंग में पूर्ण-रूपेण सराबोर होने के कारण इस अंचल में कृष्ण भक्ति तो प्रधानता पाती रही किन्तु राम-भक्ति के प्रति भी जन-जन का रुझान बना। 'भरतपुर' नाम के पीछे भी यही इतिहास छिपा है। लक्ष्मण जी, स्थानीय राजघरानों के इष्ट देव हैं और रहे। भरत जी को समादृत करते हुए उनके नाम का स्मरण अंचल को यही नाम देकर किया गया। स्वयं राजा लोग शत्रुघ्न की भूमिका का निर्वाह करते हुए सुशासन के लिए समर्पित रहे।

श्रीराम को सर्वोपरि मानते हुए उनका स्मरण करते रहने की युक्ति महाराज सूरजमल ने सुझाई। इसके फल-स्वरूप 'राम-राम सा', का अभिवादन परस्पर चला तथा यही हमारे अभिवादन की संस्कृति बनी हुई है, जिसे सभी धर्मावलम्बी अपनाते हैं। इसी प्रकार किसी शुभ काम को करने, सम्पन्न होने, शुभ कर्मों की तरफ प्रवृत्त होने से पहले जो सामूहिक नारा चलता है वह 'गिरिराज महाराज की जय' का है, जिसने सनातन रूप धारण कर लिया है।

बेजोड़ वीरता-इस अंचल का मुख्य घंघा कृषि है। किन्तु, युद्ध कौशल में हस्तगत महारत के कारण यही कृषक अवसर आने पर वीर योद्धा भी बन जाते हैं। 'लोहागढ़' इनकी

वीरता का साक्षी है। इसी गुण के कारण यह कहावत मशहूर है-

(अ) आठ फिरंगी नौ गोरा, लड़ें जाट के दो छोरा।

(ब) यही भरतपुर दुर्ग है दुसह दीर्घ भयकार। जहाँ जट्टन के छोहरे दिये सुभट्ट पछार।

अस्तु, एक हाथ में हल और दूसरे हाथ में शस्त्र थामने की यहाँ परम्परा है जिससे यहाँ के जन-जन के 'स्वाभिमान' की रक्षा होती है। बात-बात में यही उक्ति चरितार्थ होती है कि- 'सीधेन सौ सीधे महा, बाँकेन सौ बाँके हैं।'।

वन-संस्कृति-हरे-भरे उपजाऊ क्षेत्र में प्रकृति-प्रेम के प्रति इस अंचल में अतीव उत्साह रहा है। ब्रज में व्याप्त वन-संस्कृति यहाँ प्रत्यक्ष दृश्यमान है। वृक्षारोपण, वन-संरक्षण, गौपालन तथा प्रकृति-भ्रमण यहाँ के जन-जीवन का अनिवार्य अंग भी है एवं सांस्कृतिक रंग भी। आगरा में ताजमहल की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यहाँ उन उद्योगों का सहज अभाव है जिनकी चिमनियाँ धुआँ उगलती हैं। फिर भी वाहनों की होड़ में तथा सभ्यता की दौड़ में पर्यावरण प्रदूषित होता है, जिसे पेड़-पौधों के संवर्द्धन से संतुलित किये जाने की प्रवृत्ति यहाँ की अनुकरणीय संस्कृति है।

मेला संस्कृति-प्राचीन काल से इस अंचल में 'मेला संस्कृति' की गूँज सुनाई पड़ती है। इन मेलों के मूल में जातिगत एवं ऊँच-नीच सम्बन्धी भेद-भाव भुलाकर परस्पर मिलन तथा आनन्दानुभूति के साथ स्वस्थ मनोरंजन का प्रचलन है। मेलों के आयोजन का आधार या तो किसी ऐतिहासिक घटना क्रम है या विभिन्न पर्वोत्सव का स्मरण रहता है। इसीलिए कहीं कंस मेला, कहीं हरियाली तीज मेला, कहीं भोजन थाली मेला, कहीं गनगौर मेला, कहीं जवाहर प्रदर्शनी, कहीं जसवन्त प्रदर्शनी का सिलसिला चलता रहता है। ऐसे मेलों में पशुधन के क्रय-विक्रय, विभिन्न क्रीडा प्रतियोगिताओं का आयोजन, कवि सम्मेलनों की धूम बनी रहती है। परस्पर सौहार्द्र बनाये रखने के प्रयास में उर्दू जुबान में मुशायरा व शेरों-शायरी यहाँ की संस्कृति में घुली-मिली हैं। विशेष पर्वों पर आसमान में पतंगें उड़ाना, बालिकाओं द्वारा साँझी चीतना आदि चलते रहते हैं। इनके साथ गीत-गायन भी होता है-

(अ) हरी-हरावै लास जितावै पीरी कभी खाय। पतंग संदर्भित

(ब) तू चलि री साँझी भैना, खेलन कूँ री चालूँ। साँझी खेल

कहावत-मुहावरे आदि-अंचल की समृद्ध ब्रज भाषा में कहावत, मुहावरे, लोकोक्ति और पहेली की भरमार है। इससे भाषा में संक्षिप्तता, अर्थ की गूढ़ता और संवादों की सटीक व सपाट बयानी रस का संचार करने में सक्षम है-

(क) पीरी पोखर पीरी अंडा बेगि बता नहीं मारूँ डंडा (कढ़ी)

(ख) इत खूँटा बित खूँटा, गाय मरखनी दुदधा मीठा (सिंघाड़ा)

(ग) ल्हौरी सो सिपाई, जामे पेट में बिबाई। (गेहूँ)

इनकी संख्या अपार है। बोल चाल की संस्कृति में गालियों की भरमार है। पर, इन गालियों से किसी का अपमान करने या आत्मा को चोट पहुँचाने का प्रयोजन नहीं अपितु प्रेम रस का परस्पर संचार करना है-

'अब माँहि' छूटे हमारी ततैया।

कारौ नाँय पीरी नाँय लाल है ततैया।'

इन गालियों में प्रतीकों का सहारा लेकर मन की भड़ास निकाली जाती है। इनका प्रभाव अचूक होता है तथा किसी को बुरा भी नहीं लगता। उल्टे हास्य रस की फुहारें मन को शीतलता तथा प्रसन्नता प्रदान करती हैं।

निष्कर्ष-कहा जा सकता है कि राजस्थान के पूर्वांचल की समृद्ध संस्कृति परस्पर मनोभावों के परिष्करण, रीति-रिवाजों के संतुलन तथा आमोद-प्रमोद से युक्त मनोरंजन की परिचायिका है जो जन-जन के मनो को जोड़ने तथा भेद-भावों की दीवारों को तोड़ने का काम करती है। इसीलिये यह संस्कृति शाश्वत है जो पाश्चात्य सभ्यता के झंझावातों से दो-चार करने में सक्षम है। साथ ही आदर्श चरित्र नायक श्रीकृष्ण द्वारा प्रचारित युक्तियों व नीतियों की अनुगामिनी है, जिससे हमारे आचार-विचार व सुसंस्कार पूर्ण-रूपेण संरक्षित प्रतीत होते हैं। निश्चय ही भरतपुर का राजस्थान प्रदेश के सांस्कृतिक स्वरूप में विशिष्ट स्थान है।

-दही वाली गली, ब्यानियान मौहल्ला, भरतपुर
मो. 9461462739

उत्सव-पर्व

सूर्य के उत्तरायण का पर्व है मकर संक्रान्ति

□ शशिकान्त द्विवेदी

आ रत एक उत्सव प्रिय देश है। एक अविश्वोक्ति के अनुसार भारत में 365 दिन में वर्ष 366 उत्सव होते हैं। हमारे देश में समय-समय पर हर पर्व को श्रद्धा, आस्था व हार्दिकता के साथ मनाया जाता है। सूर्य जगत का आधार है। 'सूर्यो आत्मा जगतः सत्सुखस्य' सूर्य को भारतीय ऋषियों ने बड़ और चेतन की आत्मा माना है। भारत सूर्य पूजकों व सूर्य पुत्रों का देश भी कहा जाता है। खगोलशास्त्रियों के अनुसार इस दिन सूर्य अपनी कक्षाओं में परिवर्तन कर दक्षिणायन से उत्तरायण होकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं। जिस राशि में सूर्य की कक्षा का परिवर्तन होता है उसे 'संक्रमण' या संक्रान्ति कहा जाता है। सूर्य के उत्तरायण का महापर्व है मकर संक्रान्ति जिसे प्राचीन ऋषियों ने महापर्व का दर्जा दिया है। यह पर्व सौर पंचांग का सबसे बड़ा पर्व है। मकर संक्रान्ति का पर्व प्रायः 14 जनवरी को मनाया जाता है।

इस पर्व को मनाने का उद्देश्य है, सूर्य की उपासना। सूर्य वर्ष के बारह महीनों बारह राशियों पर चमकता है। किसी भी राशि पर सूर्य एक माह तक रहता है अर्थात् सूर्य की राशि उसकी संक्रान्ति कहलाती है। हमारा कालचक्र सूर्य की गति के अनुसार ही चलता है। 'संक्रान्ति' शब्द का अर्थ है-सूर्य की एक राशि से दूसरी राशि में गमन करना। सूर्य का धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करना 'मकर संक्रान्ति' कहा जाता है। सूर्य इस दिन से उत्तरायण हो जाता है। मकर संक्रान्ति पर्व का हमारे देश में विशेष महत्व है। इस संबंध में संत तुलसी ने लिखा है-

"माघ मकरगत रवि जब होई।

तीरथ पतिहि आव सब कोई।।"

ऐसी मान्यता है कि गङ्गा, यमुना और सरस्वती के संगम प्रयाग में मकर संक्रान्ति के दिन सभी देवी-देवता अपना स्वरूप बदल कर स्नान के लिए आते हैं। इस अवसर पर इशाहबाद (प्रयाग) के संगम स्थल पर प्रतिवर्ष लगभग एक मास तक मेला लगता है। इस दिन सुबह-सुबह



तिल के तेल से मालिश कर नदी के पवित्र जल में स्नान करने की परम्परा है। सेहत के लिहाज से भी सूर्य पूजा को महत्वपूर्ण माना गया है। पौराणिक मान्यताओं के आधार पर मकर संक्रान्ति के दिन पवित्र नदी में स्नान करने से सभी कष्टों का निवारण हो जाता है।

इस दिन दान, जप एवं व्रत का विशेष महत्व है। 'माघे मासि महादेव यो दद्याद् धृतकम्बलम्। स मुक्त्वा सकलान् भोगान् अन्ते मोक्ष विन्दति।' इस दिन धृत और कम्बल के दान का विशेष महत्व है। इसका दान करने वाला सम्पूर्ण भोगों को भोगकर मोक्ष को प्राप्त होता है। कहते हैं कि इस अवसर पर किया गया दान सौ गुना होकर प्राप्त होता है। भगवान् श्री कृष्ण ने कहा है कि-'दारिद्र्यम् कीन्तेय' अर्थात् गरीबों में वस्त्र दान का बड़ा महत्व है। 'ब्रह्माण्ड' पुराण के अनुसार माता यशोदा द्वारा दधि मंथन कर इस शुभ विलास पर दान दिया गया था जिससे उन्हें श्री कृष्ण जैसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। कहा जाता है कि शर-शैवा पर लेटे भीष्म शितामह ने प्राण त्यागने के लिए सूर्य के उत्तरायण होने तक प्रतिष्ठा की थी। जब सूर्य की गति दक्षिण की ओर से उत्तर की ओर होती है तो उसे उत्तरायण कहते हैं। जब वह उत्तर से दक्षिण की ओर अभिमुख होता है तो उसे दक्षिणायन कहते हैं। सूर्य के उत्तरायण को शुभ माना गया है। इस शुभ पड़ी में मांगलिक कार्यों एवं त्योहारों का क्रम

शुरू हो जाता है।

देश के प्रान्तवासी इस महापर्व को अपने अंदाज से मनाते हैं। ये सभी परम्पराएं हमारी भलाई और सामाजिक सरोकार का संदेश देती नजर आती हैं। जैसे महाराष्ट्र में मकर संक्रान्ति का पर्व 'मोगी', उड़ीसा में 'पाना', केरल में 'ओणम', पंजाब और हरियाणा में 'लोहड़ी', असम में 'बिहु', हिमाचल प्रदेश में 'माघी', कश्मीर में 'शिगुर', दक्षिण भारत में 'पोंगल', उत्तरप्रदेश में इस पर्व को 'खिचड़ी' कहते हैं।

राजस्थान की परम्परानुसार इस दिन सीधाम्बवती क्षत्रियां तिल के लड्डू, घेवर तथा मोतीचूर के लड्डू पर रुपया रख कर चाचन के रूप में अपनी सास को प्रणाम निवेदन करके देती हैं। मकर संक्रान्ति का यह पर्व हमारी भारतीय संस्कृति को उजागर करती है। अतः हमें सूर्य के उत्तरायण होने का महत्व समझते हुए इस महापर्व को बड़े धूमधाम से मनाना चाहिए। यह पर्व मनुष्य की सुसुप्त आत्मा को जगा कर समाज के उद्धार एवं अच्छे आचरण का उपदेश देता है। इसीलिए हमारी संस्कृति में पर्व एवं उत्सव मनाने का विशेष महत्व है। विद्यालय में परीक्षाओं एवं छात्र-छात्राओं को इस उत्सव-पर्वों को मनाने तथा इनके पीछे निहित उत्तम भाव को ग्रहण करने के लिए प्रवर्तन करना चाहिए।

-पूर्व प्राध्यापक (हिन्दी)

फोरेस्ट चौकी के पास, लोहरिया (वांछनापुर)

मो. 9460116012

संस्कृति और प्रकृति

अस्मिता और अस्तित्व का अभिन्न अंग है संस्कृति

□ सुरेन्द्र 'अंचल'

संस्कृति हमारी अस्मिता और अस्तित्व का अभिन्न अंग है। “संस्कृति मानव द्वारा, समाज के एक सदस्य के रूप में अर्जित ज्ञान, विश्वासों, आस्थाओं, कला-कौशल, आचार-विचारों, कानूनों, रीतिरिवाजों तथा अन्य क्षमताओं का एक जटिल स्वरूप है।”

“संस्कृति” शब्द स्वयं इतना व्यापक अर्थ समेटे हुए है कि पूरा एक दर्शन शास्त्र है। उसमें हमारी पुरानी रीति-रिवाज, प्रथाएं, हमारा भोजन, वस्त्र, भाषाएँ, संगीत, कला-कौशल के सभी प्रकार सम्मिलित हैं। ये सब प्रकृति द्वारा प्रभावित ही नहीं अधिकांश मामलों में संचालित भी हैं। प्रकृति, संस्कार और प्राणियों का अस्तित्व अन्यान्योश्रित है।

प्रकृति द्वारा संस्कारों का पोषण होता है। प्रकृति इसके लिए रूपरेखा, मानदण्ड निर्धारित करती है। उसकी कक्षा में समस्त जीव, वृक्ष (वनस्पति) सूक्ष्मजीव बराबर हैं। प्राकृतिक परिस्थितियाँ (पर्यावरण) संस्कृति को आकार देने में अपनी भूमिका निभाती हैं। तात्पर्य यह कि संस्कृति में प्राकृतिक स्थितियों के अनुसार सीखने-सिखाने और समयानुकूल परिवर्तन परिवर्धन करने की क्षमता निहित है। यह प्रकृति का ही नियंत्रण है कि सीखने सिखाने की प्रक्रिया एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति समूह से दूसरे समूह और एक स्थान से दूसरे स्थान में पर्याप्त विभिन्नता है।

स्पष्ट है कि मानव अपने अस्तित्व को संरक्षण देता है, कवच देता है इस हेतु उसका माध्यम संस्कृति आयाम है। संस्कृति जड़ वस्तु नहीं चलायमान है, परिवर्तनशील है; क्योंकि प्रकृति परिवर्तनशील है। यथेष्ट समायावधि में संस्कृति में कुछ नए परिवर्तनों के समावेश के कारण मानवीय व्यवहारों में भी परिवर्तन सम्भव है, ये परिवर्तन संहारात्मक नहीं प्रत्युत संरक्षणात्मक होने चाहिए।

शीतकाल में गर्म वस्त्रों और वर्षाकाल में छातों का प्रयोग करना इसका एक छोटा सा उदाहरण है। जीव अपने अस्तित्व हेतु अन्य

गीतों से एवं सम्बंधित परिस्थितियों से सामंजस्य बिठाने हेतु प्रयत्नशील रहता है। यहां जीव शब्द का ‘मानव’ जीवों से अर्थ नहीं बल्कि कीटपतंगों, वृक्षलतादि (वनस्पतिवर्ग) सूक्ष्मजीव सभी सम्मिलित हैं।

कुछ ही वर्ष पूर्व रेले नहीं थी, वायुयान नहीं थे, कम्प्यूटर व मोबाइल की कल्पना भी दूर थी। आज वे जीवन के अनिवार्य अंग हो गए हैं। कभी मानव मांसाहार पर ही जीवित था। आज वह समझ गया है कि यह जिन पशु पक्षियों का संहार करता है, वे भी उसके जीवन उत्कर्ष के लिए बहुत महत्व रखते हैं। प्रकृति और समयचक्र ने हमें अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अनेक नवीन मंत्र दिए हैं।

संस्कृति के दो मुख्य घटक माने जाते हैं— (1) भौतिक (2) अभौतिक। भौतिक घटक तो स्पष्ट परिवर्तन ने दिखाते हैं किन्तु अभौतिक घटक हमारी अभिवृत्ति, आस्थाओं, नैतिक मूल्यों को अधिक प्रभावित करते हैं। आज हमारे विकृत हो रहे हैं नैतिक मूल्यों को बचाने के लिए सुसंस्कृति की बहुत आवश्यकता है।

अपनी सही और अहिंसक संस्कृति का स्मरण करवाने के लिए ही “इस्लाम” में रमजान में मुसलमान रोजा (उपवास) करते हैं, हिंसा के दूर, करुणा का व्यवहार करते हैं। दिन में मात्र एक बार चन्द्रमा के दर्शन कर के रोज खोलते हैं। रमजान के आखिर दिन में एक विशेष मीठी वस्तु (सिवाया) बना कर स्वयं खाते एवं पड़ोस में बांटते हैं। इसी प्रकार अधिकांश हिन्दू लोक कार्तिक मास में हिंसक प्रवृत्तियों से दूर रहते हैं। मांसाहार से बचते हैं। यह परहेज वस्तुतः अनेकानेक रोगों से भी बचाते हैं।

अस्तित्व की रक्षार्थ प्रत्येक मानव प्राकृतिक वातावरण को अपने अनुकूल करने या फिर स्वयं को उसके अनुकूल ढालने की विधियाँ अपनाता है। सांस्कृतिक मूल्य इसीलिए सार्वभौमिक और विशिष्ट दोनों हैं। क्यों? अस्तित्व के संरक्षण हेतु। आज प्रकृति की ही तरह संस्कृति भी समय सापेक्ष है। यह समय के

अनुकूल बदलती है। या यों कहे कि सतत प्रवाहमान है।

विश्वपटल पर अनेक तरह की संस्कृतियाँ उपलब्ध हैं। विभिन्न संस्कृतियों की तुलना करते हुए हमें निष्पक्ष रहना चाहिए।

प्रकृति और मानवीय संस्कृति यद्विप अन्यान्योश्रित है तथापि आज के मानव की महत्वाकांक्षा ने इस संतुलन को विकृत कर दिया है। इस विकृति का नाम ही तो प्रदूषण है। “पर्यावरण” शब्द में भौतिक और जैविक दोनों घटकों की अवधारणा है। उसमें प्रकृति के या दोनों घटक सजीव और निर्जीव शामिल हैं। भौतिक वातावरण में स्थल मण्डल, जल मण्डल और वायु मण्डल तीनों आ जाते हैं जिन्हें हमने अपने शुद्र स्वार्थ के कारण बहुत प्रदूषित कर दिया है और करते ही जाते रहे हैं। इन प्रदूषणों में अब एक सांस्कृतिक प्रदूषण भी है जो तीव्र गति से बढ़ रहा है।

मानव, पर्यावरण का एक अभिकर्ता होकर प्रक्रियाओं में परिवर्तन भी लाता है। प्राणियों पर पर्यावरण का प्रभाव एक बहुत बड़ी चुनौती है। अतः मानव का अस्तित्व प्रकृति के संरक्षण संवर्धन पर आधारित है अपनी संस्कृति के संरक्षण पर आधारित है। अतः उसे जैविक संरक्षण की बात कभी नहीं भूलनी चाहिए। उसे जीव हत्या ही नहीं पेड़-पौधों एवं सूक्ष्म जीवों की हत्या से भी बचना चाहिए क्योंकि अप्रत्यक्ष रूप से यह प्रकृति आत्मघात है अतः प्रवृत्ति को बचाओ! संस्कृति को बचाओ और प्राणियों को बचाओ, तभी स्वयं बच पाओगे।

—2/152, साकेत नगर, ब्यावर (अजमेर)

मो. 9460178511

कम से कम बुनियादी शिक्षा प्राप्त
कबला हव व्यक्ति का जन्मकिंदू
अधिकांश है, जिसके बिना वह एक
नागरिक के रूप में अपने कर्तव्य
को पूरी तरह से नहीं निभा सकता।

—मौलाना अबुल कलाम आजाद

ह र माँ-बाप की यह अभिलाषा होती है कि उनकी संतान का व्यक्तित्व ऐसा हो कि बड़े होकर वे जीवन की कठोरताओं, अभावों व असफलताओं के झंझावातों व थपेड़ों के बीच रहते हुए भी अपने जीवन को सुखी बना सकें। लेकिन यह तभी संभव है जबकि माँ-बाप स्वयं अपने व्यक्तित्व के आदर्शों को यथार्थ के रूप में विकसित करें। ताकि जीवन की हार जीत को बालक सहज रूप में व ढंग से स्वीकार करना सीख जाये। यह तभी संभव हो सकता है जब घर-परिवार में माता-पिता व शिक्षण संस्था में अध्यापक ऐसे अभ्यास व क्रिया कलापों को करवाने में तत्परता बरतें जिनमें बालक सहिष्णुता, आत्मनिर्भरता, सहकारिता एवं सदाशयता पूर्ण व्यवहार कुशलता के गुणों का अर्जन कर सकें। इसके लिए निम्नांकित बिन्दुओं पर पालकों को विशेष रूप से ध्यान देना अपेक्षित है।

अगर बालक में शारीरिक व मानसिक कोई जन्मजात न्यूनता है तो ऐसे बालक को समान योग्यता व क्षमतावान बालकों के साथ ही खेलने-पढ़ने की सुविधा व अवसर दें। अगर उनमें कुछ कुरूपता है तो आत्मविश्वास पैदा करके उसकी रुचि, अभिरुचि एवं क्षमतानुसार किसी विशिष्ट कार्य में आगे बढ़ने व कौशल हासिल करने को प्रोत्साहन दिया जायें। अंधों को कुशल संगीतकार बनते देखा गया है। सर्वगुण बालकों की संख्या बहुत कम होती है। लेकिन क्षमता व अभिरुचियों के अनुसार सलीके से काम सौंपने पर बालक अपनी कमी को दूसरे क्षेत्र में पूरी करके संतुलन बनाये रखने में सफलता हासिल कर सकता है। यह भी ध्यान रखना अपेक्षित है कि शारीरिक निश्कतता के कारण बालक को अपमान जनक फब्तियों व नामों के माध्यम से मजाक न बनाई जाये व चिढ़ाया न जाये। सामान्यतः ऐसी अन्यथा हरकतों से शारीरिक निश्कत बालकों में भावात्मक हीनता व आक्रोश जन्य कुंठाएँ भी पैदा हो जाती हैं जो व्यक्तित्व के सामान्य विकास में बाधक होती हैं।

बालक को उसकी समझ में कोई बात नहीं आने पर धैर्य के साथ उसकी कठिनाई समझकर उसकी विषय वस्तु को समझना चाहिए। न कि झुंझला कर उसे कूढ़ मगज, भौंदू, बुद्धू जैसे असम्मानित विशेषणों से विभूषित किया जाए। ऐसा करने से बालक का मनोबल

बाल विकास

पालकों की बालक के विकास में भूमिका

□ डॉ. गिरिजेश शर्मा

हिल जाता है और वे तरक्की करना छोड़ चुप रहना ही हितकर समझने लगते हैं। हाँ, अच्छे बच्चों की प्रशंसा करते वक्त पिछड़े बच्चों से तुलना करना भी उचित नहीं है। ऐसी तुलना से अच्छा बच्चा तो दम्भी और पिछड़ा बच्चा द्वेषी बनकर हीन भावना से ग्रसित हो जायेगा।

कई पालक बच्चों की हर वक्त बात-बात में आलोचना, डांट-डपट व धिक्कारने का सिलसिला जारी रखते हैं। इससे बालक लापरवाह हो जाते हैं। हरदम बड़बड़ाते रहने व कहासुनी का प्रभाव नहीं रहता। वे बच्चे सुनी अनसुनी करने लगते हैं एवं उपेक्षापूर्ण रूख अपनाकर पालकों के प्रति मनमानस में विद्वेषात्मक व प्रतिशोधात्मक सोच के शिकार हो जाते हैं। माँ बाप भी बालक को कपूत मानकर विरक्त हो जाते हैं। माँ बाप के मनमानस में अपनी ही भूल से पनपी-उपजी विरक्ति से उदासीनता बढ़ जाती है। इस प्रकार तिरस्कृत मेधावी बालक भी पिछड़ जाते हैं। बालक का जीवन निष्फल करने में क्रोधी व आदर्श विहिन पालकों की ही महती भूमिका होती है। असफलता ही सफलता की कुंजी है। गिर गिरकर ही सपाट दौड़ने की कला आती है। असफल होने पर कभी बच्चे को धिक्कारना नहीं चाहिए बल्कि उसे सफलता प्राप्त करने हेतु सार्थक सहयोग देना चाहिए।

बच्चों के साथ सम व्यवहार करना भी हितकर होता है। मेधावी, सुन्दर, चपल-चंचल बच्चे को अपने साथ ले जाना, उसकी हर ख्वाइश पूरी करना जहाँ बर्दाश्त या विपरीत स्थिति वाले बच्चे के लिए घातक होता है वही प्यारे बेटे के लिए घमंडी व एकलखोर होने के कारण बनता है। “गुड मैनेस” के अभाव में भी बालकों का व्यक्तित्व प्रभावित होता है और अच्छी भली शक्ल सूरत व सीरत के बच्चे भी अनाकर्षक बन जाते हैं। ठीक ढंग से बोलना खांसना, गला साफ करना, जम्माई लेना जहाँ “गुड मैनेस” की कोटि में आता है वहीं अपनी चीज संभालकर रखना वेशभूषा व केश विन्यास में सुरुचि व सुथरापन, ढंग से खाना-पीना,

वार्तालाप आदि माँ-बाप का रंग ढंग देखकर बालक सीखता है। कई एक बच्चे नाखून कुतरते हैं, अंगूठा चूसते हैं, कपड़ा चबाते हैं इससे मुखाकृति व दंतावली विकृत हो जाती है इस ही प्रकार आँख बिचकाना, होठ चबाना, गले से विशेष आवाज करना यथा खौ-खौ करना, पेट निकाल कर कुबड़े होकर, कंधे ऊँचे करके चलना, तेज आवाज में कर्ण फाड़ बोलना, टेढ़े पाँव पटकते हुए चलना आदि कुटेबों के अभ्यस्त बालकों में भी शारीरिक व हास्यापद कुरूपता आ जाती है जो उनको बाह्य छवि को बिगाड़ कर उनक व्यक्तित्व रूपी सोने की थाली में लोहे की कील ठोकने के समान है। अपने मनोभावों को प्रगट करते वक्त मुट्ठियाँ भींचकर आँखे तरेकर, दांत पीसकर, पैर पटककर, धिधिया कर रोकर क्रोध प्रगट करने से भी मुखाकृति कांति हीन व बेडोल होती है। जिनका बातचीत का ढंग सभ्य व सहज होता है उनसे बतियाना व संगति करना भला लगता है अतः पालकों को अपने आप की प्रस्तुति भी भला लगने जैसी करनी चाहिये ताकि बालकों को बाह्य आकृति में दोष न आ सकें। यदाकदा पारिवारिक हीनता या परिवार जनों के शारीरिक दोषों का भी बालकों पर प्रभाव होता है। अतः बालकों के जीवन का आरम्भ भी अनुकूल वातावरण में होने से व्यक्तित्व विकास सम्यक रूप से होता है।

रामायण की एक पंक्ति “समान ही सौ कीजिये ब्याह, बैर और प्रीति” के अनुसार भी पालकों को अपने बच्चों को यथा संभव समान स्थिति व मान मार्यादा के परिवार के बच्चों की ही स्कूल व बाहर संगत करना श्रेयकर होगा। वेशभूषा खानपान जैसी अन्य बातों की श्रेष्ठता या निकृष्टता भी व्यक्तित्व विकास में बाधक हो सकती हैं। माँ की व्यस्तता (खासकर एकल परिवार व नौकरी पेशा की) पिता की जल्दबाजी, घर में एकान्त की कमी, हम जोली या अनुकूल मनोरंजन का अभाव, परिवार जनों में आपसी कहासुनी व खैचतान, बड़ों में छलकपट, जीवनोंपयोगी आवश्यकताओं का अभाव, पारिवारिक असन्तोष आदि घटक ऐसे

है जिनसे बालक के व्यक्तित्व विकास में बाधा आती है।

बिना बच्चों को घुटनशील, भयभीत, डांट फटकार, बालपन में माता-पिता के प्रेम से वंचित, बच्चों द्वारा तिरस्कृत माहौल में पलना व बीना पड़ता है वे बाल समाज तक में अपना स्थान नहीं बना पाते। उनके मन मानस में हीन भावना व्याप्त हो जाती है। या तो ऐसे बच्चे दबबू और मुँह छिपाने वाले बन जाते हैं या उच्छ्वल, विद्रोही व उद्वेग बन जाते हैं। बिनने भी अपराध वृत्ति के एवं समाज कंटक लोग होते हैं यदि उनके बाल्यकाल को उधाड़ा जाये तो भारी अभाव की कथा व व्याख्या उभार होगी।

अब तक की उपरोक्त चर्चा से पाठक इन बाल मनोवैज्ञानिक तथ्यों से सहमत होंगे कि बालक के सम्यक विकास में माता-पिता व गुरुजनों का स्नेह, सुरक्षा भावना संगति, प्रोत्साहन आदि बातें निहायत जरूरी हैं जितना पौष्टिक भोजन व ग्रीष्म के अनुकूल वस्त्र जिस बच्चे का बचपन उलझ रहा है। वह बड़ा होकर भी जीवन में अस्त व्यस्त सा ही रहता है। बिनासु वृत्ति, प्रतिस्पर्धा की भावना, संतुलित प्रशंसा, यश प्राप्ति की चेष्टा, दिनचर्या के प्रति सजगता, बाह्योन्मुख सजगता आदि बातें बालक को स्वाभाविक होने के लक्षण होते हैं।

बिना बच्चों की ज्यादा उपेक्षा, मारपीट व आलोचना होती है वे अपने बड़ों के व्यवहार से खूणस खाकर अवज्ञा करके बदला लेते हैं। जबकि जीवन में अनुकूल परिवर्तन चरित्र की पोषीदा शक्तियों को उभार देता है। अतः पीड़ित बालकों को छात्रावास में भेजना भी उचित कदम होगा ताकि परिवर्तन सार्थक हो दमन द्वारा बच्चों का मुँह बंद करना उनके व्यक्तित्व को भी मूक व पंगु बना देता है। हमें उनकी समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहकर उनके भावनात्मक व क्रियात्मक सहयोग देना होगा। तभी उनका अपने जीवन में मानवीय मूल्यों व संवेदनाओं के साथ कठिनाइयों से जूझते हुए कर्तव्य पालन करने लायक व्यक्तित्व व कर्तव्य का विकास होगा। आज यदि सबसे ज्यादा पीड़ित है तो वह है बच्चा। उसकी पीड़ा हरण करने हेतु पालकों की सजगता व लाभकर सोच जरूरी है।

—बी-68, हवेली जगन्नाथ,
अर्जुन लाल सेठी नगर, कपूर-302004
मो. 9414489619

श्रद्धांजलि

वीतराग अवध बिहारी वाजपेयी

□ शिवरतन धानवी

प्रा वमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर में अपर निदेशक के पद पर कार्य करने के बाद श्री अवध बिहारी वाजपेयी 30 नवम्बर 1981 को सेवा निवृत्त हुए। तब से वे अपने निवास स्थान उदयपुर में ही रह रहे थे। पिछली 26 अक्टूबर 2013 को मात्र चार घंटे की अस्वस्थता के बाद उनका देहावसान हो गया। वे स्वतंत्रता सेनानी थे इस कारण स्वामीय प्रशासन ने उन्हें पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदा दी।

न कष्ट देखा न कष्ट दिया। खरलता और सादगी की प्रतिमूर्ति थे। मेरे परम मित्र थे। मेरी उनकी मित्रता का प्रमुख आधार उनका स्वाभाविक होना था। कितने ही प्रशासनिक पदों पर रहते हुए वे अपर निदेशक के पद तक पहुंचे थे, लेकिन ऐसे बीतरागी साधक थे कि नाना प्रकार का साहित्य पढ़ने को समय निकाल ही लेते थे। निष्पक्ष और निर्भीक थे। एक निदेशक ने निर्भीकता दिखाई तो वह घटना जीवन भर याद रही। मुझे जो उनका अंतिम पत्र आया 2-10-13 का उसमें उन्होंने उन निदेशक जी को याद करते हुए लिखा कि शिक्षामंत्री ने सूचियां भेजीं तो उन्होंने शिक्षामंत्री से साफ कह दिया कि वे वही करेंगे जो उनके अधिकार में हैं। मतलब साफ था कि वे उन सूचियों से नहीं, अपने स्वयंसेवक से परिचालित होंगे। यह निर्भीकता जो निदेशक जी ने दिखाई वह अवधजी को बहुत प्रिय लगी। अपने अंतिम पत्र में मुझे यह घटना बताई।

वे स्वयं भी मर्यादा के प्रतीक रहे। स्कूल हो चाहे कार्यालय या अपना घर-परिवार, किसी भी मत-विमत से सदा दूर रहे। स्वतंत्रता आन्दोलन 1942 में 15 वर्षों किशोर अवध बिहारी भी सक्रिय सहभागी बने, दो सप्ताह जेल में रहे। दूसरी बार पुनः स्वतंत्रता आन्दोलन की प्रचार सामग्री बांटने के आरोप में एक माह जेल में रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मित्रों के अत्यधिक अग्रह व दबाव रले ही निरपेक्ष उन्होंने त्रापण लेना स्वीकार किया। विनम्र बहुत थे। कम बोलते थे। हालांकि हमने सदैव उन्हें



खादी के घोटी-कुर्ते में ही देखा फिर भी, उनके मेरे जैसे मित्रों को कभी पता नहीं चला कि वे स्वतंत्रता सेनानी थे। मुझे तो उनके छोटे भाई कैलाश बिहारी से उनके देहांत के बाद यह सब ज्ञात हुआ। निजी जीवन की बातें तो वे कभी करते ही नहीं थे। सुख-दुख कुछ भी नहीं। सचमुच बीतरागी थे। किताबों की, ज्ञान की, बातें करते थे। गंभीरता से औरों को सुनते थे। कभी-कभी ही मुस्कराते थे। हंस बाते कभी तो हमारी बाहें खिल जाती थीं।

स्कार्टिंग, खेल-कूद आदि से बूझे रहे, केम्प फायर आदि कार्यक्रमों में सक्रिय स्रोत्साह माग लिया। अध्यात्म और दर्शन में भी गहरी रुचि रही। हिंदी और संस्कृत दोनों में एम.ए. किया। प्रशासनिक कुशलता, परिश्रम व ईमानदारी की छवि से प्रभावित होकर निदेशक श्री एल.एन.गुप्ता इन्हें 1973 में सीकर से बीकानेर वि.शि.अ. पद पर ले आए। माध्य. शिक्षा बोर्ड, अजमेर के सचिव भी रहे, उपनिदेशक समाज शिक्षा भी हुए और 1979-81 ड्राई वर्ष निदेशालय में अपर निदेशक का कार्य कर सेवानिवृत्त हुए। स्वाभिमान उनके रोम-रोम में व्याप्त रहा। सादगी ऐसी कि अपर निदेशक रहे तब भी साइकिल से दफ्तर आते थे।

स्पष्टवादिता उनके स्वभाव में सदैव रही। पाखंड-आडंबर, अनावश्यक औपचारिकताओं से उन्हें हमेशा परहेज रहा, हालांकि इसमें उन्हें कई बार हानि भी उठानी पड़ी। दृढ़ता उनकी चापित्रिक सफलता का अंश था। वह स्वाभिमान संत शान से चिया और राजकीय सम्मान के साथ शान से विदा हो गया। मैं एक उच्च कोटि का आत्मीय स्वाभाविक मित्र हो गया।

—मोची स्ट्रीट, फलीदी-342301
मो. 94161621878

अंशोपप

शिक्षा दिसम्बर, 2013 में श्रीमती गान्धी राणा के लेख 'गणित का रोचक शिक्षण' में सहजन से अभिनव कुमाक नाम छप गया। कुमाया संशोधन कर रहे।
—वर्षिक संपादक



पुस्तक समीक्षा

शिक्षा और जीवन दर्शन/भैरव लाल शर्मा/
ग्रन्थ विकास, जयपुर/संस्करण 2013/
पृष्ठ सं. 108/मूल्य ₹ 150.00

अभी-अभी जिस खास पुस्तक से रु-ब-रू होने का अवसर मिला, वह है 'शिक्षा और जीवन दर्शन'। इसके प्रणेता हैं सुधी चिंतक विचारक और राजस्थान राज्य शिक्षा सेवा के विभिन्न प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित करने वाले अध्येक्षणीय व्यक्तित्व के धनी श्रीयुक्त भंवरलाल शर्मा। जर्मन राजनीतिज्ञ विसमार्क कहता था- "लोग कहते हैं, हम अपने अनुभवों से सीखते हैं, मैं कहता हूँ, मैं दूसरों के अनुभवों से सीखता हूँ।" इस कथन पर गौर करते हुए चलें तो शिक्षा अनुभवों का ही सतत विस्तार है। कबीर ने भी समय-समय पर दोहराया- "अनमै साँचा। अनुभव ही शिक्षक है, अनुभव ही सच्ची शिक्षा भी।

लेखकीय सीचन्य से प्राप्त 'शिक्षा और जीवन दर्शन' विमोचन- 14 सितम्बर, 2013 (हिन्दी दिवस) ऐसी ही पुस्तक है, जिसमें अनुभव एवं अभिव्यक्ति का बड़ा ही सुखद संगम विद्यमान है। साथ ही इसी बहाने इस कथन की पुष्टि भी हो आती है कि कुछ लोग, कभी सेवानिवृत्त नहीं होते... Some persons never retire." हाँ, निदेशक पद से पच्चीस वर्ष पूर्व (सितम्बर 1988) सेवानिवृत्त हुए शर्मा जी के चिंतन की सार-रूप प्रस्तुति का इतने अंतराल के बाद पाठकों तक पहुँचना बरक्स ही आश्चर्यचकित कर सकता है।

साहित्यविद प्रो. हरिमोहन शर्मा के 'प्राक्कथन' और स्वयं लेखक की 'प्रस्तावना' के क्रम में यह कृति 'पंगडंडियाँ' 'सामाजिक ध्वन्य', 'चिंतन', 'परस्वन' और 'जन-समाज' जैसे पाँच खंडों में विभाजित है। लगभग सभी पुष्ठों से आद्योपांत गुंजते हुए यह बात सहज ही रेखांकित हो उठती है कि उम्र के इस पड़ाव 83 वर्ष पर पहुँचकर भी कृतिकार का स्वाध्याय समा नहीं है। इसीलिए वे राष्ट्रपिता बापू की पत्रकारिता, जे. दास, कोठारी आयोग, प्रथम (N.G.O.) आदि की रिपोर्टों के साथ-साथ

अनेक भारतीय एवं विदेशी शिक्षा शास्त्रियों-मनोवैज्ञानिकों को उद्धृत करते हुए शिक्षण-अधिगम की अनुभूत अवधारणाओं को स्थापित करते चलते हैं।

प्रबुद्ध पाठकों को याद होगा कि बापू ने 3R (Reading writing and arithmetic) वाली ब्रिटिश शिक्षा योजना का विरोध करते हुए 3H (Head, heart and hand) की नीति को प्रस्तावित किया था। श्री शर्मा पुस्तक के 'चिंतन' खंड में लिखते हैं- "महात्मा गाँधी ने अपने जीवन में कपनी और कर्मी में कभी अंतर नहीं किया। ...20वीं सदी में यदि कोई ऐसा व्यक्ति उत्पन्न हुआ, जिसका हाथ हर भारतवासी की नन्म को पहचानता था और हर भारतवासी के हृदय की घड़कन को सुनने में समर्थ था, तो वह था केवल गाँधी।"

शर्मा साहब यहाँ अध्यापन को एक चुनौती के रूप में लेते हैं। साथ ही यह भी मानते हैं कि सार्वजनिक प्रशस्ति अथवा पुरस्कार में एक गौरव का भाव विद्यमान रहता है, किन्तु यही पुरस्कार सम्मान कभी-कभी शिक्षक के व्यक्तित्व में ऐसे अहंकार को जन्म दे जाता है जो उसके विकास की सहज गति को बाधित कर देता है। जबकि इसी के उल्ट एक अन्य विचार भी है जिसे यों ही नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। ...और वह है- "The reward of good work is to do more work." इसी तत्वात्मक सोच को रेखांकित करते हुए श्री शर्मा कहते हैं कि पुरस्कार से शिक्षक का दायित्व बढ़ता ही है, घटता नहीं। इस कथन में एक खास स्वीकारोक्ति का भाव निहित प्रतीत होता है।

'शिक्षा और जीवन दर्शन' ऐसी कृति है जिसमें लेखक ने 'जन-समाज' खंड के अंतर्गत राजस्थान की मरुभार के अनुभवों को प्रस्तुत करते हुए जल और जन जीवन को नारीकरी से जानने समझने का उपक्रम किया है। उन्हीं के मार्मिक शब्दों में "मरुस्थल के गाँव-गाँव पानी के गीत बने हुए हैं..."

श्री शर्मा के प्रस्तुत संकलन में काव्य की गहन अनुभूति एवं विविधता यत्र-तत्र विद्यमान है, फिर भी इसके विस्तृत फलक पर शैक्षिक विमर्श की सार्थकता ही सर्वोपरि रही है। इस दृष्टि से विशिष्ट आयोजन 'पंगडंडियाँ' प्रेरणास्पद एवं महत्वपूर्ण बन पड़ा है। यह खंड एक भेंट-बारवा

है। यों कहें कि यह अनूठा साक्षात्कार है, लंबी बातचीत है। यह इसलिए भी ध्यान आकृष्ट करता है कि बहो वार्ता के सूत्रधार बने हैं हिन्दी साहित्य के प्रख्यात हस्ताक्षर डॉ. राकेशमोहन भटनागर। इस बातचीत में कृतिकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कई अक्षुभे पक्ष सामने आ गए हैं। "शिक्षा में आना संयोग मात्र था, परन्तु एकदम संयोग मात्र नहीं... एक प्रकार का सम्मोहन था।" बात यहाँ से शुरू होकर सहज ही शिक्षण अनुभव, स्वाधीनता आंदोलन, अध्यापन-अध्यापन के अंतर्संबंध तक पहुँचती है। कहते हैं- "One who dares to teach, should never cease to learn." बाहिर है, वे बहुधा इस बहुश्रुत- बहुप्रति कथन के पक्ष में ही खड़े दिखाई देते हैं और भेंटवार्ता में आगे चलकर बड़े ही आत्म विश्वास के साथ यह भी बोड़ देते हैं- "मैं जो कुछ इस समय कह रहा हूँ, उस सबको मैंने जीया है। मेरे कहने का आधार भी वही है।"

शिक्षक-शिक्षार्थी, घर-परिवेश, पाठ्य पुस्तकें, पाठ-योजना, आब का भारत, नवाचार, संस्था प्रधान की भूमिका आदि अनेक बिंदु हैं जो 'भेरे अनुभवों का शिक्षा संसार' शीर्षक तले उभर कर सामने आए हैं। इसी क्रम में 'यह दिल मगि मोर' जैसी ज्वन्य-रचना भी पठनीय और संदेश परक प्रस्तुति बन गई है।

'शिक्षा और जीवन दर्शन' के बहुआयामी संयोजन के केन्द्र में मूलतः 'बच्चा' यानी शिक्षार्थी ही है। सीखना बच्चे की नैसर्गिक प्रवृत्ति है; सीखना उसका अधिकार भी है। शिक्षा शास्त्री विलियम हल के अनुसार- "अगर हम बच्चों को बोलना सिखा रहे होते तो वे कभी नहीं सीखते।" सार यही है कि बच्चे स्वयं ही सीखते हैं। हम उन्हें सिखाते नहीं, केवल अवसर उपलब्ध करवाते हैं। जस, वातावरण रचते हैं। ...और यही शैक्षणिक सूचननात्मकता है। वस्तुतः आकर्षक एवं संजीवनी से परिपूर्ण मुख पृष्ठ, सार्वक कव्य, बोधगम्य भाषा, स्तरीय कागज व मुद्रण, आकार-प्रकार आदि ने इस कृति के समग्र स्वरूप गेट-अप को जिस तरह निखार दिया है, उससे विश्वास किया जा सकता है कि जहाँ-जहाँ भी यह पहुँचेगी, वहाँ-वहाँ इसका स्वागत होगा। -भगवती प्रसाद गौतम

1-त-8 'अंकि', ददभाड़ी, फोट
मो. 9461182571

जीवन का मूल्य श्रीमद्भागवत/बाल कृष्ण राव/अंशुल प्रकाशन, बोहराजी का बाग, टोंक रोड़, जयपुर-15/संस्करण 2012/पृष्ठ सं. 2008/मूल्य ₹ 400

जीवन के मूल्य श्रीमद्भागवत श्री बाल कृष्ण राव द्वारा लिखित 14 “चौदहवीं” पुस्तक है जो प्रकाशित हुई है इससे पूर्व इनकी लिखित भारतीय संस्कृति के संदर्भ कोश भारतीय संस्कृति के सोपान हमारे धार्मिक आस्था स्थल आदि 13 तरह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है एवं तीन पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं साथ ही आपने कामवन माहत्म्य पुस्तक को संपादित भी किया है।

श्रीमद्भागवत भगवान श्री कृष्ण का वाङ्मय स्वरूप है जैसाकि आपको सर्व विदित है कि इसके श्रवण मात्र से ही कल्याण की प्राप्ति हो जाती है। तत्त्व विवेचन, ब्रह्म ज्ञान का निरूपण, भगवान श्री कृष्ण के सगुण, साकार व साक्षात् दर्शन का उल्लेख श्रीमद्भागवत में जी में आता है जिसका इस पुस्तक में सजीवता से सार रूप में वर्णन किया गया है। साथ ही जीवन में सत्य एवं मूल्यों की भी विवेचन भी सरल भाव में की गयी है।

आम आदमी इन मूल्यों से स्वयं को जीवन को उन्नत कैसे बना सकता है इसका सरल रूप में विवेचन किया गया है। पुष्टि मार्ग में श्रीमद्भागवत पुराण को अन्य संप्रदायों की अपेक्षा अधिक महत्व प्रदान किया गया है। पुष्टि मार्ग के अनुयायी परमात्मा में भ-भक्ति, ग-ज्ञान, व-वैराग्य एवं त-त्याग की भावना को उत्पन्न करने की शक्ति है जो कल्याण के मार्ग की ओर हमें अग्रसर करता है।

पुस्तक में तीन मंत्रों का महत्व प्रतिपादित किया गया है-हरे राम हरे राम राम हरे हरे। ॐ नमोः भगवते वासुदेवाय। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। श्री कृष्ण शरणं मम का पाठ सतत् निरन्तर करना ही वांछनीय बताया गया है। श्री कृष्ण शरणं मम- मानव जीवन को चरम सफलता हेतु ईश्वर के प्रति पूर्व समर्पण होना जरूरी है तथा यह श्लोक उसे मंजिल तक पहुँचाने वाला राज मार्ग है।

लेखक द्वारा “जीवन के मूल्य श्रीमद् भागवत- में अपने शब्दों में भारत का इतिहास, भूगोल, संस्कृति आदि का किस प्रकार विकास हुआ उसकी गाथा को सार रूप निरूपित किया गया है। कथासार के अंतर्गत प्रत्येक स्कंध में प्रत्येक अध्याय के मुख्य बिन्दुओं को उभारा है जिसके लिए लेखक के अन्य ज्ञान, सटीक शब्द

चर्चन एवं तार्किक क्षमता की भूरी-भूरी प्रशंसा की जानी चाहिए। क्योंकि पुस्तक में पृष्ठ संख्या-29 पर द्वितीय स्कंध के तीसरे अध्याय में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए किस-किस देवता की स्तुति की जानी चाहिये को स्पष्टतः समझाया गया है वहीं तृतीय स्कंध में पृष्ठ संख्या-51 पर 26 से 32वें अध्याय तक आत्म ज्ञान को निरूपा है तथा प्रत्येक व्यक्ति को इसका मनन करना चाहिए आदि बताये गये हैं।

दसवां स्कंध (पूर्वाद्ध) में श्री कृष्ण की कथाओं एवं लीलाओं का वर्णन किया गया है। बारहवें स्कंध का तेरहवां अध्याय श्रीमद्भागवत का अंतिम अध्याय है।

सार रूप में बताया गया है कि कर्मों की निवृत्ति, ज्ञान, वैराग्य एवं भक्ति से ही संभव है। भागवत माहात्म्य (फल-श्रुति) को भी उजागर किया गया है। जीवन मूल्यों के वर्णन में ज्ञान, कर्म व भक्ति, आश्रम धर्म व्यवस्था, धर्माचरण आदि की व्याख्या तो परिशिष्टों के माध्यम से प्रमुख वंशों के बारे में, आख्यान की सूची आदि की गयी है जो पाठकगण को सुविधा प्रदान करता है।

पुस्तक में भगवान श्री कृष्ण की लीला स्मृति ग्रन्थ श्रीमद्भागवत को ही आधार स्वरूप रख प्रस्तुत किया गया है जिसका कथा भाव के प्रमुख है ही पुस्तक के अन्य विषय भी जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी है-वेहै-परिशिष्ट 1 से 15 एवं अध्याय 6 से 11-जीवन के मूल्य। पुस्तक श्रीमद्भागवत का संक्षिप्त सार है तथा लेखक ने इसमें “गागर में सागर” भरने का प्रयास किया है। साथ ही लेखक द्वारा ॐ नमोः भगवते वासुदेवाय तथा श्री कृष्ण शरणं मम का पाठ सतत् निरन्तर करने की सलाह दी गयी है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि लेखक ने “गागर में सागर” भरने का प्रयास किया है श्रीमद्भागवत को जीवन के मूल्यों से जोड़कर प्रस्तुत किया है जो पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है। श्रीमद्भागवत के कथासार को सरल शब्दों में पाठकों तक पहुँचाने का यह सराहनीय प्रयास है। मूल्य पृष्ठ संख्या को देखते हुए अधिक है लेकिन विशालता को सटीकता से सुगमता में समेटने के प्रयास के मद्देनजर स्वाभाविक है।

-विजय शंकर आचार्य

जिला शिक्षा अधिकारी, आचार्यों का चौक, बीकानेर
मो. 9414426060

वैदेही/राज श्री अग्रवाल/वाङ्मय प्रकाशन, बाङ्मय हाउस ई-77617, लाल कोठी योजना, जयपुर-77617/संस्करण प्रथम 2010/पृष्ठ सं. 150/मूल्य ₹ 128

पेशे से अधिवक्ता परन्तु रुचि से साहित्य सिरजनहार राजश्री अग्रवाल द्वारा लिखित ‘वैदेही’ एक उपन्यास है जो 128 पृष्ठों में व्याप्त है। उपन्यास महर्षि बाल्मीकि के पौराणिक आख्यान से सम्बद्ध है जिसमें वैदेही के निर्वासित जीवनको लेकर ऐसे मूलभूत व अनसुलझे प्रश्न हैं जो संवेदित मन के अंधकार में बिलखते रहे तथा जिन्हें मुख्य पृष्ठ तो क्या हाशिये पर भी स्थान नहीं मिला। नारी की अंतर्वेदना को इस उपन्यास में वाणी देने का महती कार्य विदुषी लेखिका राजश्री अग्रवाल ने किया जो प्रशंसनीय है।

शताब्दियाँ बीत गई ‘पर नारी जीवन की त्रासदी अभी भी बरकरार है। नारी के साथ छल-प्रवंचना तथा घोर प्रताड़ना आह भी उसी तीव्रता के साथ घटित है जैसी पूर्व में रही। वही विडम्बनापूर्ण जीवन तथा वही सनातन यातना का दौर जिसे देखकर सहसा मन कह उठता है-

अबला जीवन हाथ तुम्हारी यही कहानी।

आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

अस्तु, प्रस्तुत औपन्यासिक कथानक में सीता के माध्यम से नारी की सनातन पीड़ा जीवन्त रूप में अभिव्यंजित हुई है। सीता की प्रतिमूर्ति नारी नित्य प्रति दण्डित होती है; अपनो के हाथों दंश झेलती है। राम के राज्यतिलक के बाद लोकापवाद से बचने के लिये सीता का राम के द्वारा परित्याग इस उपन्यास में पुरुष-मन के निर्मम रहस्यमय तथा बन्द प्रकोष्ठों की जानकारी कराना, इस उपन्यास का उद्देश्य है। इस कथानक से यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि पुरुष अपनी व्यवस्थाओं को बनाये रखने के लिए सच को कहने की हिम्मत न जुटाकर येन-केन प्रकारेण नारी को बलि का बकरा बनाता है। राम द्वारा सीता के परित्याग की घटना निसन्देह नारी के समूचे अस्तित्व की अवमानना है।

सफल मनोविश्लेषणवादी प्रख्यात लेखिका ने राम के अन्तर्द्वन्द्व को पहचानने में पर्याप्त संवेदना का परिचय दिया है- ‘राम के मन में एक अन्तर्द्वन्द्व जो पिछले कई वर्षों से अपने व्यक्तिगत और लोकजीवन के बीच चल रहा

था... सीता के इस तरह गमन से एक अपराधबोध... सीता के प्रति लोक इच्छा से हुए अपराध भावना से मिलकर चरम सीमा पर पहुँच गया। उपन्यास में समर्थ लेखिका ने पृष्ठ 27 पर गीतम नर्धिव अहिंसा के बीच पतित अग्रिय प्रसंग को स्मरित करवा है-

‘यह सत्य है कि गीतम को अपनी पत्नी की निष्कलंकता का पता लगा गया था किन्तु प्रत्यक्षातः अहिंसा का अन्यत्र सहवास भी बाहिर था। अतः लोकापवाद का भय समझ था कि गीतम अपनी अद्वितीय सुन्दरी पत्नी का मोह न त्याग सके।

अन्त में इसी प्रसंग में लेखिका ने शंका का समाधान करते हुए समीचीन उत्तर दिया है- ‘महर्षि पत्नि.....उससे बड़ा मान.....वह अकेले गीतम का क्षेत्र नहीं बल्कि समाज का क्षेत्र है। गुरुदेव बाल्मीकि के उक्त कथन ने पुत्र कुश के हृदय में उठे प्रश्न का कहीं तक उत्तर दिया यह तो उपन्यास में वर्णित स्थिति से पता चलता है- ‘कुश गुरु के चरणों में सिर रखकर लगभग रो दिया और गीली पलकें होते ही नींद उड़ गई। (पृ.27 अंतिम पैरा)

कहना न होगा कि लेखिका को तर्क संगत कथनों में उद्धृष्टित करने में पर्वस सफलता शायद इसलिए मिली है कि संवेदित साहित्यकार तथा अभिव्यक्ति स्वरूप का उनके व्यक्तित्व में मणिकर्तृत्व योग रहा। राम हो या सीता अथवा लव-कुश सभी उनकी तुलिका से उकेरे हुए शब्द चित्रों के माध्यम से उदात्तता सिद्ध करते हैं तथा तर्क की कसीटी पर भी खरे उतरते हैं। एक शब्द चित्र की रम्य झोंकी देखिये-

‘सीता ने अंतिम साँस तक जनता के न्याय को स्वीकार नहीं किया... यहाँ तक कि राम ने इस न्याय पर विशुद्ध राचा बनकर जो राजमुद्रा लगा दी थी। उसने राम के इस न्याय को भी स्वीकार नहीं किया... और अपना निर्णय खुद किया जो कि इतना अद्भुत था कि सब हाथ मलते रह गये....।’ (पृ.124)

गुरुदेव का यह कथन अत्यन्त मार्मिक, प्रेरणादायी एवं उद्देश्य परक है- ‘सीता ने उस कठिन पल में भी अपना व्यक्तिगत कर्तव्य जो राम के प्रति या सूर्यकुल के प्रति था उसे नहीं छोड़ा और अपमान, कष्ट, मानसिक वेदना शून्यता से भरे जीवन में भी तुम्हें जन्म दिया... कुशल सुवराज के रूप में शिक्षित किया।’ (पृ.125 प्रथम पैरा)

सीता की अन्तरात्मा एवं चित्रण के समान उज्ज्वल-रूप में दिखलाना कुशल लेखिका के प्रयास को साधुवाद का पात्र बनाती है। निर्विवाद रूप से उपन्यास की भाषा-शैली स्पष्टशील है। पाठक के मन को निरामय बनाये रखना उपन्यास की गतिशीलता की रक्षा है। लव व कुश के रूप में बाल मन का विश्लेषण सजीव बन पड़ा है। उपन्यास में नारी-विमर्श के लिये पर्वस अवकाश है तथा आगे इस नाचुक मुद्दे के द्वारा खुले छोड़ता है ताकि मंचन जारी रहे, तथा अंततः इतना उन्मास उत्पन्न हो कि फिर अकारण किसी नारी को लोकापवाद की चपेट में धीषण रूप से प्रताड़ित न होना पड़े। सराहनीय एवं प्रेरणादायी प्रयास हेतु सम्माननीय लेखिका की हार्दिक बधाई। इस आशा के साथ कि आगे भी उनकी साहित्य-साधना नारी को निर्द्वन्द्व जीवन जीने के लिये अवलम्ब बनेगी। साव-सच्चा उत्तम, मुखपृष्ठ सारार्थित तथा वर्तनी गत अशुद्धियों के परित्यक्त की अपेक्षा थी।

—डॉ. डा.कृष्णलाल गुप्ता
वही वाली गली, म्यानीपान मोहल्ला, परतपुर
मो. 95644-223007

प्रेम प्रसंग

श्रममेव जयते

□ गुरुजीत सिंह बराड़

जो धीमी उन दिनों दक्षिण अफ्रीका में रह रहे थे। एक सत्वाग्रह आन्दोलन के सिलसिले में उन्हें जोहान्सबर्ग की एक चेल में कैद कर दिया गया। गाँधी तो गाँधी ही थे। जैसा घर-वैसी चेल। खैर, बात वहाँ कैदियों को दिए जाने वाले शारीरिक काम की है। काम साँपा जाता और कैदी नुक्ताचीनी करते। कैसे न कैसे काम से बचने की गलियाँ ढूँढ़ते। हमारे गाँधी मीन रहकर जो भी काम मिलता, उसे पूरा करते, पूरे मन से, पूरी ताकत से। जब काम पूरा हो जाता तो चेल अधिकारियों से और काम की मांग करते अथवा साथी कैदियों की उनके काम में मदद करते।



एक दिन चनाब गवर्नर निरीक्षण करने आए। चेल अधिकारियों से मिले फीडबैक के आधार पर कैदी महात्मा गाँधी से पूछा, “मिस्टर, तुम्हें यहाँ कोई दिक्कत तो नहीं है ? यदि कोई परेशानी है तो मुझे बताओ।”

“मेरी सम्पूर्ण क्षमता के मुताबिक काम नहीं मिलता। बस थोड़ा काम और दिलवा दें। बाकी कोई दिक्कत नहीं है।” गाँधी मुस्कते हुए बोले।

गवर्नर दंग रह गया। जो चेल अधिकारियों ने बताया था, वह सच निकला। गवर्नर के लिए वह किसी अचमसे से कम नहीं था। एक तरफ तो लोग ‘हाय काम-हाय काम’ का रोना रो रहे हैं और इधर गाँधी और काम चाह रहे हैं। गवर्नर ने कहा, “मिस्टर गाँधी, जब अन्य लोग काम से दुखी होकर कम काम का निवेदन कर रहे हैं। वहीं तुम अतिरिक्त काम क्यों चाह रहे हो।”

“...इसलिए श्रीमान की कम काम करने से कहीं मेरी जीवनदायनी ऊर्जा व प्रेरणा समाप्त न हो जाए, क्योंकि मुझे हमेशा तो चेल में रहना नहीं है।” गाँधीजी ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

गाँधीजी के मुँह से जीवन के प्रति सकारात्मक सोच एवं श्रम के प्रति प्रेम की बातें सुनकर गवर्नर बड़ा प्रभावित हुआ इस प्रकार जीवन को ईश्वर का उपहार मानकर कठोर परिश्रम के लिए स्वयं को प्रस्तुत करते हैं, वे महात्मा गाँधी बनते हैं और ऐसे महात्मा को एहमिया का गौरव प्राप्त होता है।

—प्रधानाचार्य
ए.ज.मा.वि., तामकोट (श्रीगंगानगर)
मो. 9414432317

लो एक साल और विदा हो गया। कैसे पँख लगाकर उड़ गया इतना सारा समय। लगता है कि कल ही तो स्वागत कर रहे थे हाल ही में हम से विदा हो कर जाने वाले इस वर्ष का। वर्ष 2013 अपनी 365 दिन की यात्रा कर इतिहास के पेटे समा गया और हमें दे गया अगवानी करने वर्ष 2014, वर्ष 2013 समीक्षा एवं मूल्यांकन करने के लिए तथा वर्ष 2014 नियोजन व क्रियान्वयन करने के लिए। समीक्षा इस बात की कि क्या कुछ सोचा (नियोजन) था और कितना कुछ कर पाए तथा नियोजन नए वर्ष में किए जाने वाले कामों का। यह नियोजन संकल्प के रूप में होना चाहिए जिसमें दृढ़ इच्छा शक्ति एवं आत्मविश्वास की उपस्थिति अवश्य हो। वर्ष 2013 एवं 2014 आपस में भाई ही तो हुए। वर्ष 2013 बड़ा व 2014 छोटा, परस्पर अग्रज व अनुज। देखो क्या कह गया बड़ा भाई छोटे भाई को। जरा ध्यान से सुनिए। वह कह रहा है—
बढ़ाना कदम/सावधान होकर/गति व चाल को रखना/नियमित व/निरन्तर/और हाँ/जो काम धरतीवासी/पूरा नहीं कर पाए/मेरे होते/उन्हें पूरा करने में/तुम बनना उनका/सारथी/तो लो सम्भालो/बागडोर/तुम्हें आशीर्वाद/मैं तो चला/मैं तो चला....

मायूस नहीं मासूम होकर ये बोल बोल जाने वाले वर्ष ने। मैंने सुना। आपने सुना। हम सबने सुना। मैं किंचित चिन्तनशील हुआ कि कानों में फिर कोई बोल लगे गूँजे। अरे कौन बोला अबकी बार। ध्यान लगाया। अरे, यह तो नया वर्ष है। वर्ष 2014। क्या कह रहा है नव वर्ष। कान लगाकर सुनो। बड़ी विनम्रता और उदारता के साथ निवेदन कर रहा है। अपने आने की दस्तक देकर बड़े भाई को विश्वास दिला रहा है—

रखना मुझ पर विश्वास/पूरी करूँगा सबकी आस/मैं चलूँगा आपके/पद चिह्नों पर/गति व चाल/को रखूँगा निरन्तर/धरतीवासियों के लिए/बनूँगा सारथी/उनके संकल्पों को/पूरा करने में/रखना मुझ पर विश्वास/आपको प्रणाम/मेरे भइया—बड़े भइया...

आगत और विगत वर्षों के इन उद्गारों को सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। एक आशीर्वाद देता शुभकामनाएं प्रकट कर रहा है तो दूसरा प्रणाम करते हुए विश्वास दिला रहा है। मुझे यह सब सुन कर प्रेरणा व प्रोत्साहन मिला। सीख मिली। समय की अपनी एक चाल होती है।

उसका एक-एक क्षण अपना हिसाब रखता है। सैकण्ड के चौतीस हजारवें हिस्से तक की गणना की जाती है। ऐसे ही काल खण्ड का हिसाब हमारे यहाँ बना हुआ है। बड़ा अद्भुत है काल खण्ड का यह गणित। काल गणना के अनुसार 1 सैकण्ड के 34000 वे हिस्से को कृति कहते हैं। सैकण्ड का 300 वां हिस्सा त्रुटि कहलाता है। दो त्रुटि का एक लव होता है और 2 लव का एक क्षण। तीस क्षण मिलकर 1 विपल बनाते हैं। एक विपल में 0.4 सैकण्ड होते हैं। साठ विपल का एक पल होता है और 60 पलों से मिलकर 1 घड़ी बनती है। एक घड़ी का आशय है 24 मिनट। अढ़ाई घड़ी का एक होरा यानी घण्टा होता है और 24 होरा मिलकर एक दिन बनता है। इसी तरह 100 वर्षों की एक शताब्दी तथा 10 शताब्दियों की एक सहस्राब्दी होती है। चार सौ बत्तीस सहस्राब्दियों से मिलकर एक युग बनता है।

प्रतिध्वनि

नया वर्ष नए संकल्प

जो लोग समय का मूल्य पहचानकर उसके एक-एक अंश का सदुपयोग करते हैं, समय उनकी इस साधना को सफल कर उनके संकल्पों को पूरा करता है। जो लोग समय का आदर नहीं करते, समय उनका आदर नहीं करता और अन्ततः वे पश्चाताप करते नजर आते हैं। समय किसी का इन्तजार नहीं करता।

वह तो अनुशासित रहकर अपनी नियमित चाल चलता रहता है। साथ यदि अनुशासन में न रहे तो प्रलय होते देर न लगे। जो संकल्प हमने विगत वर्ष 2013 में लिए थे, उन्हें यदि पूरा नहीं कर पाए हैं तो यह समय का नहीं अपितु हमारे संकल्प में रही कमी एवं समाहित विकल्पों की है। हम कुछ करने का संकल्प तो लेते हैं लेकिन साथ में ही उन्हें नहीं करने के विकल्प तैयार कर लेते हैं और सफल नहीं होने पर उन विकल्पों का रोना रो कर रह जाते हैं। यह बहुत बड़ी विडम्बना है। हमें लोह-संकल्प लेना चाहिए जिसे बस पूरा करना ही हो। कोई विकल्प या बहाना कदापि नहीं होना चाहिए। ऐसा

विकल्परहित संकल्प ही साधना कहलाता है। समय की चाल व संस्कार को समझकर कहा जाता है। Time and Tide waits for none अर्थात् समय और ज्वारभाटा किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। यह तो अपने तय नियम से चलेगा। अब यह आप पर है कि आप कैसे इससे लाभ उठाते हैं अथवा अवसर से वंचित रह जाते हैं। समय की संस्कृति एवं स्वभाव को समझा जाना बहुत जरूरी है।

हमें नए वर्ष को नए वर्ष के रूप में लेना चाहिए। विगत की भूलों एवं कमियों की ईमानदारी के साथ समीक्षा करते हुए भविष्य में उनसे बचने तथा आगत वर्ष के लिए व्यावहारिक संकल्प लेकर पूरा करने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। इसी में समय का सम्मान, हमारा समाधान और संकल्प का साधनावत हो जाना है। सच्ची साधना कभी निष्फल नहीं जाती। शिक्षक को स्वयं इसका उदाहरण बनते हुए शिक्षा विभाग के माध्यम से समय की महिमा का अनुष्ठान करना चाहिए।

समय को धन कहा जाता है—Time is wealth. जिस प्रकार हम धन का निवेश करते हैं, उसी प्रकार समय की महत्ता को समझ कर यथा समय जो लोग उचित काम करते हैं, वे तत्त्वसर पर वांछित लाभ प्राप्त करते हैं। यह समय निवेश (Time Investment) है। जैसे वर्ष पर्यन्त अध्ययन कर एक तरह से परीक्षा की तैयारी का निवेश करने वाले विद्यार्थी परीक्षा के समय परेशान नहीं होते प्रत्युत इस निवेश को ब्याज सहित एनकेश करवाते हैं यानी अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करते हैं। जो शिक्षक शिक्षण की वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक व दैनिक योजनाएं बनाकर अध्यापन करवाते हैं, गृहकार्य, आवधिक परख आदि का नियोजन करते हैं, उन्हें न तो अतिरिक्त कक्षाएं लगानी पड़ती है और न ही उनके चेहरे पर कभी परेशानी के भाव उभरते हैं और उत्तम परीक्षा परिणाम देकर प्रशंसित व पुरस्कृत होते हैं। दृश्य रूप में यह प्रशंसा-पुरस्कार तथा खुशहाली अदृश्य समय को समझने व सम्मान देने के कारण मिलती है। 'फिर पढ़ा लेंगे व फिर पढ़ लेंगे' में विश्वास रखने वाले 'शिक्षक-विद्यार्थी' सफल नहीं होते क्योंकि यह 'फिर' कभी नहीं आता। अतः इस फिर के फिराक से फ्री रहना चाहिए।

—ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.

opsaraswat58@gmail.com

शिबिरा, जनवरी-2014 चित्र समाचार

खेलकूद



55वीं राज्यस्तरीय तैराकी प्रतियोगिता (17-19 वर्ष छात्र/छात्रा) का आयोजन राजकीय एस.एस.ड.सा. विद्यालय, बीकानेर में किया गया। इस अवसर पर (बाएं) दीप प्रज्वलित कर प्रतियोगिता का शुभारम्भ करते श्री जी. सरवन कुमार, प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक। (दाएं) तैराकी का एक दृश्य।

सम्बोधन



राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, चारहुगुवाड़ (बीकानेर) की बालिकाओं को तकनीकी विश्वविद्यालय, बीकानेर के माननीय कुलपति डॉ. हनुमान प्रसाद व्यास ने सम्बोधित कर बालिकाओं का मार्गदर्शन किया। (बाएं) एम.एम. स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम का एक दृश्य।

लोकार्पण



प्रोफेसर श्री रमेशचन्द्र शर्मा, पूर्व निदेशक, एसआईआईआरटी, उदयपुर (छिन्न में बाएं से दूसरे) की पुस्तक 'शिक्षा एवं जीवन दर्शन' का लोकार्पण कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के कुलपति श्री मकुसुम शर्मा (मध्य में) ने किया।

पुष्करोपण



राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नं. 3, सोमत नगर (पाली) में 51 पौधे लगाकर उनकी रक्षा का संकल्प लिखा गया।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर



झींग के जल महल

यह दृश्य है झींग के जल महलों का। वस्तुतः भरतपुर मुख्यालय से 35 किमी. उत्तर में स्थित झींग कबवा जल महलों की लम्बी तथा प्राकृतिक बगीचों के मनभावक दुर्ग के रूप में विख्यात है। पर्यटन की दृष्टि से झींग का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रति वर्ष हजारों की संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक यहाँ आते रहते हैं। भरतपुर के राजा जयसिंह ने सन् 1725 में झींग महल का निर्माण करवाया था। झींग स्थित दर्शनीय स्थलों में जल महल और गोपाल महल उल्लेखनीय हैं जिसका निर्माण महाराजा नरसिंह ने करवाया था। की तालाबों के बीच स्थित जलमहल का दृश्य बड़ा मनोरम है। जल महल में बने लक्ष्मी भवन, देवी भवन एवं हविर्देव भवन शीघ्रकालीन आवासीय गृह थे।

स्रोत : डॉ. रामदयाल गुप्ता, आनिपान मौकला, दही वाली बस्ती, भादपुर पो. 9461462739